केनरा बैंक
की त्रैमासिक
हिंदी
गृह पत्रिका

Internal

केनरा ज्योति

अंक-47

जनवरी - मार्च 2026

Internal

Canara ai1
THE BANKING SUPER APP

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking

सिंडिकेट Syndicate

Together We Can

120 वर्षों का भरोसा

दिनांक 10 अप्रैल 2026 को वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा उदयपुर में आयोजित दो दिवसीय सेमिनार में केनरा बैंक की गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' को गृह पत्रिका की श्रेणी में 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत 'प्रथम' पुरस्कार प्राप्त हुआ। पुरस्कार वित्तीय सेवाएं विभाग के सांख्यिकी सलाहकार श्री चंद्रदीप कुमार झा एवं उप सचिव श्री धीरज भास्कर के करकमलों से श्री बी पी जाटव, मुख्य महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय, श्रीमती श्रीकला श्रीकुमार, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) और श्री रवि श्रीराम केवीएस, क्षेत्रीय प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर द्वारा प्राप्त किया गया।

Internal

दिनांक 16.03.2026 को प्रधान कार्यालय द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (प्रभारी) श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया, कार्यपालक निदेशक, श्री भवेंद्र कुमार, कार्यपालक निदेशक, श्री एस के मजूमदार, कार्यपालक निदेशक, श्री सुनील कुमार चुघ द्वारा मुख्य अतिथि श्रीमती उमा महादेवन, आईएएस, अतिरिक्त मुख्य सचिव और विकास आयुक्त को सम्मानित किया गया।

हरदीप सिंह अहलूवालिया
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (प्रभारी)

बी.पी. जाटव
मुख्य महाप्रबंधक

प्रवीण कुमार सिंह
महाप्रबंधक

श्रीकला श्रीकुमार
सहायक महाप्रबंधक व मुख्य संपादक

संपादक - बिबिन वर्गीस, वरिष्ठ प्रबंधक

सह-संपादक - सीमा कुमारी, राजभाषा अधिकारी

बिक्री के लिए नहीं
प्रकाशन:
केनरा बैंक, राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन व जनसंपर्क विभाग,
प्रधान कार्यालय
112, जे.सी.रोड़, बेंगलूरु- 560002
दूरभाष: 080-22234079
ई-मेल:hool@canarabank.com
वेबसाइट: www.canarabank.bank.in

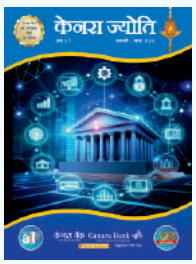

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

*****

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

विषय सूची	पृष्ठ संख्या
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (प्रभारी) का संदेश - हरदीप सिंह अहलूवालिया	02
मुख्य संपादक का संदेश -श्रीकला श्रीकुमार	03
आधुनिक बैंकिंग ट्रेंड्स: बदलती दुनिया में बैंकिंग का भविष्य - कामिनी गुप्ता	04
चौबे जी की रेल यात्रा — गौरव जोशी	08
आस्था के पंख: कामाख्या यात्रा — जी माधवीलता	13
बैंकिंग के मौन संरक्षक: लेखापरीक्षा और अनुपालन का अभेद्य कवच -अभिषेक कुमार	15
नारी: अविरल धारा — दिव्या प्रजापति	18
उडुपि जिला: कर्नाटक का आध्यात्मिक मोती -नैंसी वर्गीज	19
पंडित जी और डिजिटल दक्षिणा — मोहित सिंह	21
परिवर्तन — अस्मिता द्विवेदी	22
नाRi — संजीव कुमार वर्मा	22
एजेंटिक एआई: स्मार्ट बैंकिंग की अगली छलांग-मुकेश कुमार राय	23
8 हाथ — राजीव कुमार	25
भारतीय शादियों का 'बुफ़े' कुरुक्षेत्र -आलोक पाठक	26
प्रेरक प्रसंग- सकारात्मक सोच का प्रभाव	27
समसामयिक आर्थिक एवं बैंकिंग विषयों में डिजिटल बैंकिंग की बढ़ती भूमिका -सुजित विरेंद्र कहीमनी	28
छत्तीसगढ़ धारा — सत्य देव कोसरिया	31
जहाँ समुद्र के किनारे बसती है श्रद्धा: सोमनाथ, नागेश्वर और द्वारका की यात्रा -रोहित कुमार	33
ग्राहक जुड़ाव और कासा: एक रणनीतिक दृष्टिकोण -विपिन कुमार	35
केवाईसी का चक्रव्यूह: पहचान, तकनीक और सुरक्षा की एक 'दस्तावेजी' दास्तान -रणधीर कुमार वर्मा	40
सावधानी हटी दुर्घटना घटी — अल्का राजू	42
अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न बैंकों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत केनराइट्स	43
संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा किए गए निरीक्षण	44

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (प्रभारी) का संदेश

प्रिय साथियों,

हमारे बैंक की प्रतिष्ठित गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' के 47वें अंक के माध्यम से आप सभी से पुनः संवाद स्थापित करते हुए मैं गर्व और प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं। सर्वप्रथम मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि हमारी गृह पत्रिका **'केनरा ज्योति'** को भारत सरकार वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा **'ग'** क्षेत्र के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए **प्रथम पुरस्कार** प्रदान किया गया है। यह पत्रिका न केवल हमारी उपलब्धियों का दर्पण है, बल्कि हमारे सामूहिक संकल्प, नवाचार और उत्कृष्टता की यात्रा का सजीव दस्तावेज भी है।

राजभाषा के संवर्धन एवं प्रसार के प्रति हमारी प्रतिबद्धता केवल औपचारिकता नहीं, अपितु हमारी सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय दायित्व का प्रतीक है। हिंदी व क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से संवाद स्थापित करना हमें अपने ग्राहकों एवं समाज के व्यापक वर्ग से जोड़ता है तथा हमारी सेवाओं को अधिक सुलभ एवं प्रभावी बनाता है। वर्तमान प्रतिस्पर्धी एवं प्रौद्योगिकी-प्रधान बैंकिंग परिवेश में, हम सभी का यह दायित्व है कि हम नवाचार, पारदर्शिता और ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण को अपनी कार्यशैली का अभिन्न अंग बनाएं।

हम जानते हैं कि बैंकिंग कारोबार में ग्राहक सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। ऐसे में ग्राहकों से अपनापन दिखाने और सर्वोत्कृष्ट ग्राहक संतुष्टि प्रदान करने हेतु, ग्राहकों से उनकी अपनी भाषा में बैंकिंग सेवा प्रदान करना और समस्त बैंकिंग उत्पादों की जानकारी उनकी भाषा में प्रदान करना आवश्यक हो जाता है। ग्राहक संतुष्टि से ही मजबूत ग्राहक आधार का निर्माण होता है। इस क्षेत्र में प्रधान कार्यालय स्तर पर कई नवोन्मेषी कार्य भी किए जा रहे हैं। इसके अंतर्गत पहले ही हमारे बैंक द्वारा **'अपनी क्षेत्रीय भाषा को जाने'** शीर्षक के तहत कन्नड़, तमिल, तेलूगू, मलयालम, बंगाली व मराठी तथा मार्च 2026 तिमाही में असमिया और गुजराती भाषा सीखने संबंधी कुल आठ भाषाओं में पुस्तकों का विमोचन किया जा चुका है, और इसी कड़ी में भविष्य में अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं को सीखने हेतु पुस्तकों का प्रकाशन किए जाने की योजना है।

यद्यपि हमने डिजिटल प्रगति, वित्तीय समावेशन और उत्कृष्ट सेवा-प्रदाय के क्षेत्र में कई उपलब्धियाँ हासिल की है तथापि इसका लाभ आम जनता तक पहुंचा कर उन्हें बैंकिंग व्यवस्था की नई धारा में शामिल करने का विशेष प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार देश के आम नागरिकों की वित्तीय जरूरतों की पूर्ति तो होगी ही साथ ही हमारा ग्राहक आधार भी बढ़ेगा। इसे आप सभी के समर्पण, निष्ठा और अथक प्रयासों से प्राप्त किया जा सकता है।

आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि राजभाषा के प्रभावी उपयोग के साथ-साथ कार्यकुशलता, ईमानदारी और नवाचार की भावना को और सुदृढ़ करें, ताकि हमारा बैंक न केवल व्यावसायिक दृष्टि से अग्रणी बने, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में भी एक आदर्श स्थापित करें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सतत प्रयासों और सकारात्मक दृष्टिकोण से हम नई ऊँचाइयों को स्पर्श करेंगे और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका को और अधिक सशक्त बनाएंगे।

आप सभी को उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हरदीप सिंह अहलूवालिया
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (प्रभारी)

मुख्य संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों,

केनरा ज्योति पत्रिका का 47वां अंक आप सभी पाठकों के समक्ष रखते हुए मुझे अत्यंत आनंद का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका ज्ञानवर्धन, मनोरंजन और जानकारी प्राप्त करने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। पत्रिका लेखन और रचनात्मकता को बढ़ावा देने का भी एक प्रभावी माध्यम है तथा यह पाठकों के बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करने तथा समसामयिक विषयों पर उनकी समझ को सुदृढ़ करने में सहायक होती है।

जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा है- ग्राहक हमारे परिसर में आने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है, वह हम पर निर्भर नहीं है, बल्कि हम उन पर निर्भर हैं- अर्थात, बैंकिंग सेवा का क्षेत्र है जहाँ ग्राहक को भगवान के रूप में समझा जाता है और उनकी आवश्यकता के अनुरुप उन्हें बेहतर सेवा प्रदान की जाती है। स्पष्टता, विनम्रता तथा सरल व सहज भाषा के प्रयोग से ग्राहक सेवा को बेहतर बनाया जा सकता है। स्थानीय भाषा में ग्राहक सेवा किसी भी संस्था की संवेदनशीलता और ग्राहक केन्द्रित दृष्टिकोण को दर्शाती है तथा ग्राहक और संस्थान के बीच विश्वास को मजबूत करती है और संबंधों को बेहतर बनाती है।

आज के इस दौर में, डिजिटल प्रौद्योगिकी ने बैंकिंग को अत्यंत सरल व सुविधाजनक बना दिया है। इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और एटीएम जैसी सुविधाओं ने लेन-देन को तेज, सुरक्षित व पारदर्शी बनाया है। डिजिटल भुगतान प्रणाली जैसे यूपीआई, डेबिट कार्ड ने नकदी पर निर्भरता को कम कर दिया है। इस डिजिटल दुनिया में कदम से कदम मिलाने के लिए हमारे बैंक ने केनरा ai1 pe ऐप की भी शुरुआत की है तथा केनेरा ai1 ऐप में 250 से अधिक सेवाएं जोड़ी गई हैं साथ ही केनरा क्रेडिट कार्ड के विभिन्न वेरिएंट, केनरा ऐंजल, ट्रूएज, प्रीमियम पेरोल, एस्पायर, गिग स्टार आदि खाते बैंक के डिजिटल पोर्टफोलियो में चार चांद लगा रहें हैं।

पत्रिका, किसी भी संस्थान का दर्पण होती है। पत्रिका में रचनाओं के माध्यम से लेखक अपने विचार, दृष्टिकोण व कल्पना को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। केनरा ज्योति पत्रिका के इस अंक में जहाँ एक ओर बैंकिंग लेख- आधुनिक बैंकिंग ट्रेंड्स, बैंकिंग के मौन संरक्षक, एजेंटिक एआई, ग्राहक जुड़ाव और कासा आदि है वहीं दूसरी ओर चौब जी की रेल यात्रा, पंडित जी और डिजिटल दक्षिणा, भारतीय शादियों का बुफे कुरुक्षेत्र, आस्था के पंख, जहाँ समुद्र के किनारे बसती है श्रृद्धा जैसे लेख आपके मन को मोह लेंगे। पत्रिका के इस अंक में लेखकों द्वारा अपनी नवोन्मेष और सृजनात्मकता का अनूठा संगम प्रस्तुत किया गया है।

मैं आशा करती हूँ कि भविष्य में भी पत्रिका हेतु आपकी सृजनात्मक रचनाएं प्राप्त होती रहेंगी। यह अंक आप सभी पाठकों को अवश्य पसंद आएगा। साथ ही पत्रिका में रचनात्मक सहयोग देने हेतु आप सभी कर्मचारियों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित!

श्रीकला श्रीकुमार
सहायक महाप्रबंधक व मुख्य संपादक

आधुनिक बैंकिंग ट्रेंड्स : बदलती दुनिया में बैंकिंग का भविष्य

आलेख

कामिनी गुप्ता
अधिकारी
जी.टी.पी.सी., मणिपाल

'परिवर्तन ही जीवन का नियम है और जो केवल अतीत या वर्तमान में जीते हैं, वे भविष्य को खो देते हैं।' आज का बैंकिंग क्षेत्र एक गहरे परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। जहाँ पहले बैंकिंग का अर्थ केवल शाखा तक सीमित सेवाओं से था-जैसे पासबुक अपडेट कराना, नकद जमा करना या चेक क्लियर करना-वहीं आज तकनीकी प्रगति ने बैंकिंग को पूरी तरह से बदल दिया है। आज बैंकिंग केवल एक स्थान नहीं, बल्कि एक प्रक्रिया बन चुकी है। ग्राहक अब कहीं भी, कभी भी अपने मोबाइल या इंटरनेट के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकता है। आधुनिक बैंकिंग ट्रेंड्स-जैसे नियो बैंक, ओपन बैंकिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), ऑटोमेशन, ब्लॉकचेन और ईएसजी बैंकिंग ने बैंकिंग को अधिक तेज, सुरक्षित और ग्राहक-केंद्रित बना दिया है। 'समय के साथ बदलना ही प्रगति की पहचान है।' यह परिवर्तन केवल सुविधा तक सीमित नहीं है, बल्कि बैंकिंग की पूरी कार्यप्रणाली और सोच को प्रभावित कर रहा है।

नियो बैंक: बैंकिंग का डिजिटल अवतार

'भविष्य उन्हीं का होता है जो नई तकनीक को अपनाने का साहस रखते हैं।' नियो बैंक आधुनिक बैंकिंग का एक महत्वपूर्ण और तेजी से उभरता हुआ ट्रेंड है। ये ऐसे बैंक हैं जो पूरी तरह से डिजिटल प्लेटफॉर्म पर आधारित होते हैं और जिनकी कोई भौतिक शाखा नहीं होती। नियो बैंक की मुख्य विशेषताएं:

- पूर्णतः डिजिटल संचालन
- मोबाइल ऐप आधारित सेवाएं
- कागज़ रहित प्रक्रिया
- 24x7 बैंकिंग सुविधा
- त्वरित खाता खोलने की सुविधा

नियो बैंक स्वयं बैंकिंग लाइसेंस नहीं रखते, बल्कि वे पारंपरिक बैंकों के साथ साझेदारी करके सेवाएं प्रदान करते हैं।

नियो बैंक का महत्व और प्रभाव

आज के ग्राहक विशेष रूप से तेज, सरल और सुविधाजनक सेवाओं की अपेक्षा रखते हैं। नियो बैंक इन अपेक्षाओं को पूरी तरह पूरा करते हैं। विशेष रूप से युवा पीढ़ी, स्टार्टअप्स और डिजिटल व्यवसायों के लिए नियो बैंक एक आदर्श विकल्प बन गए हैं। नियो बैंक ने बैंकिंग को 'ग्राहक सर्वोपरि' दृष्टिकोण में परिवर्तित कर दिया है। 'ग्राहक की संतुष्टि ही किसी भी सेवा की सफलता का आधार होती है।'

भारत में नियो बैंकिंग का विकास

भारत में नियो बैंकिंग तेजी से विकसित हो रही है। कई डिजिटल प्लेटफॉर्म ग्राहकों को आसान और तेज बैंकिंग सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। नियो बैंक पारंपरिक बैंकिंग की जटिल प्रक्रियाओं को सरल बनाकर बैंकिंग को अधिक सुलभ बना रहे हैं।

नियो बैंक की चुनौतियां

हालांकि नियो बैंक आधुनिक और सुविधाजनक हैं, लेकिन इनके सामने कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियां भी हैं:

- डेटा सुरक्षा का खतरा: पूरी तरह डिजिटल होने के कारण साइबर हमलों का जोखिम अधिक होता है।
- नियामकीय अस्पष्टता: नियो बैंक के लिए स्पष्ट नियम अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुए हैं।
- विश्वास का अभाव: पारंपरिक बैंकों की तुलना में ग्राहकों का भरोसा अभी कम है।

'सुरक्षा के बिना सुविधा अधूरी है।' नियो बैंक बैंकिंग के भविष्य की दिशा दिखाते हैं। ये बैंकिंग को अधिक तेज, सरल और सुलभ बना रहे हैं। हालांकि, इनके सफल और सुरक्षित विकास के लिए मजबूत नियामकीय ढांचा और साइबर सुरक्षा अत्यंत आवश्यक है। 'नवाचार ही प्रगति का मार्ग है, परंतु संतुलन और सुरक्षा उसके स्तंभ हैं।'

ओपन बैंकिंग: ग्राहक के हाथ में शक्ति

'जानकारी ही शक्ति है, और सही जानकारी सही निर्णय की नींव होती है।' ओपन बैंकिंग आधुनिक बैंकिंग का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी सिद्धांत है। यह एक ऐसी प्रणाली है जिसमें बैंक अपने ग्राहकों के वित्तीय डेटा को सुरक्षित तरीके से तीसरे पक्ष के साथ साझा करते हैं-लेकिन केवल ग्राहक की अनुमति से। इसका उद्देश्य बैंकिंग सेवाओं को अधिक पारदर्शी, प्रतिस्पर्धी और ग्राहक-केंद्रित बनाना है। ओपन बैंकिंग की मुख्य विशेषताएं:

- एपीआई (एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफ़ेस) के माध्यम से डेटा साझा करना
- ग्राहक की सहमति अनिवार्य
- विभिन्न बैंकों और ऐप्स का एकीकरण
- सुरक्षित और नियंत्रित डेटा एक्सेस

ओपन बैंकिंग का महत्व और प्रभाव

ओपन बैंकिंग ने बैंकिंग के पारंपरिक मॉडल को पूरी तरह बदल दिया है। पहले ग्राहक केवल अपने बैंक तक सीमित रहता था, लेकिन अब वह एक ही प्लेटफॉर्म पर कई बैंकों के खातों को देख सकता है और उनका प्रबंधन कर सकता है। उदाहरण के लिए, एक ग्राहक अपने सभी बैंक खातों की जानकारी एक ही मोबाइल ऐप में देख सकता है, अपने खर्च का विश्लेषण कर सकता है और बेहतर वित्तीय निर्णय ले सकता है। सही निर्णय वही है जो सही जानकारी पर आधारित हो। यह प्रणाली नवाचार को भी बढ़ावा देती है, क्योंकि फिनटेक कंपनियां ग्राहकों को बेहतर और व्यक्तिगत सेवाएं प्रदान कर सकती हैं।

ओपन बैंकिंग की चुनौतियां

ओपन बैंकिंग के लाभों के साथ-साथ कुछ महत्वपूर्ण जोखिम भी जुड़े हुए हैं:

- डेटा गोपनीयता का खतरा: यदि डेटा का गलत उपयोग हुआ तो ग्राहक की निजी जानकारी खतरे में पड़ सकती है।
- साइबर सुरक्षा की चुनौती: डेटा साझा करने के कारण हैकिंग का जोखिम बढ़ जाता है।
- जागरूकता की कमी: कई ग्राहक अभी भी इस प्रणाली को पूरी तरह समझ नहीं पाए हैं।

'विश्वास बनाने में वर्षों लगते हैं, पर खोने में केवल एक क्षण।' ओपन बैंकिंग एक नए युग में जा रही है, जहाँ ग्राहक अपने डेटा का मालिक होता है और उसे नियंत्रित करता है। यह प्रणाली बैंकिंग को अधिक लचीला, पारदर्शी और नवाचारी बनाती है, लेकिन इसके लिए मजबूत सुरक्षा और जागरूकता आवश्यक है।

स्मार्ट और कुशल बैंकिंग की दिशा में एआई और स्वचालन:

'बुद्धिमत्ता केवल ज्ञान में नहीं, बल्कि उसके सही उपयोग में होती है।' आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और स्वचालन ने बैंकिंग को पूरी तरह से बदल दिया है। यह तकनीक बैंकिंग प्रक्रियाओं को तेज, सटीक और अधिक प्रभावी बनाती है। एआई और स्वचालन के प्रमुख

उपयोग:

- चैटबॉट्स 24x7 ग्राहक सेवा द्वारा
- धोखाधड़ी का पता लगाना और जोखिम विश्लेषण
- क्रेडिट स्कोरिंग और ऋण स्वीकृति
- केवाईसी और दस्तावेज़
- लेनदेन की निगरानी

महत्व और प्रभाव

एआई के माध्यम से बैंक ग्राहकों के व्यवहार का विश्लेषण कर सकते हैं और उन्हें उनकी जरूरत के अनुसार सेवाएं प्रदान कर सकते हैं।

स्वचालन के कारण बैंकिंग प्रक्रियाएं तेज हो गई हैं और मानवीय त्रुटियों में कमी आई है। उदाहरण के रूप में, आज कई बैंक ऋण स्वीकृति प्रक्रिया को एआई के माध्यम से कुछ ही मिनटों में पूरा कर रहे हैं। समय ही धन है, और तकनीक उसे बचाने का सबसे प्रभावी साधन है। एआई और स्वचालन के लाभ:

- तेज और सटीक निर्णय
- लागत में कमी
- बेहतर ग्राहक अनुभव
- फ्रॉड की पहचान में सुधार

Internal

एआई और स्वचालन की चुनौतियां

- रोजगार पर प्रभाव: स्वचालन के कारण कुछ नौकरियों पर खतरा हो सकता है।
- तकनीकी निर्भरता: सिस्टम फेल होने पर बड़ी समस्या हो सकती है।
- डेटा की गुणवत्ता: गलत डेटा से गलत निर्णय हो सकते हैं।

'तकनीक जितनी शक्तिशाली होती है, उतनी ही जिम्मेदारी भी मांगती है।' एआई और स्वचालन बैंकिंग को अधिक स्मार्ट और कुशल बना रहे हैं। हालांकि, इनका संतुलित उपयोग और मानव निगरानी आवश्यक है ताकि तकनीक का सही और सुरक्षित उपयोग सुनिश्चित किया जा सके। 'मानव और मशीन का संतुलन ही सच्ची प्रगति है।'

सुरक्षा और पारदर्शिता का नया युग- ब्लॉकचेन + ईएसजी बैंकिंग

'विश्वास ही हर लेन-देन की नींव है, और तकनीक उसे और मजबूत बनाती है।' ब्लॉकचेन एक उन्नत डिजिटल तकनीक है, जो बैंकिंग प्रणाली में सुरक्षा, पारदर्शिता और विश्वसनीयता को एक नए स्तर पर ले जाती है। यह एक वितरित बहीखाता प्रौद्योगिकी है, जिसमें डेटा को कई कंप्यूटरों पर एक साथ संग्रहीत किया जाता है। ब्लॉकचेन की मुख्य विशेषताएं:

- (विकेंद्रीकरण): कोई एक केंद्रीय नियंत्रण नहीं
- (अपरिवर्तनीय डेटा): एक बार दर्ज डेटा बदला नहीं जा सकता

- (उच्च सुरक्षा): क्रिप्टोग्राफी आधारित सुरक्षा
- (पारदर्शिता): सभी लेन-देन का रिकॉर्ड स्पष्ट

बैंकिंग में ब्लॉकचेन का उपयोग

ब्लॉकचेन ने बैंकिंग के कई क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं:

1. अंतरराष्ट्रीय भुगतान
- तेज और सस्ते ट्रांजैक्शन
- मध्यस्थ की आवश्यकता कम

2. व्यापार वित्त
- दस्तावेजों का डिजिटल सत्यापन
- प्रक्रिया में पारदर्शिता और गति

3. डिजिटल पहचान सत्यापन
- ग्राहक की पहचान का सुरक्षित सत्यापन
- केवाईसी

ब्लॉकचेन के लाभ :

- फ्रॉड की संभावना में कमी
- तेज और सुरक्षित लेन-देन
- लागत में कमी
- पारदर्शिता में वृद्धि

'जहाँ पारदर्शिता होती है, वहाँ विश्वास स्वतः उत्पन्न होता है।'

ब्लॉकचेन की चुनौतियां :

- तकनीकी जटिलता: इसे समझना और लागू करना कठिन है
- नियामकीय अनिश्चितता: स्पष्ट नियमों का अभाव
- उच्च प्रारंभिक लागत: इन्फ्रास्ट्रक्चर सेटअप महंगा है

'हर नई तकनीक अपने साथ अवसर और चुनौतियाँ दोनों लाती है।' ब्लॉकचेन बैंकिंग में सुरक्षा और पारदर्शिता को मजबूत करने वाला एक शक्तिशाली उपकरण है। यह भविष्य में बैंकिंग के कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आधारभूत तकनीक बन सकता है, विशेष रूप से भुगतान और डेटा सुरक्षा में।

ईएसजी बैंकिंग: जिम्मेदार और टिकाऊ बैंकिंग की दिशा में

'सतत विकास ही सच्ची प्रगति है।' ईएसजी बैंकिंग आधुनिक बैंकिंग का एक ऐसा पहलू है जो केवल लाभ कमाने तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज, पर्यावरण और प्रशासनिक जिम्मेदारी को भी महत्व देता है। ईएसजी का अर्थ है:

- ई – पर्यावरण
- एस - सामाजिक
- जी - शासन (प्रशासनिक)

ईएसजी बैंकिंग के मुख्य घटक:

पर्यावरणीय जिम्मेदारी -
- ग्रीन फाइनेंस
- नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं को फंडिंग
- कार्बन उत्सर्जन में कमी

सामाजिक जिम्मेदारी -
- वित्तीय समावेशन
- ग्रामीण और कमजोर वर्गों को सहायता
- महिला सशक्तिकरण

प्रशासनिक पारदर्शिता -
- नैतिक व्यापार
- पारदर्शी निर्णय प्रक्रिया
- जवाबदेही

ईएसजी बैंकिंग का महत्व और प्रभाव

आज बैंक केवल वित्तीय संस्थान नहीं हैं, बल्कि वे समाज और पर्यावरण के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ईएसजी बैंकिंग के माध्यम से बैंक ऐसे प्रोजेक्ट्स को फंडिंग देते हैं जो पर्यावरण और समाज के लिए लाभकारी हों। 'लाभ कमाना महत्वपूर्ण है, लेकिन जिम्मेदारी निभाना उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है।'

ईएसजी बैंकिंग के लाभ:
- सतत विकास को बढ़ावा
- बेहतर ब्रांड छवि
- दीर्घकालिक जोखिम में कमी
- निवेशकों का विश्वास बढ़ना

ईएसजी बैंकिंग की चुनौतियां

- ईएसजी मानकों को मापना कठिन
- सभी बैंकों के लिए एक समान मानक नहीं
- लागत में वृद्धि

'सही दिशा में उठाया गया हर छोटा कदम भी बड़े बदलाव की शुरुआत होता है।' ईएसजी बैंकिंग को अधिक जिम्मेदार और टिकाऊ बनाती है। यह भविष्य की बैंकिंग का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो केवल आर्थिक विकास ही नहीं बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय संतुलन को भी सुनिश्चित करता है।

समग्र विश्लेषण: पारंपरिक से आधुनिक बैंकिंग तक का सफर

'समय के साथ चलना ही बुद्धिमानी है, और समय से आगे सोचना ही नेतृत्व है।' यदि हम पिछले कुछ दशकों पर नजर डालें, तो बैंकिंग

क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिलता है। जहाँ पहले बैंकिंग केवल एक लेन-देन आधारित सेवा थी, वहीं आज यह एक टेक्नोलॉजी-ड्रिवन, ग्राहक-केंद्रित और वैश्विक रूप से जुड़ा हुआ इकोसिस्टम बन चुकी है। पारंपरिक बैंकिंग ने हमें विश्वास, स्थिरता और संरचना प्रदान की, जबकि आधुनिक बैंकिंग ट्रेंड्स ने इसमें गति, नवाचार और दक्षता जोड़ी है।

आधुनिक ट्रेंड्स का समेकित प्रभाव

आधुनिक बैंकिंग के विभिन्न ट्रेंड्स मिलकर एक शक्तिशाली और उन्नत बैंकिंग प्रणाली का निर्माण कर रहे हैं।

1. नियो बैंक-
- बैंकिंग को पूरी तरह डिजिटल और सुलभ बनाया
- ग्राहक अनुभव को प्राथमिकता दी

2. ओपन बैंकिंग
- ग्राहक को अपने डेटा पर नियंत्रण दिया
- बैंकिंग सेवाओं में पारदर्शिता और प्रतिस्पर्धा बढ़ाई

3. एआई और स्वचालन
- प्रक्रियाओं को तेज और सटीक बनाया
- लागत में कमी और दक्षता में वृद्धि

4. ब्लॉकचेन
- सुरक्षा और पारदर्शिता को मजबूत किया
- फ्रॉड और जोखिम को कम किया

5. ईएसजी बैंकिंग
- बैंकिंग को सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी से जोड़ा
- सतत विकास को बढ़ावा दिया

'जब तकनीक और जिम्मेदारी साथ चलते हैं, तभी सच्ची प्रगति होती है।'

बैंकिंग प्रोफेशनल्स के लिए सीख

आज के बैंकिंग पेशेवरों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे केवल पारंपरिक ज्ञान तक सीमित न रहें, बल्कि आधुनिक तकनीकों और ट्रेंड्स को भी समझें।

आवश्यक कौशल:
- डिजिटल बैंकिंग की समझ
- डेटा विश्लेषण
- साइबर सुरक्षा की जानकारी
- ग्राहक व्यवहार की समझ
- तकनीकी अनुकूलन क्षमता

'सीखना बंद करना, आगे बढ़ना बंद करने जैसा है।'

ग्राहकों के लिए बदलता अनुभव

आधुनिक बैंकिंग ने ग्राहकों के अनुभव को पूरी तरह बदल दिया है। आज ग्राहक:
- कहीं भी, कभी भी बैंकिंग कर सकता है
- व्यक्तिगत सेवाएं प्राप्त कर सकता है
- सुरक्षित और तेज लेन-देन कर सकता है

'सुविधा और सुरक्षा का संतुलन ही उत्कृष्ट सेवा की पहचान है।'

भविष्य की बैंकिंग: क्या अपेक्षाएं हैं?

भविष्य में बैंकिंग और भी अधिक उन्नत और तकनीकी होगी।

संभावित बदलाव:
- पूर्णतः डिजिटल बैंकिंग प्रणाली
- एआई आधारित निर्णय प्रक्रिया
- ब्लॉकचेन आधारित सुरक्षित लेन-देन
- अति वैयक्तिकृत बैंकिंग सेवाएँ
- हरित एवं सतत बैंकिंग

'भविष्य उनका होता है जो आज तैयारी करते हैं।'

चुनौतियाँ - जो नजरअंदाज नहीं की जा सकती

हालांकि आधुनिक बैंकिंग कई अवसर प्रदान करती है, लेकिन इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी हैं:
- साइबर सुरक्षा खतरे
- डेटा गोपनीयता
- तकनीकी निर्भरता
- नियामकीय संतुलन

'हर अवसर के साथ जिम्मेदारी भी बढ़ती है।'

निष्कर्ष

'परिवर्तन से डरना नहीं चाहिए, बल्कि उसे समझकर अपनाना चाहिए।' आधुनिक बैंकिंग ट्रेंड्स ने बैंकिंग को एक नए युग में प्रवेश कराया है। यह अब केवल पैसे के लेन-देन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक स्मार्ट, सुरक्षित, जिम्मेदार और ग्राहक-केंद्रित प्रणाली बन चुकी है।
- नियो बैंक ने बैंकिंग को सरल बनाया
- ओपन बैंकिंग ने ग्राहक को शक्ति दी
- एआई और स्वचालन ने दक्षता बढ़ाई
- ब्लॉकचेन ने सुरक्षा सुनिश्चित की
- ईएसजी बैंकिंग ने जिम्मेदारी जोड़ी

इन सभी ट्रेंड्स का संयुक्त प्रभाव बैंकिंग को एक भविष्य-उन्मुख और सतत प्रणाली में परिवर्तित कर रहा है। 'जो बदलाव को अपनाता है, वही भविष्य को आकार देता है।' बैंकिंग क्षेत्र के लिए यह समय केवल परिवर्तन का नहीं, बल्कि रूपांतरण का है। बैंकिंग पेशेवरों, संस्थानों और ग्राहकों-सभी को मिलकर इस परिवर्तन को समझना और अपनाना होगा, ताकि एक सुरक्षित, समावेशी और उन्नत बैंकिंग प्रणाली का निर्माण किया जा सके।

चौबे जी की रेल यात्रा

हास्यास्पद लेख

गौरव जोशी
वरिष्ठ प्रबंधक
अध्ययन एवं विकास केंद्र,
नागपुर

एक बैंगनी स्कूटर और उस पर बैठे चौबे जी—दोनों हवा से बातें करते मदमस्त चले आ रहे थे अपने वर्षों पुराने मित्र को रेलवे स्टेशन से लेने के लिए।

लेकिन यह क्या! मित्र ने उन्हें देखते ही मुँह मोड़ लिया।

फिर शायद कुछ दिल पसीजा कि नाक-भौंह सिकोड़ते हुए चौबे जी के पास आए और बोले—

'क्या चौबे, अभी भी इस बैंगन से लिपटे हुए हो? अब समाज में तुम्हारी कुछ इज़्ज़त है। थोड़ा आगे बढ़ो। कम से कम चार पहियों पर तो आओ!'

चौबे जी एक सम्मानित सरकारी पद पर कार्यरत थे। हालाँकि यह पदोन्नति नई-नई ही थी, जिसके लिए उन्होंने रात-रात जागकर मेहनत की थी। लेकिन उनके स्कूटर को लेकर ताने पुराने ही थे। घर हो या दफ़्तर—हर जगह सुनते आए थे कि इससे उनकी 'क्लास' पर बट्टा लगता है।

अब हर किसी से तो बेचारे चौबे जी पूछ नहीं पाते थे, पर यह पुराने मित्र थे, सो पूछ ही बैठे—

'ज़रा यह बताओ कि यह क्लास मेंटेन कैसे होती है? पद तो तुम्हारा भी ऊँचा है, लेकिन आए तो तुम भी ट्रेन से ही हो। हम तो कम से कम लंबी दूरी के लिए हवाई जहाज़ से जाते हैं। ट्रेन से आना तो कब का बंद कर दिया हमने। अब अच्छा लगता है क्या, इस पद पर होकर स्लीपर में धक्के खाते आना?'

मित्र मुस्कुराए। पान थूकते हुए बोले—

'अरे चौबे! स्लीपर के अलावा भी डिब्बे होते हैं ट्रेन में, यह मालूम है तुम्हें?'

'मालूम है,' चौबे जी बोले, 'लेकिन सारे डिब्बे जाते तो एक साथ ही हैं और पहुँचते भी एक ही जगह। फिर थर्ड एसी, सेकंड एसी पर खर्चा क्यों करें? हमें तो वैसे भी ऊपर की सीट मिलती है। अब इस शरीर को ऊपर चढ़ाने से अच्छा है कि हम हवाई यात्रा ही करें—और क्लास भी मेंटेन रहती है।'

यह कहते हुए चौबे जी ने अपनी पतली किंतु लंबी मूँछों पर ताव दिया।

मित्र बोले—

'बस, यही तो फ़र्क है तुममें और हममें। तुम हवाई जहाज़ से जाते हो—इकॉनॉमी क्लास में। और हम ट्रेन से आते हैं—फ़र्स्ट एसी में।'

'फ़र्स्ट एसी!' चौबे जी की आँखें फैल गईं।

'और क्या!'

'और तुम हमें लेने आए इस बैंगनी स्कूटर पर? सारा रौब ही ख़राब कर दिया हमारे साथ वालों पर।'

'साथ वाले? और भी लोग थे क्या?' चौबे जी चौंके।

'अरे ऐसे साथ वाले नहीं। जो हमारे कोच में थे।'

'लेकिन तुम तो बिल्कुल अकेले खड़े थे,' चौबे जी ने भोलेपन से कहा।

मित्र ने गहरी साँस ली—

'यही तो तुम मध्यवर्गीय लोगों की समस्या है। हम उच्चवर्गीय लोग ऐसे आपस में बात नहीं करते। सबको अपना-अपना काम होता है। यह एक अनकहा नियम है। लेकिन हम एक-दूसरे की इज़्ज़त बहुत करते हैं।'

'अच्छा... होता होगा भाई,' चौबे जी ने धीरे से कहा।

'होगा नहीं, होता है। इस बार तुम भी रेल से आना। अनुभव लो। अब समय आ गया है चौबे कि तुम अपनी मानसिकता को मध्यवर्ग से उच्चवर्ग में लाओ।'

इतनी देर में वे छोले-भटूरे की दुकान पर पहुँच चुके थे। पेट पूजा हुई, मित्र अपने घर चले गए—पर चौबे जी के मन में फ़र्स्ट एसी का डिब्बा अटक गया।

सुना था कि वहाँ दरवाज़ा होता है, चाय भी मुफ्त मिलती है और टीटी 'आप' कहकर बात करता है।

यह खयाल चौबे जी को पहले कभी आया ही नहीं था। ऐसे ही किसी दिसंबर की ठंडी सुबह, मित्र की बातों से प्रेरित होकर चौबे जी ने निश्चय

किया कि इस बार लंबी यात्रा हवाई जहाज़ से नहीं, बल्कि ट्रेन से की जाए—और वह भी सीधे फ़र्स्ट एसी में।

मित्र की सारी सलाह उन्होंने एक कॉपी में अच्छे शिष्य की भाँति नोट कर ली—

- कोई आपसे बात करने आए तो बस हल्की मुस्कान दे देना
- ज़्यादा घुलना-मिलना नहीं
- ऐसा लगे कि आप पहली बार नहीं आए
- घर से कचौरी बाँधकर मत ले जाना, वहाँ खाना मिलता है।
- टॉयलेट सोप की ज़रूरत नहीं—वहाँ हैंडवॉश होता है
- कंबल-गद्दा मत ले जाना
- हाँ, एक गरम टोपी ज़रूर रख लेना—एसी बहुत ठंडा होता है
- और एक किताब अवश्य—उच्चवर्गीय लोग सफ़र में किताब पढ़ते हैं

मध्यवर्ग का सबसे बड़ा गुण है—वह जहाँ भी जाता है, अपनी चिंता साथ ले जाता है। इस प्रकार चौबे जी एक बोझा सामान का और एक बोझा संकोच और दिखावे लेकर फ़र्स्ट एसी में चढ़े।

डर भी था—पर किस बात का, यह स्वयं चौबे जी को भी ठीक से नहीं पता था। मित्र शारीरिक रूप से उपस्थित तो नहीं थे, लेकिन फोन पर हर तरह से उनका मनोबल बढ़ा रहे थे। हालाँकि इस बार वे स्वयं हवाई यात्रा कर रहे थे, इसलिए चौबे जी को यह थोड़ी-सी चालाकी भी लग रही थी।

लेकिन बात 'अनुभव' की थी, सो बेचारे चौबे जी भी चल पड़े लौहपथगामिनी के प्रथम श्रेणी की यात्रा पर।

जैसे ही वे अपने कोच में पहुँचे, उन्होंने देखा कि एक सभ्य से दिखने वाले पति-पत्नी और उनका छोटा-सा बच्चा पहले ही वहाँ विराजमान थे। हालाँकि चौबे जी को सीट इस बार भी ऊपर की ही मिली थी, लेकिन यह क्या! यहाँ तो ऊपर जाने के लिए बाकायदा सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। सीढ़ियाँ थोड़ी छोटी अवश्य थीं, कम से कम ऊपर चढ़ने के लिए योगासन नहीं करना पड़ा, पर जैसे-तैसे अपनी गरम टोपी और स्टेशन से खरीदी हुई एक किताब बगल में दबाए, चौबे जी ऊपर चढ़े और अंततः ऐसे विराजमान हुए मानो फ़र्स्ट एसी की सीट नहीं, समाज में ऊँचे वर्ग का सिंहासन प्राप्त हो गया हो।

कुछ ही देर में एक और श्रीमान पधारे। उनके आने से पहले ही कोच में एक भीनी-सी इत्र की महक फैल गई, मानो उनके आगमन की सूचना दे रही हो। जैसे ही वे महाशय अवतरित हुए, चौबे जी का ध्यान उनके साजो-सामान और उससे मेल खाती उनकी वेश-भूषा पर गया। मन ही मन उन्होंने सोचा—' भाई बहन नहीं होंगे इनके तभी अपने बक्से से मेल खाते कपड़े बनवाए हैं। नहीं तो ऐसे एक से कपड़े तो हम और भाईसाहब पहनते थे बचपन में—वह भी केवल त्योहारों पर।'

खैर, उस सज्जन ने किसी की ओर देखा तक नहीं। चुपचाप ऊपर चढ़े, कुछ देर फोन में खुटुर-खुटुर करते रहे, फिर चादर तानकर ऐसे सो गए मानो पिछले कई जन्मों की नींद यहीं पूरी करनी हो।

उधर ट्रेन भी अपनी रफ़्तार पकड़ चुकी थी और नीचे अपने माँ-बाप के साथ आया चार वर्षीय बालक भी। उसके माता-पिता हर संभव प्रयास कर रहे थे कि वह किसी तरह कोच के भीतर ही सीमित रहे। इस प्रयास में वे बेचारे कभी उसे गाना सुनाते, कभी कहानी। फिर एक किताब पढ़ी गई, कुछ खेल खेले गए। धीरे-धीरे बेचारे माँ-बाप के सारे पैंतरे समाप्त हो गए—और ट्रेन चले अभी केवल एक घंटा ही हुआ था। अब वह बालक कभी सीट के नीचे दुबकता, कभी सीट के ऊपर कूदता, कभी ऊपर चढ़ने का प्रयत्न करता। एक-दो बार उसने ऊपर आने की कोशिश भी की, लेकिन ऊपर तो एक सज्जन गहरी नींद में थे और दूसरे—यानी चौबे जी—पता नहीं क्यों गरम टोपी पहने किताब में खोये थे।

सो बेचारा बालक कुछ देर खरगोश की भाँति कूद-फाँद करता रहा और अंततः, अपने माता-पिता के लाख प्रयासों के बावजूद, सो गया। माँ-बाप बदहवास से एक-दूसरे का मुँह देख रहे थे और धीमी आवाज़ में एक-दूसरे पर दोष मढ़े जा रहे थे।

ऊपर चौबे जी दिखने को तो अपनी किताब में डूबे थे, पर कान पूरे नीचे ही लगे थे। वे सोच रहे थे—

'अरे भई, ऐसी क्या बात हो गई? अभी बच्चा खेल रहा था तब भी परेशान थे, अब सो गया है तब भी परेशान हैं!'

लेकिन मित्र की सलाह याद थी—किसी से ज़्यादा बात नहीं करनी है—इसलिए इतना निजी प्रश्न पूछने का साहस भी नहीं कर पाए। तभी उन्हें अपने स्लीपर कोच के पुराने दिन याद आ गए। जब भी वे ट्रेन से सफ़र करते थे, आसपास बैठे लोगों से ऐसी गहरी दोस्ती हो जाती थी कि एक-दूसरे का गाँव, घरवाले, यहाँ तक कि घर के छोटे-बड़े कलेश भी पूरे अपनत्व से साझा कर लिए जाते थे। कुछ लोगों से तो आज भी उनकी फोन पर बातचीत हो जाती है। हाँ, यह अवश्य था कि रात भर इस चिंता में वे ठीक से सो नहीं पाते थे कि कहीं कोई सिरहाने से सामान न उठा ले जाए।

और इधर देखिए—यह सज्जन कैसे घोड़े बेचकर सो रहे हैं!

चौबे जी ने मन ही मन सोचा—

'फायदा तो है फ़र्स्ट एसी का। आज तो हम भी चैन से सोएँगे... और कल जब रेल से उतरेंगे तो सीधे मध्यवर्ग से उच्च वर्ग में ही कदम रखेंगे।'

उन्हें लगा, यह ट्रेन उन्हें केवल एक शहर से दूसरे शहर नहीं ले जा रही—

यह तो उन्हें मध्यवर्ग से उठाकर सीधे उच्च वर्ग के प्लेटफॉर्म पर उतारने वाली है।

अब तक जिस किताब को वे अनमने ढंग से केवल दिखावे के लिए पढ़ रहे थे, उसमें अब उन्हें सचमुच रस आने लगा था। कोच में माहौल भी शांत हो गया था। सामने वाले सज्जन तो वैसे ही सोए पड़े थे, नीचे बालक

भी सो चुका था, और वह दंपती शायद अब आपस में मोबाइल के माध्यम से ही लड़ाई जारी रखे हुए था—क्योंकि कभी एक के फोन में टुन-टुन होती, तो कभी दूसरे के फोन में। चौबे जी को लगा जैसे कोई गेंद एक कोर्ट से दूसरे कोर्ट में जा रही हो, बस फर्क इतना कि यहाँ कोई बोल नहीं रहा था।

जब वातावरण इतना शांत हो गया तो चौबे जी ने सोचा कि किताब में ही मन लगाना उचित है। किताब उन्होंने जल्दबाज़ी में खरीदी थी, पर वह जासूसी उपन्यास निकली—और वह भी हिंदी में—सो चौबे जी को भरपूर आनंद आने लगा।

कुछ देर बाद नीचे मोबाइलों की टुन-टुन भी बंद हो गई। पति-पत्नी ने अपने घर से लाए सामान से चाय बनानी शुरू की। यह देखकर चौबे जी ने मन ही मन सोचा—

'लगता है पहली बार फ़र्स्ट एसी में बैठे हैं। इन्हें पता ही नहीं कि यहाँ चाय मुफ्त में मिलती है।'

यह सोचकर वे भीतर ही भीतर स्वयं पर इतराए और फिर से अपनी किताब में डूब गए।

तभी नीचे बैठे महाशय खड़े हुए और विनम्रता से बोले—

'भाईसाहब, आप चाय पिएँगे क्या?'

अब चौबे जी का मन तो हुआ कि तुरंत 'हाँ' कहें, नीचे उतरें और थोड़ा

Internal

गप्प-शप्प भी हो जाए; पर मित्र की दी हुई सीख याद थी—उच्चवर्गीय लोग अनावश्यक मेलजोल नहीं बढ़ाते।

सो दाँत भींचकर, एक अत्यंत अस्वाभाविक मुस्कान के साथ चौबे जी ने 'नहीं' कह दिया और तुरंत अपनी किताब में मुँह छिपा लिया।

इसके बाद नीचे बैठे दंपती से उनकी कोई बातचीत नहीं हुई।

कुछ देर बाद पैंट्री का एक कर्मचारी चाय का ऑर्डर लेने आया। चौबे जी, जो पिछले दो घंटे से इसी क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे, हड़बड़ा कर ऑर्डर दे बैठे।

चाय आई। उसके साथ नाश्ता भी आया और कर्मचारी बड़ी विनम्रता से बोला—

'कुछ भी चाहिए हो तो बुला लीजिएगा... और यह रहा चाय का बिल। अभी दे दीजिएगा।'

'चाय का बिल?' चौबे जी ने कुछ हिचकिचाते हुए पूछा।

'जी सर, अभी चाय-नाश्ता लाए हैं आपके लिए।'

चौबे जी घबरा गए—

'लेकिन... वो तो मुफ्त होती है न?'

वह व्यक्ति मुस्कुराया—

'सर, हमें पता था आपको मुफ्त वाली पसंद नहीं आएगी। इसलिए आपके लिए स्पेशल वाली लाए हैं। पीकर ही पता चलेगा। और नाश्ता भी है। ज़्यादा नहीं सर—बस दो सौ रुपये।'

अब चौबे जी बेचारे ऐसी स्थिति में थे कि चाय अभी मुँह से लगी भी नहीं थी और मुँह पहले ही जल चुका था। लेकिन कुछ कह भी नहीं सकते थे—नहीं तो सबको लगेगा कि कैसे-कैसे लोग आ गए हैं फ़र्स्ट एसी में। मन भारी था, पर धीरे से बटुए से दो सौ रुपये निकालकर दे दिए।

चौबे जी ने चाय पीते-पीते ऐसा मुँह बनाया मानो चाय नहीं, आत्मसम्मान उबलकर कप में आ गया हो। जब चाय का पहला घूँट लिया तो लगा जैसे किसी ने गरम पानी में मुट्ठी भर चीनी घोलकर दे दी हो।

इतने में मित्र का फोन आ गया। जब चौबे जी ने पूरी घटना सुनाई तो मित्र ऐसे भड़क उठे मानो उनका अपना बालक किसी परीक्षा में फेल हो गया हो।

तभी चौबे जी को पता चला कि वह व्यक्ति उन्हें बेवकूफ़ बनाकर मुफ्त वाली चाय के ही दो सौ रुपये वसूल कर गया।

चौबे जी पहले ही उदास थे, यह सुनकर और भी उदास हो गए। इतना गुस्सा आया कि मन ही मन बोले—

'अब बताओ... साथ वाले क्या सोच रहे होंगे हमारे बारे में!'

जैसे-तैसे चाय खत्म की और बाथरूम जाने के बहाने उस आदमी को ढूँढ़ने निकले। भला हो कि नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ थीं—नहीं तो चौबे जी दो सौ क्या, पाँच सौ रुपये के लिए भी नीचे उतरने का कष्ट न करते।

खैर, वह आदमी तो नहीं मिला। पर चौबे जी ने इस विश्वासघात का बदला शौचालय में रखे लगभग खाली हैंडवॉश के डिब्बे से निकाल लिया। उसी का बहाना बनाकर उन्होंने कम से कम चार स्टाफ के सदस्यों को लताड़ लगा दी।

जब अंततः हैंडवॉश का डिब्बा पूरा भर गया, तब चौबे जी ने बड़े संतोष से हाथ धोए, दो सौ रुपये तो वापस नहीं मिले, पर हैंडवॉश का डिब्बा भरवा कर चौबे जी को लगा कि न्याय व्यवस्था अभी पूरी तरह समाप्त

नहीं हुई है, और वापस अपनी सीट पर आकर पुनः विराजमान हो गए।

कुछ समय बाद एक और स्टाफ सदस्य, जो पहले से ही कुछ चिढ़ा हुआ प्रतीत हो रहा था, चौबे जी से खाने के बारे में पूछने आया। अब पिछली घटना से सबक ले चुके चौबे जी ने सबसे पहले भोजन की कीमत पूछी। एक-दो नहीं, पूरे तीन बार यह पक्का कर लेने के बाद कि इसके लिए अलग से कोई पैसा नहीं देना होगा, तब जाकर वे खाने के लिए तैयार हुए।

खाना आया, चौबे जी ने संतोषपूर्वक भोजन किया। नीचे बैठे दंपती ने भी अपने-अपने घर फोन कर हालचाल बता दिए। पर सामने वाला सज्जन अब भी उसी निश्चिंतता से सो रहा था। यह बात चौबे जी को कुछ अटपटी अवश्य लगी, लेकिन फिर वही—उच्चवर्गीय व्यवहार का अनुसरण करते हुए उन्होंने अपने काम से काम रखना ही उचित समझा।

उधर जो जासूसी उपन्यास वे पढ़ रहे थे, वह अब उस पड़ाव पर पहुँच चुका था जहाँ किसी आदमी की हत्या का शक एक बिल्कुल मासूम व्यक्ति पर आ गया था। बेचारा लाख कोशिश करने पर भी स्वयं को निर्दोष सिद्ध नहीं कर पा रहा था। चौबे जी उस कहानी में इतने रम गए थे कि उस निर्दोष व्यक्ति की पीड़ा सोचकर ही उनकी आँखें नम होने को हो आतीं।

रात के बारह बज चुके थे। कोच में अँधेरा भी हो गया था और गहरा सन्नाटा भी। बस चौबे जी की ऊपर वाली रीडिंग लाइट जल रही थी।

चौबे जी सोच ही रहे थे कि जल्दी से किताब समाप्त कर लें और इस बार ट्रेन यात्रा में पहली बार आराम से सोने का सुख भी ले लें—कि तभी कहीं से 'घन्न... घन्न...' की आवाज़ सुनाई दी।

पहले तो उनका ध्यान ही नहीं गया, क्योंकि कहानी उस निर्दोष व्यक्ति की ओर अत्यंत रोचक ढंग से झुकने लगी थी। पर जब यह घन्न-घन्न बंद ही नहीं हुई, तब चौबे जी की तंद्रा टूटी। हड़बड़ाकर उन्होंने अपना फोन ढूँढ़ा, पर देखा कि न कोई कॉल आया था, न कोई संदेश।

उन्हें लगा शायद भ्रम हुआ होगा।

लेकिन कुछ ही क्षण बाद फिर वही 'घन्न... घन्न...' सुनाई दी।

तब जाकर उनका ध्यान सामने वाले सज्जन के फोन पर गया। फोन और वह सज्जन—दोनों उल्टे मुँह पड़े थे। बस फोन से आती हल्की-सी रोशनी दिखाई दे रही थी। तभी चौबे जी को पक्का विश्वास हो गया कि यह फोन उसी कुंभकर्ण का बज रहा है।

अब चौबे जी करें तो करें क्या?

अगर उस आदमी को उठाएँ और वह उल्टा-सीधा कुछ बोल दे तो कितनी बेइज़्ज़ती होगी! और फिर मित्र ने तो पहले ही समझा दिया था कि किसी से कोई मतलब नहीं रखना है।

सो चौबे जी ने कुछ देर फिर से अपनी किताब की मिस्ट्री में खो जाने की कोशिश की। लेकिन फोन कम से कम बीस बार वाइब्रेट हो चुका था और उस सोए हुए सज्जन पर उसका रत्ती भर भी असर नहीं हो रहा था।

उधर चौबे जी का मन मध्यवर्ग और उच्चवर्ग के बीच ऐसे गोते खा रहा था मानो कोई तैराक दोनों किनारों पर एक साथ पैर रखने की कोशिश कर रहा हो।

तभी अचानक उनके मन में एक भयावह विचार कौंधा—

'यह सो ही रहा है न... कहीं मर तो नहीं गया?'

नितांत ठंडे कोच में भी टोपी पहने बैठे चौबे जी के माथे से टप-टप पसीना बहने लगा। उन्होंने तुरंत टोपी उतार दी, पर पसीना गर्मी से नहीं, डर से आया था—इसलिए आता ही रहा।

फोन कुछ देर रुका, फिर दोबारा बजने लगा।

अब चौबे जी चाहकर भी उसे उठाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे। कहीं सचमुच वह मर ही गया हो! अगर उन्होंने सबसे पहले लाश को छू लिया तो पूछताछ में उन्हें भी घसीटा जाएगा।

घसीटा तो वैसे भी जाएगा—वे ही तो सबसे बड़े चश्मदीद गवाह हैं! गवाह ही मानेंगे न पुलिस वाले? कहीं ऐसा न हो कि वे ही इस कत्ल के इल्ज़ाम में फँस जाएँ।

कहीं पुलिस यह न सोच ले कि अगर हम निर्दोष होते तो कम से कम एक बार अपने सहयात्री को उठाकर पूछते तो सही कि क्यों नहीं उठ रहा! ऐसे तो हम पर भी शक आ जाएगा कि सामने पड़ा आदमी तब से हिला भी नहीं और हमें शक तक नहीं हुआ।

और पुलिस को यह तर्क देना कि 'हम अपना स्टेटस मेंटेन कर रहे थे'—यह तो शायद किसी भी क़ानून की किताब में स्वीकार्य कारण नहीं होगा।

'हे ईश्वर, यह कहाँ फँस गए हम!' चौबे जी मन ही मन बुदबुदाए।

कौन जाने यह आदमी कहाँ से आ रहा हो। क्या पता उसने खुद ही कुछ खा लिया हो... या किसी ने कुछ खिला दिया हो। ज़हर धीरे-धीरे असर कर गया हो—ठीक वैसे ही जैसे अभी पढ़े जा रहे उपन्यास में हुआ था।

'हे भगवान! कहीं उपन्यास का निर्दोष आदमी हम ही तो नहीं बन जाएँगे!'

'हम कैसे साबित करेंगे कि हमने कुछ नहीं किया? हमारे लिए तो यहाँ गवाही देने वाला भी कोई नहीं। नीचे बैठे दंपती से भी हमने टेढ़े मुँह ही बात की है, और यहाँ का स्टाफ तो वैसे ही हमसे चिढ़ा बैठा है। इतना डाँटना भी नहीं चाहिए था उन्हें। उनकी क्या गलती थी कि कोई और हमसे पैसे ठग कर ले गया! और ठग कर भी क्या—सिर्फ दो सौ रुपये ही तो ले गया। क्या पता उसकी कोई मजबूरी रही हो... पर हमें तो बस हेकड़ी दिखानी थी।'

चौबे जी का मन पछतावे से भर उठा।

'अब क्या करें? कैसे साबित करेंगे कि हम निर्दोष हैं! अगर सुबह तक भी यह नहीं उठा तो लोगों को शक होगा ही। स्टाफ आएगा, उठाएगा—और यह उठेगा नहीं। फिर सबसे पहले पूछताछ तो हमसे ही होगी। पुलिस वाले तो वैसे भी सब पर शक करते हैं—उपन्यास में भी यही हुआ था।'

इधर चौबे जी इस उधेड़बुन में डूबे थे, उधर फोन कम से कम साठ बार और बज चुका था।

तभी अचानक दरवाज़े पर ज़ोर-ज़ोर से खटखटाहट होने लगी।

'लो... आ गई पुलिस!' चौबे जी ने मन ही मन कहा।

पसीने से तर चेहरा और डबडबाई आँखों के साथ वे लगभग जड़ हो गए। बाहर से आवाज़ आई—

'खोलिए! जल्दी!'

नीचे सोए हुए आदमी ने हड़बड़ाकर दरवाज़ा खोला तो सामने रेलवे पुलिस का एक कर्मचारी और टीटी खड़े थे।

चौबे जी को उसी क्षण लगा मानो वे स्वयं को सलाखों के पीछे खड़ा देख रहे हों।

कोच की लाइट जला दी गई। टीटी ने उस आदमी को ज़ोर से झकझोरते हुए आवाज़ दी। चौबे जी तो बस रोने ही वाले थे कि 'हम कुछ नहीं जानते...'

तभी वह आदमी अचानक चौंककर उठ बैठा—और चौबे जी ऐसे चीखे मानो भूत देख लिया हो। उनकी चीख इतनी प्रामाणिक थी कि नीचे सोया हुआ बच्चा भी हड़बड़ाकर उठ गया इतने सारे लोगों को देखकर डर के मारे ज़ोर-ज़ोर से चीख-चीखकर रोने लगा।

टीटी ने चौबे जी की ओर एक क्षण देखा, फिर नज़रें फेरकर सोए हुए सज्जन को डाँटने लगा—

'किस दुनिया में सो रहे थे आप? घरवाले कितने घंटों से फोन कर रहे हैं! हेड ऑफिस से फोन आया है। ऐसे कैसे सो गए? नशा किया है क्या?'

टीटी और पुलिसवाला उस आदमी को और डाँटना चाहते थे, पर बच्चे के लगातार रोने की वजह से झुँझलाकर इतना कहकर चलते बने—

'आजकल तो आस-पास वाले भी ध्यान नहीं देते कि आदमी ठीक है या नहीं!'

उनके जाते ही नीचे वाले सज्जन ने बच्चे का रोना बंद कराने के लिए जल्दी से लाइट बुझा दी, शायद अँधेरा होते ही वह फिर सो जाए।

उधर चौबे जी ने चुपचाप अपने आँसू पोंछे, पीछे की रीडिंग लाइट बंद की और हाथ जोड़कर अपने सहयात्री की कुशलता के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया।

सामने वाले सज्जन ने भी जल्दी से घर फोन मिलाया और अपने कुशल-क्षेम की सूचना दी। उन्होंने बताया कि अत्यधिक थकान और हल्का ज्वर महसूस होने के कारण उन्होंने बुखार की दवा कुछ ज़्यादा मात्रा में ले ली थी, इसलिए गहरी नींद आ गई और फोन तक सुनाई नहीं दिया।

लेकिन अब पूरी रात वे अपने घरवालों को सफाई देते रहे, और नीचे वाला बालक—जिसकी नींद पूरी हो चुकी थी—अब बिल्कुल भी सोने को तैयार नहीं था। वह पूरी रात कोच को सिर पर उठाए रहा।

इस प्रकार चौबे जी का ट्रेन में चैन की नींद लेने का सपना एक बार फिर सपना ही रह गया।

फिर भी वे संतुष्ट थे—कम से कम सब लोग जीवित और कुशल तो थे।

अगली सुबह जब उन्होंने सामने वाले सज्जन से बात की तो पता चला कि पूरे देश में फ़्लाइटें रद्द हो गई थीं। वह बेचारे पिछला एक दिन और पूरा कल एयरपोर्ट पर भटकते रहे थे। बड़ी मुश्किल से उन्हें ट्रेन में सीट मिली थी, इसलिए कोच में बैठते ही लगभग बेहोश होकर सो गए थे।

नीचे बैठे दंपती से भी चौबे जी ने इस बार सभ्यतापूर्वक बातचीत की। तब पता चला कि वे उनके ही शहर के रहने वाले हैं—और उनके जानने वाले किसी व्यक्ति के जानने वाले के बेटी-दामाद निकलते हैं।

अब उनका पुत्र भी चौबे जी से घुल-मिल गया था। लगभग दो-तीन घंटे तक वह सीढ़ियों से ऊपर-नीचे करके खेलता रहा। जब उतरने का समय आया तो चौबे जी ने स्वयं को उसका नाना मानते हुए, माता-पिता के लाख मना करने के बावजूद, उसे दो सौ रुपये पकड़ा ही दिए।

जब उनका स्टेशन आया तो चौबे जी का मध्यवर्ग से उच्चवर्ग में जाने का विचार कहीं रास्ते में उतर चुका था।

बाहर आए, घर के लिए रिक्शा किया अपने मित्र को फोन किया तो पता लगा कि वे मित्र अभी भी एयरपोर्ट पर अपनी फ़्लाइट का इंतज़ार कर के थक चुके थे और वापस घर को जा रहे थे। यह सुनकर चौबे जी मुस्कुराए और बोले—

'रुको... हम लेने आते हैं स्कूटर से। ट्रेन का टिकट भी करवा देंगे—एक जानने वाले हैं हमारे।'

आस्था के पंख : कामाख्या यात्रा

यात्रा-वृतांत

जी माधवीलता
प्रबंधक
सीआईबीएम, मणिपाल

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: जहां महिलाओं का सम्मान होता है, वहां ईश्वर का वास होता है।

कुछ यात्राएँ ऐसी होती हैं जो आपका पता बदल देती हैं और फिर कुछ यात्राएँ ऐसी होती हैं जो आपका नज़रिया बदल देती हैं। असम में कामाख्या मंदिर की मेरी हाल की तीर्थयात्रा, जो मैंने अपने पति के साथ की, बहुत खूबसूरत थी। यह आध्यात्मिक यात्रा के तौर पर शुरू हुई थी, वह धीरे-धीरे और भी कीमती चीज़ बन गई: एक जीता-जागता जश्न कि हम एक देश के तौर पर कितनी दूर आ गए हैं, जहाँ महिलाएँ और पुरुष एक साथ मिलकर एक साझे और चमकदार क्षितिज की ओर बढ़ रहे हैं।

वह उड़ान जिसने माहौल बनाया

सुबह के सूरज की रोशनी से सुनहरे आसमान में अगरतला से एयरक्राफ्ट उड़ा। हमारे नीचे, नॉर्थ-ईस्ट एक जीती-जागती पेंटिंग की तरह फैला हुआ था, घनी हरी पहाड़ियों के बीच से नदियां बह रही थीं, सुबह की हल्की-सी स्वागत में घाटियों को घेरे हुए धुंध और फिर इस यात्रा ने हमें नज़ारे से भी ज़्यादा खूबसूरत बहुत कुछ दिया।

मेरे बगल में दावणगेरे की एक इंजीनियरिंग प्रोफेसर बैठी थीं-शांत, मिलनसार, और युवा स्टूडेंट्स जो तकनीकी में करियर बनाने के लिए प्रेरित होकर गुवाहाटी जा रही थीं। जब वह छोटे शहरों की लड़कियों को STEM फील्ड में गाइड करने के बारे में बता रही थीं, तो मुझे अपने अंदर सच्ची खुशी महसूस हुई। यहाँ सशक्तता अपने सबसे खूबसूरत रूप में थी यह दीवार पर लिखा कोई नारा नहीं, बल्कि सुबह की फ्लाइट में एक महिला जो खुशी-खुशी अपनी एनर्जी दूसरों के भविष्य में लगा रही थी।

कुछ दूर आगे, कॉलेज की लड़कियाँ एक अंतर- राज्य खेल प्रतिस्पर्धा के लिए जा रही थीं और उनमें ज़बरदस्त जोश था। उनके कोच—एक आदमी, सब्र रखने वाले और व्यवस्थित, जो टीम का ज़्यादा सामान खुशी-खुशी उठा रहे थे, चुपचाप एक डायरी में लिख रहे थे, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि वह दूसरों को चमकने में मदद करने का मतलब ढूंढ रहे थे। उन्हें किसी चमक-दमक की ज़रूरत नहीं थी। उनकी खुशी पूरी तरह से "उनकी खुशी" में ही थी।

मुझे एहसास हुआ कि यह आम घरेलू उड़ान कुछ बहुत खास लेकर आ रही थी। औरतें अपने सपनों की ओर बढ़ रही थीं, और मर्द खुशी-खुशी उन्हें वहाँ पहुँचने में मदद कर रहे थे।

जैसा कि गुरुदेव टैगोर ने लिखा है "विश्वास वह पक्षी है जो भोर के अंधेरे में भी प्रकाश महसूस करता है।"

गुवाहाटी: जहां प्राचीन ज्ञान और आधुनिक आकांक्षाएं मिलती हैं

गुवाहाटी ने हमारा गर्मजोशी और तत्परता के साथ स्वागत किया। शानदार ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसे, इसके चहल-पहल वाले बाज़ार हैदराबाद के कोटी या बेंगलुरु के मैजेस्टिक को टक्कर देते हैं और यह शहर आईआईटी गुवाहाटी, ऐम्स गुवाहाटी और आईआईआईटी गुवाहाटी का घर है, जो देश का भविष्य बनाने वाले शानदार युवा दिमाग तैयार कर रहे हैं।

यहाँ, परीक्षा देने जा रहा एक विद्यार्थी और मंदिर के जीने चढ़ता एक भक्त, ये दोनों अलग-अलग बातें नहीं हैं, ये एक ही प्रेरणा देने वाली कहानी के अलग-अलग हिस्से हैं। जब ज्ञान और विश्वास साथ-साथ चलते हैं, तो वे एक-दूसरे को रोशन करते हैं और जब आदमी और औरतें उस रास्ते पर कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं, तो उनसे पैदा होने वाली रोशनी दोगुनी तेज़ होती है।

पहाड़ी, कतार और खूबसूरत साझेदारी

नीलांचल पहाड़ी पर कामाख्या मंदिर की चढ़ाई हर कदम के साथ एक अद्भुत शांति का एहसास कराती है। कतार, लोगों की खुशियों भरी लय

के साथ ठीक वहीं जा रही थी जहाँ वे होना चाहते थे; परिवार, बुज़ुर्ग, जोड़े, युवा पेशेवर, सभी आस्था की एक ही उदार भावना से जुड़े हुए थे।

उस कतार में हम सैनिकों के एक समूह से मिले, यूनिफॉर्म पहने, शांत और बिना किसी जल्दबाजी के, जिनकी बटालियन राजस्थान के बीकानेर में स्थानांतरित हो रही थी। पश्चिम की लंबी यात्रा से पहले इस पवित्र पहाड़ी पर आशीर्वाद लेने के लिए यह उनकी आखिरी यात्रा थी। उस नज़ारे में कुछ ऐसा था जो दिल को छू लेने वाला था, हमारी सीमाओं के ये रखवाले, हाथ जोड़े और शांत विश्वास के साथ खड़े थे, भगवान के सामने सिर झुकाने के लिए अपनी ड्यूटी रोक रहे थे। यह महसूस किया जाता है कि हिम्मत सिर्फ़ लड़ाई के मैदान में ही नहीं, बल्कि जिस शालीनता से ये लोग अपनी ज़िंदगी जीते हैं, उसमें भी होती है।

आखिरकार जब हम पवित्र स्थान में दाखिल हुए, पवित्र प्रांगण धूप से महक रहा था, और प्रार्थना की प्राचीन बड़बड़ाहट से भरा हुआ था यह अनुभव हर उम्मीद से बढ़कर था।

कामाख्या मंदिर **शक्ति का जश्न मनाता** है, वह मूल स्त्री ऊर्जा जो सारे अस्तित्व को बनाए रखती है। फिर भी भारतीय दर्शन में, शक्ति और शिव को अलग नहीं किया जा सकता। वह ऊर्जा है; यह वह ज़रिया है जो उसे रूप देता है। साथ मिलकर वे ऊंच-नीच नहीं, बल्कि संपूर्णता दिखाते हैं, पार्टनरशिप का सबसे खुशी देने वाला नज़ारा जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती है।

वहां खड़े होकर, ऐसा लगा जैसे यह कोई पुराना धर्मग्रंथ नहीं अपितु दुनिया का सजीव सत्य है ।

वह मेज जिसने आत्मा को तृप्त किया

असम ने बड़े उत्साह के साथ खाना परोसा। असली असमिया थाली तो कमाल की थी सामान्य, ज़मीन से जुड़ी हुई, बिना आधुनिक यंत्र के हाथ से बनी, धीमी आंच पर पकाई गई और एक ऐसी परम्परा में गर्मजोशी से परोसी गई जो आज भी गर्व से जारी है, एक बात और मोमोज़ वैसे नहीं थे जैसे मैंने दिल्ली, सिक्किम या दार्जिलिंग में खाए थे-बिल्कुल नाज़ुक, एकदम सही मसाले वाले, लगभग बहुत हल्के। मेरे पति ने एक बाइट लिया और कहा: "हम सिर्फ़ इन्हीं के लिए वापस आ रहे हैं।

सबसे अच्छी यात्राएं ठीक इन्हीं से बनती हैं — छोटे-छोटे, खुशी के पल जो रोशनी की तरह एक साथ जुड़े होते हैं।

यात्रा ने क्या वापस दिया

वापसी की फ़्लाइट में, जब हमारे नीचे नॉर्थ-ईस्ट जगमगा रहा था, तो मैंने खुद को बहुत भाग्यशाली माना ।

प्रोफेसर दूसरी औरतों के लिए रास्ता दिखा रहे हैं। एथलीट अपने सपनों की ओर उड़ रहे हैं और कोच उनके बैग उठा रहे हैं ताकि वे अपने सपने पूरे कर सकें। सैनिक जो आशीर्वाद लेने के लिए अपनी ड्यूटी कर रहे हैं, वे उतने ही स्वाभाविक रूप से विश्वास रखते हैं जितना कि वे अपनी हिम्मत रखते हैं। पहाड़ी पर मंदिर, पुराना, हमेशा रहने वाला, इस सच्चाई का जश्न मनाता है कि ताकत बांटने पर सबसे शानदार होती है।

नॉर्थ-ईस्ट भारत के भौगोलिक किनारे पर है, फिर भी यह कभी भी इसके दिल से दूर नहीं लगता। सबसे अच्छी यात्राएँ आपको कहीं नहीं ले जातीं, वे आपको घर ले जाने के लिए कुछ मजेदार अनुभव देती हैं।

हम प्रसाद, अच्छी यादें और नए विश्वास के साथ लौटे।

एक ऐसी दुनिया जहाँ वह ऊपर उठती है, और वह सबसे ज़ोर से जय जयकार करता है।

जहाँ वह लीड करता है — और वह उसकी सबसे बड़ी ताकत है। जहाँ दोनों एक साथ ऊपर की ओर देखते हैं, और चढ़ते रहते हैं।

पहाड़ी पर बना मंदिर सदियों से इस सत्य का जश्न मनाता आ रहा है।

यह मेरे लिए कितने खुशी की बात है कि आखिरकार हमने खुद इसे इतने पास से जीवंत तौर पर देखा।

बैंकिंग के मौन संरक्षक : लेखापरीक्षा और अनुपालन का अभेद्य कवच

आलेख

अभिषेक कुमार
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, गाज़ियाबाद

1. प्रस्तावना : विश्वास पर आधारित बैंकिंग व्यवस्था

आधुनिक आर्थिक व्यवस्था में बैंकिंग प्रणाली की भूमिका अत्यंत केंद्रीय और निर्णायक है। किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति, औद्योगिक विकास, व्यापारिक गतिविधियों की गति तथा निवेश के विस्तार का सीधा संबंध उसकी बैंकिंग व्यवस्था से होता है। बैंक केवल धन जमा करने और ऋण प्रदान करने वाली संस्थाएँ नहीं हैं, बल्कि वे आर्थिक संसाधनों के संचलन, पूँजी के प्रवाह और वित्तीय स्थिरता को बनाए रखने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। इसी कारण बैंकिंग प्रणाली को आधुनिक अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा कहा जाता है।

बैंकिंग व्यवस्था की सबसे बड़ी शक्ति जनता का विश्वास है। जब कोई व्यक्ति अपनी मेहनत की कमाई बैंक में जमा करता है, तो वह केवल एक वित्तीय लेन-देन नहीं करता, बल्कि वह बैंकिंग प्रणाली की विश्वसनीयता पर भरोसा व्यक्त करता है। इसी प्रकार व्यापारी और उद्योगपति बैंक से ऋण लेते समय यह मानकर चलते हैं कि बैंकिंग व्यवस्था स्थिर और पारदर्शी है। यदि यह विश्वास कमजोर पड़ जाए, तो बैंकिंग संस्थाओं की साख पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है और इससे संपूर्ण आर्थिक व्यवस्था में अस्थिरता उत्पन्न हो सकती है।

आज के समय में बैंकिंग गतिविधियाँ अत्यंत जटिल हो चुकी हैं। वैश्वीकरण, डिजिटल भुगतान प्रणाली, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय लेन-देन, निवेश के नए साधन तथा उन्नत तकनीकों के प्रयोग ने बैंकिंग प्रणाली को पहले से कहीं अधिक व्यापक बना दिया है। ऐसी परिस्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि बैंकिंग संस्थानों के भीतर एक मजबूत नियंत्रण तंत्र मौजूद हो जो वित्तीय अनुशासन और पारदर्शिता सुनिश्चित कर सके। इसी नियंत्रण व्यवस्था के दो महत्वपूर्ण स्तंभ हैं-लेखापरीक्षा (Audit) और अनुपालन (Compliance)। ये दोनों तंत्र बैंकिंग प्रणाली के ऐसे मौन संरक्षक हैं जो वित्तीय अनुशासन और विश्वसनीयता को बनाए रखते हैं।

2. लेखापरीक्षा : वित्तीय पारदर्शिता की आधारशिला

लेखापरीक्षा बैंकिंग प्रणाली में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व बनाए रखने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है। सामान्यतः लेखापरीक्षा को केवल वित्तीय खातों की जाँच के रूप में समझा जाता है, किंतु वास्तविकता में इसका दायरा इससे कहीं अधिक व्यापक होता है। बैंकिंग क्षेत्र में लेखापरीक्षा का उद्देश्य केवल यह सुनिश्चित करना नहीं होता कि खातों में दर्ज आंकड़े सही हैं, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना होता है कि बैंक की कार्यप्रणाली निर्धारित नियमों और मानकों के अनुरूप संचालित हो रही है।

बैंकिंग संस्थानों में प्रतिदिन लाखों वित्तीय लेन-देन होते हैं। ऋण वितरण, निवेश प्रबंधन, विदेशी मुद्रा लेन-देन और जोखिम मूल्यांकन जैसी प्रक्रियाएँ अत्यंत संवेदनशील होती हैं। यदि इन प्रक्रियाओं में उचित नियंत्रण और निगरानी न हो तो वित्तीय अनियमितताओं की संभावना बढ़ सकती है। लेखापरीक्षा इन प्रक्रियाओं की गहन समीक्षा करती है और संभावित जोखिमों की पहचान करने में सहायता करती है।

लेखापरीक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य वित्तीय धोखाधड़ी और अनियमितताओं की रोकथाम भी है। बैंकिंग क्षेत्र में धन की बड़ी मात्रा में आवाजाही होती है और यदि निगरानी तंत्र मजबूत न हो तो अनियमितता- ओं की संभावना बढ़ सकती है। लेखापरीक्षा इस संभावना को कम करने के लिए एक प्रभावी निगरानी प्रणाली प्रदान करती है। इस प्रकार यह बैंकिंग संस्थानों को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और विश्वसनीय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

3. लेखापरीक्षा के प्रकार और बहुस्तरीय नियंत्रण व्यवस्था

बैंकिंग प्रणाली में लेखापरीक्षा कई स्तरों पर की जाती है ताकि नियंत्रण व्यवस्था प्रभावी बनी रहे। सबसे पहले आंतरिक लेखापरीक्षा (Internal Audit) का उल्लेख किया जा सकता है। यह बैंक के भीतर स्थापित एक

स्वतंत्र विभाग द्वारा संचालित होती है। इसका उद्देश्य बैंक की शाखाओं, विभागों और प्रक्रियाओं की नियमित समीक्षा करना तथा संभावित जोखिमों और अनियमितताओं की पहचान करना होता है। आंतरिक लेखापरीक्षा संस्थान को समय रहते अपनी कमजोरियों को पहचानने और सुधार करने का अवसर प्रदान करती है।

इसके अतिरिक्त बाह्य लेखापरीक्षा (External Audit) भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यह स्वतंत्र चार्टर्ड अकाउंटेंट या लेखा फर्मों द्वारा की जाती है। बाह्य लेखापरीक्षा बैंक के वित्तीय विवरणों की विश्वसनीयता की पुष्टि करती है और निवेशकों, नियामकों तथा आम जनता को बैंक की वास्तविक वित्तीय स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करती है। इससे बैंकिंग संस्थानों की पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ती है।

इसके अलावा बैंकिंग प्रणाली में नियामकीय निरीक्षण भी किया जाता है, जिसे भारत में मुख्यतः भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) संचालित करता है। आरबीआई समय-समय पर बैंकों का निरीक्षण करता है और यह सुनिश्चित करता है कि वे सभी नियामकीय मानकों का पालन कर रहे हैं। इस प्रकार आंतरिक, बाह्य और नियामकीय तीनों प्रकार की लेखापरीक्षाएँ मिलकर बैंकिंग प्रणाली में एक मजबूत बहुस्तरीय नियंत्रण ढाँचा तैयार करती हैं।

4. अनुपालन : नियमों और नैतिकता का प्रहरी

जहाँ लेखापरीक्षा अतीत की गतिविधियों की समीक्षा करती है, वहीं अनुपालन (Compliance) वर्तमान और भविष्य की गतिविधियों को नियंत्रित करने का कार्य करता है। अनुपालन का अर्थ है यह सुनिश्चित करना कि बैंक की सभी गतिविधियाँ कानूनों, नियामकीय दिशानिर्देशों और संस्थागत नीतियों के अनुरूप संचालित हों।

बैंकिंग क्षेत्र अत्यधिक विनियमित क्षेत्र है क्योंकि इसकी गतिविधियों का प्रभाव व्यापक आर्थिक प्रणाली पर पड़ता है। यदि बैंकिंग संस्थान नियमों का पालन न करें तो इससे वित्तीय संकट उत्पन्न हो सकता है। इसलिए अनुपालन विभाग का कार्य यह सुनिश्चित करना होता है कि बैंक के सभी कर्मचारी और अधिकारी निर्धारित नियमों का पालन करें।

उदाहरण के लिए ग्राहकों की पहचान सुनिश्चित करने के लिए केवाईसी (Know Your Customer) नियम बनाए गए हैं। इसी प्रकार अवैध धन के प्रवाह को रोकने के लिए धन शोधन निवारण (AML) कानून लागू किए गए हैं। इन नियमों का उद्देश्य बैंकिंग प्रणाली को सुरक्षित और पारदर्शी बनाना है। प्रभावी अनुपालन व्यवस्था बैंकिंग संस्थानों को कानूनी जोखिमों से बचाती है और उनकी प्रतिष्ठा को भी सुरक्षित रखती है।

5. भारतीय बैंकिंग प्रणाली के वास्तविक उदाहरण

भारतीय बैंकिंग इतिहास में कई ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिन्होंने नियंत्रण तंत्र की आवश्यकता को स्पष्ट रूप से उजागर किया है। पंजाब नेशनल बैंक घोटाला (2018) इसका एक प्रमुख उदाहरण है। इस मामले में बैंक के कुछ कर्मचारियों ने आंतरिक नियंत्रण प्रक्रियाओं को दरकिनार करते हुए हजारों करोड़ रुपये की धोखाधड़ी को अंजाम दिया। इस घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि यदि निरीक्षण और नियंत्रण व्यवस्था मजबूत न हो तो गंभीर वित्तीय संकट उत्पन्न हो सकते हैं।

इसी प्रकार पीएमसी बैंक संकट (2019) में यह सामने आया कि बैंक ने एक ही रियल एस्टेट कंपनी को अत्यधिक ऋण दे दिया था और वास्तविक स्थिति को छिपाया गया था। जब यह मामला उजागर हुआ तो हजारों जमाकर्ताओं की बचत खतरे में पड़ गई। इससे बैंकिंग प्रणाली में पारदर्शिता और निगरानी के महत्व को लेकर व्यापक चर्चा हुई।

येस बैंक संकट (2020) ने भी यह दिखाया कि यदि जोखिम प्रबंधन और नियामकीय निगरानी कमजोर हो जाए तो बैंकिंग संस्थान गंभीर वित्तीय संकट में फँस सकते हैं। इन घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि लेखापरीक्षा और अनुपालन की मजबूत व्यवस्था बैंकिंग प्रणाली की स्थिरता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

6. आरबीआई की निगरानी प्रणाली और नियामकीय नियंत्रण

भारतीय बैंकिंग प्रणाली की स्थिरता बनाए रखने में भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आरबीआई न केवल देश की मौद्रिक नीति का संचालन करता है, बल्कि बैंकिंग संस्थानों की निगरानी और विनियमन भी करता है। आरबीआई समय-समय पर बैंकों की वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन करता है और यह सुनिश्चित करता है कि वे सभी नियामकीय मानकों का पालन कर रहे हैं।

यदि किसी बैंक की वित्तीय स्थिति कमजोर हो जाती है तो आरबीआई त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई (PCA) जैसी व्यवस्था लागू कर सकता है। इसके अंतर्गत बैंक की ऋण वितरण क्षमता, शाखा विस्तार और अन्य गतिविधियों पर नियंत्रण लगाया जाता है ताकि संभावित वित्तीय संकट को रोका जा सके।

इसके अतिरिक्त आरबीआई बैंकों के लिए पूँजी पर्याप्तता, जोखिम प्रबंधन और पारदर्शिता से संबंधित दिशानिर्देश भी जारी करता है। इन उपायों का उद्देश्य बैंकिंग प्रणाली को सुरक्षित, स्थिर और विश्वसनीय बनाए रखना है।

7. वैश्विक बैंकिंग मानक और बेसल मानदंड

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बैंकिंग प्रणाली को सुरक्षित बनाने के लिए कई मानक विकसित किए गए हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण बेसल मानदंड हैं, जिन्हें बैंकिंग पर्यवेक्षण के लिए स्थापित बेसल समिति द्वारा विकसित किया गया है।

बेसल मानकों का उद्देश्य बैंकिंग संस्थानों में पूँजी पर्याप्तता, जोखिम प्रबंधन और वित्तीय पारदर्शिता सुनिश्चित करना है। वर्तमान में अधिकांश देशों की बैंकिंग प्रणालियाँ बेसल III मानकों के अनुसार कार्य कर रही हैं। इन मानकों के अंतर्गत बैंकों को यह सुनिश्चित करना होता है कि उनके पास संभावित वित्तीय संकटों से निपटने के लिए पर्याप्त पूँजी और मजबूत जोखिम प्रबंधन प्रणाली मौजूद हो।

भारत में भारतीय रिज़र्व बैंक इन वैश्विक मानकों को लागू करने और उनकी निगरानी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे भारतीय बैंकिंग प्रणाली की विश्वसनीयता और स्थिरता को मजबूती मिलती है।

8. डिजिटल बैंकिंग और उभरते जोखिम

पिछले एक दशक में बैंकिंग क्षेत्र में डिजिटल क्रांति आई है। इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और यूपीआई जैसी प्रणालियों ने वित्तीय सेवाओं को अत्यंत सरल और सुलभ बना दिया है। आज करोड़ों लोग डिजिटल माध्यमों से बैंकिंग सेवाओं का उपयोग कर रहे हैं। हालाँकि डिजिटल बैंकिंग ने सुविधाएँ बढ़ाई हैं, लेकिन इसके साथ साइबर अपराध, ऑनलाइन धोखाधड़ी और डेटा चोरी जैसे जोखिम भी बढ़े हैं। साइबर हमलों के माध्यम से बैंकिंग प्रणाली को नुकसान पहुँचाने की घटनाएँ विश्व स्तर पर बढ़ रही हैं।

ऐसी परिस्थितियों में लेखापरीक्षा और अनुपालन की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। अब इन तंत्रों को केवल वित्तीय खातों की जाँच तक सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि साइबर सुरक्षा, डेटा सुरक्षा और डिजिटल जोखिमों की निगरानी भी करनी चाहिए।

9. भविष्य की दिशा : प्रौद्योगिकी आधारित लेखापरीक्षा

भविष्य में बैंकिंग निरीक्षण प्रणाली और अधिक तकनीकी आधारित होने जा रही है। डेटा एनालिटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग जैसी तकनीकों का उपयोग करके संदिग्ध लेन-देन की पहचान की जा रही है। रेगटेक (Regulatory Technology) और सूपटेक (Supervisory Technology) जैसी अवधारणाएँ नियामकीय निगरानी को अधिक प्रभावी बना रही हैं। इन तकनीकों की सहायता से बैंकों की गतिविधियों का वास्तविक समय में विश्लेषण किया जा सकता है। इस प्रकार तकनीकी नवाचार भविष्य में लेखापरीक्षा और अनुपालन प्रणाली को और अधिक मजबूत बनाएंगे।

10. निष्कर्ष : बैंकिंग प्रणाली की सुरक्षा का अभेद्य कवच

अंततः यह स्पष्ट है कि बैंकिंग प्रणाली की स्थिरता और विश्वसनीयता बनाए रखने में लेखापरीक्षा और अनुपालन की भूमिका अत्यंत महत्व पूर्ण है। ये दोनों तंत्र बैंकिंग व्यवस्था के ऐसे मौन संरक्षक हैं जो वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करते हैं। यदि बैंकिंग संस्थान इन तंत्रों को केवल औपचारिक प्रक्रिया न मानकर अपने प्रशासनिक ढाँचे का केंद्रीय स्तंभ बना लें, तो वित्तीय प्रणाली अधिक सुरक्षित और स्थिर बन सकती है। मजबूत लेखापरीक्षा वित्तीय पारदर्शिता सुनिश्चित करती है, जबकि प्रभावी अनुपालन कानूनी और नैतिक मानकों के पालन को सुनिश्चित करता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि लेखापरीक्षा और अनुपालन वास्तव में बैंकिंग प्रणाली के अभेद्य कवच हैं - ऐसा कवच जो आर्थिक स्थिरता, वित्तीय पारदर्शिता और जनविश्वास की रक्षा करते हुए राष्ट्र की आर्थिक प्रगति को निरंतर आगे बढ़ाता है।

"मैंने स्वप्न देखा कि जीवन आनंद है। मैं जागा और पाया कि जीवन सेवा है। मैंने सेवा की और पाया कि सेवा में ही आनंद है."

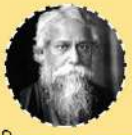

रबीन्द्रनाथ ठाकुर

नारी : अविरल धारा

कविता

दिव्या प्रजापति
अधिकारी
हर्ष नगर शाखा

वह सलिल सी बहती, सरकती, सिहरती,
असंख्य शिलाखण्डों से टकराकर भी निखरती।

जैसे कहानियाँ और संघर्ष हों उसका श्रृंगार,
हर युद्ध से निखरता है उसका रूप हर बार।

जब कल- कल करती तो लय बन जाती,
या कभी भीषण प्रचंड प्रलय बन जाती।

सतह से दिखती सरल पर भीतर से है विस्तार,
अंतर में समेटे हुए है उसने कई गहन गूढ़ विचार।

वह नीरव गतिमान सी, है कोलाहल से मुक्त,
उसका अस्तित्व है, शीतल तृप्त और कर्मयुक्त।

वह कठिन पथ पर भी सरलता से चलती,
और हर दुर्गम मोड़ पर स्वयं को फिर से गढ़ती।

वह निःसंकोच कर जाती है सब पर उपकार,
न कोई अपेक्षा है उसकी और न किसी पर अधिकार।

उसकी जीवंतता निर्जीव को भी संवारती,
उसकी गति गतिहीन को नवस्पंदन से निखारती।

वह वसुधा के अंक में जीवन का संचार करे,
सूखे हर कण क्षण में हरियाली का विस्तार करे।

धैर्य और सहनशीलता सदैव रहे है उसका बल,
मरुस्थल की तप में उसका निस्वार्थ प्रेम है शीतल।

वह प्रवाहित है गिरी कंदराओं में, ठहरना है उसे अस्वीकार,
उसका संवेदनशील सृजन है जीवन अस्तित्व का आधार।

वह मात्र सरिता सलिल नहीं, है नारी का रूप सजीव,
संघर्षों से तपकर बनी है, उसके आदम्य साहस की नींव।

उसका अविरल प्रवाह है, परिवर्तन की धार
उसके अस्तित्व से उज्ज्वल है यह सारा संसार

उसका सलिल वेग समय की कहानी है,
वह मौन मूक नहीं युग- युग की वाणी है।

कभी ममतामयी सी सृष्टि को अपनी गोद में सुलाती,
तो कभी प्रलय बनकर अन्याय से लड़ जाती।

वह नेत्र जल भी है और अविचल मुस्कान भी,
वह वेदना भी है और समाधान भी

वह रुकती नहीं है, समय के वेग को मोड़ देती है,
और हर युग को नए इतिहास से जोड़ देती है।

वह मात्र जलधारा नहीं जीवन का सार है।
वह मात्र जलधारा नहीं जीवन का सार है।
वह नारी है-
सृजन संकल्प धैर्य और प्रहार है।

उडुपि जिला : कर्नाटक का आध्यात्मिक मोती

आलेख

नैंसी वर्गीज
मण्डल प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

जहाँ समुद्र की लहरें इतिहास की कहानियाँ सुनाती हैं, जहाँ हर हवा की साँस में भक्ति की सुगंध होती है, और जहाँ प्रकृति स्वयं मंदिर बनकर मनुष्य को शांति का पाठ पढ़ाती है, वही है कर्नाटक का गौरवशाली जिला — उडुपि।

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ का हर राज्य, हर जिला अपनी विशिष्ट पहचान और सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। भारत की यही विविधता इसे विश्व के सबसे समृद्ध सांस्कृतिक देशों में स्थान दिलाती है। कर्नाटक राज्य का **उडुपि जिला** भी ऐसी ही एक अद्भुत भूमि है, जहाँ **आध्यात्मिकता, प्रकृति, संस्कृति और परंपरा का सुंदर संगम** देखने को मिलता है। यह जिला केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और आस्था का एक जीवंत प्रतीक है। अरब सागर की विशाल नीली लहरों और पश्चिमी घाट की हरी-भरी पहाड़ियों के बीच स्थित उडुपि हर व्यक्ति के मन को आकर्षित करता है।

उडुपि को यदि एक शब्द में परिभाषित किया जाए, तो वह शब्द होगा आस्था। यहाँ की धरती में एक अद्भुत आध्यात्मिक ऊर्जा समाई हुई है। इस जिले का सबसे प्रसिद्ध और पवित्र स्थान **श्रीकृष्ण मठ** है। यह मठ उडुपि की पहचान ही नहीं, बल्कि भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों में से एक है। इस मठ की स्थापना तेरहवीं शताब्दी में महान संत और द्वैत दर्शन के प्रवर्तक **श्री माध्वाचार्य** ने की थी। माध्वाचार्य भारतीय दर्शन के महान आचार्यों में से एक माने जाते हैं, जिन्होंने भक्ति और ज्ञान के माध्यम से समाज को सही दिशा दिखाने का कार्य किया।

श्रीकृष्ण मठ में स्थित बालकृष्ण की प्रतिमा विशेष रूप से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि यह मूर्ति समुद्र से चमत्कारिक रूप से प्राप्त हुई थी। इस कारण इस मूर्ति के प्रति लोगों की आस्था और भी अधिक है। हर वर्ष लाखों श्रद्धालु यहाँ भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करने के लिए आते हैं। यहाँ की पूजा पद्धति, मंदिर की व्यवस्था और धार्मिक परंपराएँ लोगों को आध्यात्मिक शांति प्रदान करती हैं। जब मंदिर में घंटियों की ध्वनि और भजन गूँजते हैं, तो वातावरण अत्यंत पवित्र और शांतिपूर्ण हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वयं भगवान कृष्ण इस भूमि को आशीर्वाद दे रहे हों।

उडुपि केवल आध्यात्मिकता का केंद्र ही नहीं है, बल्कि यह प्राकृतिक सौंदर्य से भी परिपूर्ण है। यहाँ का प्रसिद्ध **मालपे बीच** इस जिले की सुंदरता को और भी बढ़ा देता है। मालपे बीच का सुनहरा रेत और समुद्र की विशाल लहरें देखने में अत्यंत आकर्षक लगती हैं। सूर्यास्त के समय जब सूरज की लालिमा समुद्र के पानी में प्रतिबिंबित होती है, तो वह दृश्य अत्यंत मनमोहक लगता है। यहाँ आने वाले पर्यटक समुद्र की ठंडी हवा और प्राकृतिक वातावरण का आनंद लेते हैं।

समुद्र तट पर रहने वाले मछुआरों का जीवन भी उडुपि की संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। सुबह-सुबह जब मछुआरे समुद्र में मछली पकड़ने के लिए निकलते हैं और उनके गीत हवा में गूँजते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे समुद्र और मनुष्य के बीच एक गहरा संबंध स्थापित हो गया हो। यह दृश्य हमें प्रकृति और मानव जीवन के बीच के सामंजस्य को दर्शाता है।

उडुपि की प्राकृतिक सुंदरता केवल समुद्र तक सीमित नहीं है। यह जिला पश्चिमी घाट की हरियाली से भी सुसज्जित है। यहाँ के **पहाड़, झरने और**

नदियाँ इस क्षेत्र की सुंदरता को और अधिक बढ़ाती हैं। विशेष रूप से मानसून के समय उडुपि का दृश्य अत्यंत अद्भुत हो जाता है। जब बादल पहाड़ियों पर उतर आते हैं और झरने ऊँचाई से गिरते हुए दिखाई देते हैं, तो ऐसा लगता है मानो प्रकृति ने स्वयं इस भूमि को सजाया हो।

यहाँ के **नारियल के वृक्ष, सुपारी के बागान और काजू के पेड़** उडुपि की प्राकृतिक पहचान है। इन पेड़ों से निकलने वाली सुगंध वातावरण को और भी सुखद बना देती है। हरे-भरे खेत और पेड़ों से घिरे गाँव इस जिले की ग्रामीण सुंदरता को दर्शाते हैं। उडुपि की भूमि अत्यंत उपजाऊ है, इसलिए यहाँ कृषि भी बहुत महत्वपूर्ण है।

उडुपि की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि और समुद्री संसाधनों पर आधारित है। यहाँ के किसान धान, नारियल, सुपारी और काजू की खेती

करते हैं। इसके साथ ही समुद्र से मिलने वाली मछलियाँ और अन्य समुद्री उत्पाद भी यहाँ की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उडुपि के लोग मेहनती और प्रकृति प्रेमी होते हैं। वे प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन जीने में विश्वास रखते हैं। यही कारण है कि यह जिला प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

उडुपि की एक और विशेषता इसकी सांस्कृतिक विविधता है। यहाँ विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। यहाँ मंदिरों के साथ-साथ चर्च, मस्जिदें और जैन मंदिर भी देखने को मिलते हैं। यह दर्शाता है कि उडुपि केवल एक धार्मिक स्थान नहीं, बल्कि सामाजिक सद्भाव और एकता का प्रतीक भी है।

उडुपि की लोक संस्कृति भी अत्यंत समृद्ध है। यहाँ का प्रसिद्ध लोकनाट्य यक्षगान पूरे कर्नाटक में लोकप्रिय है। यक्षगान में कलाकार रंग-बिरंगे वस्त्र पहनकर और मुखौटे लगाकर पौराणिक कथाओं का मंचन करते हैं। यह नाट्य शैली संगीत, नृत्य और अभिनय का सुंदर मिश्रण है। यक्षगान केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह हमारी परंपराओं और पौराणिक कथाओं को जीवित रखने का माध्यम भी है।

इसके अलावा उडुपि में भूत कोला नामक पारंपरिक अनुष्ठान भी प्रसिद्ध है। यह एक धार्मिक और सांस्कृतिक नृत्य परंपरा है जिसमें कलाकार विशेष वेशभूषा धारण कर देवताओं और आत्माओं का रूप धारण करते हैं। यह अनुष्ठान स्थानीय लोगों की आस्था और संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

उडुपि शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में भी काफी महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ कई शिक्षण संस्थान और विद्यालय हैं जहाँ विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस जिले ने अनेक विद्वानों, वैज्ञानिकों और समाजसेवियों को जन्म दिया है। विशेष रूप से यह जानकर गर्व होता है कि भारत के प्रसिद्ध सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक सिंडिकेट बैंक की स्थापना भी इसी पवित्र भूमि से हुई थी। यह तथ्य उडुपि की आर्थिक और ऐतिहासिक महत्ता को दर्शाता है।

उडुपि के पास स्थित पाजका क्षेत्र भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही महान संत माध्वाचार्य का जन्मस्थान है। यह स्थान आज भी श्रद्धालुओं के लिए एक पवित्र तीर्थस्थल माना जाता है। यहाँ आने वाले लोग संत माध्वाचार्य के जीवन और उनके द्वारा दिए गए आध्यात्मिक संदेशों के बारे में जान सकते हैं।

उडुपि के हस्तशिल्प और पारंपरिक कलाएँ भी बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ के कारीगर सुंदर कलाकृतियाँ और सजावटी वस्तुएँ बनाते हैं, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाती हैं। इसके अलावा यहाँ के संग्रहालय और ऐतिहासिक स्थल भी इस जिले के गौरवशाली इतिहास की झलक प्रस्तुत करते हैं।

आज के आधुनिक युग में मनुष्य तकनीक और भौतिक सुख-सुविधाओं में इतना व्यस्त हो गया है कि वह प्रकृति और शांति से दूर होता जा रहा है। ऐसे समय में उडुपि जैसे स्थान हमें यह याद दिलाते हैं कि सच्ची शांति प्रकृति और आध्यात्मिकता में ही मिलती है। यहाँ की स्वच्छ हवा, शांत समुद्र, हरी-भरी पहाड़ियाँ और मंदिरों का आध्यात्मिक वातावरण मनुष्य को आंतरिक शांति प्रदान करते हैं।

उडुपि केवल एक पर्यटन स्थल नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा स्थान है जहाँ आकर मनुष्य स्वयं को प्रकृति के करीब महसूस करता है। यहाँ का वातावरण मन को शांति देता है और जीवन में नई ऊर्जा भर देता है। यही कारण है कि यहाँ आने वाले पर्यटक बार-बार इस स्थान की ओर आकर्षित होते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि उडुपि जिला कर्नाटक का गौरव और भारत की सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक धरोहर का अनमोल रत्न है। यहाँ का

समुद्र, पहाड़, मंदिर, परंपराएँ और यहाँ के लोग मिलकर इस जिले को एक सुंदर कविता का रूप देते हैं। यह कविता निरंतर अपनी मधुर धुन से हर आगंतुक को मंत्रमुग्ध करती रहती है।

यदि भारत को एक जीवंत संस्कृति का प्रतीक माना जाए, तो उडुपि उसका पवित्र हृदय है -

जहाँ प्रकृति मुस्कुराती है, भक्ति गूँजती है और इतिहास आज भी साँस लेता है।

पंडित जी और डिजिटल दक्षिणा

हास्यास्पद लेख

मोहित सिंह
प्रबंधक
अध्ययन व विकास केंद्र,
कोलकाता

बनारस के एक मोहल्ले में पंडित चिंतानंद जी रहते थे। पंडित जी विद्वान तो थे, पर तकनीक के मामले में उनका हाथ तंग नहीं, बल्कि अपंग था। उन्हें लगता था कि स्मार्टफोन के अंदर छोटे-छोटे जिन्न रहते हैं जो उंगली चलाने पर नाचते हैं।

एक दिन मोहल्ले के सबसे कंजूस व्यक्ति, लाला धनीराम ने अपने नए घर का मुहूर्त रखवाया। लाला जी इतने कंजूस थे कि चाय में मक्खी गिर जाए तो मक्खी चूसकर फेंकते थे। पूजा संपन्न हुई, मंत्रों की गूंज खत्म हुई, अब बारी आई दक्षिणा की।

पंडित जी ने अपनी झोली फैलाई। लाला जी मुस्कुराए और बोले, "पंडित जी, जमाना बदल गया है। अब कैश का झंझट कौन रखे? मैंने आपकी दक्षिणा डिजिटल कर दी है।

पंडित जी चकराए, "डिजिटल? क्या यह किसी विशेष प्रकार का मिष्ठान है लाला जी?"

लाला जी ने शान से अपना मोबाइल निकाला और बोले, "अरे नहीं महाराज! मैंने आपके नंबर पर पेटीएम कर दिया है। पूरे 501 रुपये। अब सीधा आपके बैंक में छन-छन करेगा।

पंडित जी ने अपना पुराना नोकिया 1100 निकाला। उसमें कोई छन-छन नहीं हुई। पंडित जी बोले, "लाला जी, इसमें तो केवल नेटवर्क की डंडियां नाच रही हैं, लक्ष्मी जी का तो आगमन नहीं हुआ।

लाला जी ने उन्हें समझाया कि पैसे हवा में हैं और थोड़ी देर में पहुंच जाएंगे। पंडित जी भारी मन से घर लौट आए। रास्ते भर वो आसमान में देखते रहे कि शायद कहीं से 501 रुपये उड़ते हुए आ रहे हों।

अगले दिन लाला जी फिर मंदिर पहुंचे। पंडित जी को देखते ही बोले, "महाराज, आशीर्वाद दीजिए! कल से व्यापार में बड़ी बरकत हो रही है।

पंडित जी ने गंभीर होकर कहा, "आशीर्वाद तो डिजिटल दे दिया है लाला जी, कल सुबह तक हवा के रास्ते आप तक पहुंच जाएगा।

लाला जी हैरान होकर बोले, "हवा के रास्ते? महाराज, हाथ सिर पर रखकर दीजिए न!"

पंडित जी मुस्कुराकर बोले, "अरे लाला जी, जब दक्षिणा बादलों के रास्ते बैंक जा सकती है, तो आशीर्वाद भी सैटेलाइट से सीधा आपके सिर पर डाउनलोड हो जाएगा। बस अपना वाई-फाई (Wi-Fi) ऑन रखिएगा, वरना आशीर्वाद किसी और के खाते में क्रेडिट हो सकता है!"

पूरा मंदिर ठहाकों से गूंज उठा और लाला जी ने तुरंत जेब से निकालकर करारे नोट पंडित जी के चरणों में समर्पित कर दिए।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

अर्थ: हमारा कर्तव्य सिर्फ कर्म करने में है, कर्मफल पर नहीं, इसलिए कोई भी कर्म फल के लिए नहीं किया जाना चाहिए । अत: कर्मफल पर ध्यान रखें और अकर्मण्यता में आसक्त न बने।

परिवर्तन

कविता

अस्मिता द्विवेदी
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

परिवर्तन एक अटल नियम है जो प्रकृति हमें सिखाती है,
जो परिवर्तन स्वीकार करे, विजय उसकी हो जाती है ॥

जैसे प्रतीक्षारत ये धरती, बारिश की आस संजोती है,
कण कण के सूख जाने पर भी आस नहीं खोती है ॥

निश्चित समय के बाद वर्षा का आना तय होता है,
बारिश के आ जाने से हर सूखे का अंत होता है ॥

वर्षा ऋतु के आगमन पर काले मेघा आते हैं,
सूखी पड़ी वसुंधरा पर निर्मल जल बरसाते हैं ॥

मेघों की वर्षा से यह सृष्टि तृप्त हो जाती है,
मुरझाई सी यह प्रकृति पुन:रंगों से सज जाती है ॥

भांति भांति के भ्रमर आकर गीत नए गाते हैं,
प्रकृति की गोद में फिर पुष्प नये खिल जाते हैं ॥

देख वसुधा का यह यौवन नई तरंगे आती हैं,
हर सूखे के बाद हरितिमा नई उमंगे लाती है ॥

वैसे ही जीवन का चक्र निरंतर चलता जाता है ,
सुख के बाद दुख और दुख के बाद सुख आ जाता है ॥

परिवर्तन के इस नियम को जीवन में अपनाना है ,
भविष्य की परवाह में वर्तमान को नहीं गंवाना है ॥

व्यर्थ के चिंतन में न अपनी ऊर्जा बर्बाद करें,
कल की चिंता कल पर छोड़े,आज को स्वीकार करें॥

नाRi

कविता

संजीव कुमार वर्मा
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे

सूरज के जगने से पहले
उसकी आंखे खुल जाती हैं,
क़दम पड़े जो धरा पर उसके
घड़ी की सुइयाँ हिल जाती हैं।

एहसास कराती हर टिक-टिक पर
आख़िर, कैसी ज़िम्मेदारी है,
चूल्हे की आग में हर दिन तपना
उल्लास नहीं, लाचारी है।

घर की चौखट पर घूँघट काढ़े
अपनों की राह वो तकती है,
है दर्द बहुत घुटनों में उसके
पर कभी नहीं वह थकती है।

सबने तो देखा है मोह तेरा
तेरा रोष कहाँ किसने देखा,
रावण भी थर-थर काँपेगा यदि
खींचे स्वयं तू, लक्ष्मण रेखा।

पूजा थाली को ढाल बनाकर
आरती की लौ मशाल बना,
मजबूरी की ज़ंजीरें पिघलाकर
लक्ष्मीबाई की तलवार बना।

पुरुष का पौरुष, भ्रम है केवल
ताक़त जिसको वह कहता है,
स्वयं संरक्षण पाने की ख़ातिर
तेरी कोख में ख़ुद वो रहता है।

तू नज़र झुकाए बैठी है
जब है प्रथम अधिकार तेरा,
अरे आंख मिला के कह दे जग से
पूरा है, यह संसार तेरा।

होगा माई का लाल कोई
वह लाल भी है एक लाल तेरा,
बाँध ले पूरी दुनिया आँचल में
ऐसा अद्भुत किरदार तेरा।

एजेंटिक एआई: स्मार्ट बैंकिंग की अगली छलांग

आलेख

मुकेश कुमार राय
वरिष्ठ प्रबंधक एवं संकाय
सीसीओई, गुरुग्राम

प्रस्तावना

आज के युग में जहाँ गति, सटीकता और अनुकूलनशीलता प्रतिस्पर्धात्मकता को परिभाषित करती हैं, पारंपरिक स्वचालन अब लाभ बनाए रखने के लिए पर्याप्त नहीं है। बैंक और फिनटेक कंपनियाँ तात्कालिक सेवाएँ प्रदान करने, धोखाधड़ी से बचाव को मजबूत करने, तथा निरंतर बदलते विनियमों का पालन करने के दबाव में हैं। इन मांगों को पूरा करने के लिए क्रमिक डिजिटल उन्नयन से अधिक की आवश्यकता है, एक संरचनात्मक परिवर्तन आवश्यक है।

यहीं एजेंटिक एआई (Agentic AI) की भूमिका उभरती है।

पारंपरिक चैटबॉट्स या नियम-आधारित प्रणालियों के विपरीत, एजेंटिक एआई एजेंट स्वतंत्र रूप से तर्क करते हैं, योजना बनाते हैं और कार्य करते हैं, जो प्रभावी ढंग से 24/7 उपलब्ध **'डिजिटल बैंकरों'** के रूप में कार्य करते हैं। प्रारंभिक अपनाने वाले पहले ही इन प्रणालियों का उपयोग प्रक्रियाओं को संचालित करने, ग्राहक जुड़ाव को वैयक्तिकृत करने तथा जोखिम प्रबंधन को मजबूत करने के लिए कर रहे हैं, जिससे मानव-चालित कार्यप्रवाहों से असमर्थ दक्षताएं अनलॉक हो रही हैं।

वित्तीय क्षेत्र में एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के जिम्मेदार और नैतिक उपयोग को बढ़ावा देने के लिए, **भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा FREE-AI समिति** का गठन किया गया था। वित्तीय क्षेत्र में एआई के वर्तमान उपयोग और इसकी चुनौतियों को समझने के लिए समिति ने 7 सूत्र तैयार किए हैं, जो वित्तीय क्षेत्र में एआई को अपनाने के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में कार्य करते हैं।

स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने अगस्त 2025 में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जिम्मेदार और नैतिक सशक्तिकरण के लिए फ्रेमवर्क (FREE-AI) रिपोर्ट

एआई एजेंट्स, असिस्टेंस और बॉट्स के बीच अंतर को समझना

जैसे-जैसे बैंक अपने कामकाज को आधुनिक बनाने के लिए एआई (AI) का रुख कर रहे हैं, इन तकनीकों के बीच के बारीक अंतर को समझना जरूरी हो गया है, क्योंकि अक्सर इन्हें एक ही समझ लिया जाता है।

- **बॉट्स :** यह सबसे बुनियादी स्तर है। ये पूरी तरह से नियमों पर आधारित होते हैं और केवल दोहराव वाले काम (जैसे बैलेंस चेक या पासवर्ड बदलना) ही कर सकते हैं। इनकी क्षमता सीमित होती है।
- **एआई असिस्टेंस :** ये बॉट्स से एक कदम आगे हैं। ये अधिक समझदार होते हैं और डेटा के आधार पर सुझाव या अंतर्दृष्टि (insights) दे सकते हैं। इनका काम मानवीय निर्णय लेने की क्षमता को खत्म करना नहीं, बल्कि उसे सहारा देना और आसान बनाना है।
- **एआई एजेंट्स :** यह एआई का सबसे उन्नत रूप है। ये स्वायत्त सिस्टम हैं जो किसी भी काम को शुरू से अंत तक खुद ही पूरा करने में सक्षम हैं। ये पिछले परिणामों से सीखते हैं और परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढाल लेते हैं, जो इन्हें सही मायने में एक "डिजिटल बैंकर" बनाता है।

मापदंड	एआई एजेंट	एआई सहायक	बॉट
स्वायत्तता	न्यूनतम मानवीय हस्तक्षेप के साथ स्वतंत्र रूप से काम करता है; कई चरणों वाले वर्कफ्लो को शुरू और पूरा कर सकता है।	मनुष्यों के साथ काम करता है, सुझाव और आंशिक स्वचालन प्रदान करता है।	ट्रिगर होने पर ही पहले से परिभाषित कार्यों को निष्पादित करता है।
अनुकूलनशीलता	परिणामों से लगातार सीखता है और समय के साथ रणनीतियों को अनुकूलित करता है।	सीमित अनुकूलन; फीडबैक के आधार पर सुझावों को बेहतर बना सकता है।	कोई सीख नहीं; जब तक पुनः प्रोग्राम न किया जाए तब तक वही क्रियाएं करता है।
ऋण प्रसंस्करण में उदाहरण	आवेदन से लेकर संवितरण तक ऋण अनुमोदन का पूर्ण प्रबंधन करता है, जिसमें अनुपालन जांच और ऋण-पश्चात निगरानी शामिल है।	जोखिम रिपोर्ट तैयार करता है, संभावित मुद्दों को उजागर करता है, और मानवीय समीक्षा के लिए फ्लैग भरता है।	रिपोर्ट्स भेजता है, ऋण स्थिति अपडेट करता है, या निश्चित पात्रता मानदंडों की जांच करता है।

बैंकिंग में पारंपरिक एआई (Traditional AI) बनाम एजेंटिक एआई (Agentic AI)

बैंकिंग में पारंपरिक एआई एक कुशल सहायक की तरह काम करता है, यह ट्रिगर होने पर विशिष्ट कार्यों को निष्पादित करता है, लेकिन निर्णयों के लिए इसे मानवीय देखरेख की आवश्यकता होती है। जैसे-जैसे तत्काल और व्यक्तिगत बैंकिंग के लिए ग्राहकों की मांग बढ़ रही है, इन प्रतिक्रियाशील (reactive) प्रणालियों की सीमाएं सामने आने लगी हैं।

एजेंटिक एआई स्वतंत्र रूप से काम करके खेल को पूरी तरह बदल देता है। यह मानवीय हस्तक्षेप के बिना ऋण स्वीकृति से लेकर अनुपालन रिपोर्टिंग (compliance reporting) तक पूरे वर्कफ्लो को पूरा करता है। यह स्वायत्त दृष्टिकोण वह गति और चपलता प्रदान करता है जिसकी आधुनिक बैंकिंग को आवश्यकता है।

बैंकिंग में एआई एजेंट्स: उच्च-प्रभाव वाले उपयोग के मामले:

प्रोडक्ट मैनेजमेंट

- **इंस्टेंट लोन अप्रूवल:** एआई एजेंट आंतरिक सिस्टम, क्रेडिट ब्यूरो और वैकल्पिक डेटा स्रोतों से जानकारी एकत्र करके कुछ ही सेकंड में पात्रता का निर्णय दे सकते हैं, जिससे कई दिनों की प्रक्रिया लगभग तात्कालिक अनुभव में बदल जाती है।
- **स्मार्ट कस्टमर सपोर्ट:** एजेंट सभी चैनलों पर रोज़मर्रा की पूछताछ, कार्ड विवादों और लेनदेन से जुड़ी स्पष्टताओं को स्वचालित रूप से संभाल सकते हैं, 24/7 सहायता प्रदान करते हुए कॉल सेंटर पर निर्भरता को कम करते हैं।
- **पर्सनलाइज़्ड क्रॉस-सेलिंग:** ग्राहक व्यवहार और लेनदेन प्रवाह का रियल-टाइम विश्लेषण करके, एजेंट प्रसंगानुकूल और सचमुच प्रासंगिक उत्पादों की सिफारिश कर सकते हैं, जिससे रूपांतरण दर बढ़ती है और ग्राहक निष्ठा मजबूत होती है।

जोखिम एवं अनुपालन

- **प्रोएक्टिव धोखाधड़ी का पता लगाना:** निरंतर, वास्तविक समय निगरानी एजेंटों को विसंगतियों को तुरंत चिह्नित करने की अनुमति देती है, जिससे धोखाधड़ी हानि में भारी कमी आती है और ग्राहक विश्वास मजबूत होता है।
- **स्वचालित अनुपालन रिपोर्टिंग:** एजेंट बुद्धिमानी से डेटा एकत्रित और सत्यापित करके नियामकीय प्रस्तुतियाँ स्वायत्त रूप से तैयार कर सकते हैं, सटीकता और ऑडिट तैयारी सुनिश्चित करते हुए।
- **एआई-संचालित क्रेडिट जोखिम स्कोरिंग:** नकदी प्रवाह और डिजिटल पदचिह्नों जैसे वैकल्पिक डेटासेट का उपयोग करके, एजेंट एमएसएमई और नए-से-क्रेडिट ग्राहकों के लिए ऋण मूल्यांकन कर सकते हैं, पहुँच बढ़ाते हुए पोर्टफोलियो गुणवत्ता को मजबूत करते हैं।

संचालन

- **स्वायत्त भुगतान समायोजन:** एजेंट बिना मैनुअल प्रयास के लेनदेन असंगतियों की पहचान, मिलान और समापन कर सकते हैं, जिससे निपटान चक्र तेज होता है और सटीकता बढ़ती है।
- **तेज़ ऑनबोर्डिंग:** एआई-संचालित दस्तावेज़ जाँच और केवाईसी सत्यापन खाता खोलने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करते हैं, ड्रॉप-ऑफ दर कम करते हुए ऑनबोर्डिंग लागत घटाते हैं।
- **कर्मचारियों के लिए एआई हेल्पडेस्क:** एजेंट सामान्य एचआर और आईटी अनुरोधों (जैसे पासवर्ड रीसेट) को तुरंत हल कर सकते हैं, कर्मचारी समय मुक्त करते हुए आंतरिक उत्पादकता बढ़ाते हैं।

निष्कर्ष

एजेंटिक एआई का उदय स्वचालन का मात्र विकास नहीं दर्शाता, बल्कि यह बैंकिंग में सच्ची स्वायत्तता की ओर संरचनात्मक छलांग का प्रतिनिधित्व करता है। ये प्रणालियाँ केवल डिजिटल उपकरणों के रूप में नहीं कार्य करतीं, अपितु जटिल कार्यप्रवाहों को गति, अनुकूल नशीलता और सटीकता के साथ प्रबंधित करने में सक्षम बुद्धिमान संचालक के रूप में कार्य करती हैं।

वर्ष 2025 और उसके बाद, एजेंटिक एआई एक निर्णायक विभेदक के रूप में उभरेगा। इसे अपनाने वाली संस्थाएँ अति-वैयक्तिकृत ग्राहक जुड़ाव, मजबूत जोखिम एवं अनुपालन ढांचे, तथा बड़े पैमाने पर संचालन लचीलापन अनलॉक करेंगी। दिशा स्पष्ट है: बैंकिंग का भविष्य केवल स्वचालन से परिभाषित नहीं होगा, अपितु स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाली बुद्धिमत्ता से निर्धारित होगा। जो संस्थाएँ शीघ्र कदम उठाएँगी, वे प्रतिस्पर्धी परिदृश्य को आकार देंगी; जो विलंब करेंगी, वे पीछे रह जाएँगी।

8 हाथ

लघु कथा

राजीव कुमार
ग्राहक सेवा सहयोगी
नीमवाला शाखा

एक दिन मैं अपने परिवार के साथ पूजा कर रहा था। तभी मेरी लड़की प्रांशी ने मुझसे पूछा - पापा माता रानी के 8 हाथ क्यों होते हैं। मैने कहा- बच्चे माता के हाथ उनकी शक्ति के प्रतीक होते हैं और उनके द्वारा किए जाने वाले अलग-अलग कामों को दर्शाते हैं। तभी प्रांशी फटाक से बोली- 'बिलकुल मम्मी की तरह है'।

मैंने तभी प्रांशी को घूर कर देखा और बोला- 'तू अपना मुँह बंद कर और पूजा पर ध्यान दे।' डांट सुनकर प्रांशी उदास हो गेयी। प्रांशी को उदास होते देख दादा जी ने कहा- 'अच्छा! प्रांशी बता तेरी मम्मी माता रानी के जैसे, कैसे हुई।'

प्रांशी ने अपनी मम्मी की तरफ देखा और मुस्कराते हुए बोलना शुरु किया। 'दादा जी- मेरी मम्मी के पास माता रानी की तरह 8 हाथ हैं'। दादा जी ने पूछा- 'वो भला कैसे?' प्रांशी ने बताना शुरु किया - 'पहले हाथ का इस्तेमाल वो सुबह सबसे पहले उठ कर अलार्म बन्द करने के लिए करती है। वो फटाफट नहाकर, हमारे कन्हा जी को नहलाती हैं। पर तभी बीच में दादा जी आप आवाज लगा देते हो- मन्जु! जरा चाय लेकर आना।'

'पहले काम को करते-करते मम्मी दूसरे हाथ से चुल्हे पर चाय चढ़ा देती हैं। उसी दौरान दादी जी कि आवाज आती है- बच्चों को कब उठाओगी, इन्हें स्कूल नहीं जाना। तब मम्मी का तीसरा हाथ हमें तैयार करने, हमारा टिफिन तैयार करने में व्यस्त हो जाता है। पर तभी किसी के रोने कि आवाज आती है- वो और कोई नहीं मेरा एक साल को छोटा भाई- नीलाशं है। तभी मम्मी का चौथा हाथ भाई को उठाने, उसे दूध पिलाने में व्यस्त हो जाता है।'

'तभी पापा भी नहाकर आ गये और आप देखो वो खुद अपने कपड़े भी नहीं निकाल सकते। वो भी मम्मी को आवाज लगा देते है, तभी पाँचवाँ हाथ पापा का सामान निकालने में व्यस्त हो जाता है। उसके बाद छटा हाथ सबके लिए खाना बनाने में लग जाता है। फिर सांतवां हाथ हमें स्कूल बस में चढ़ाने, कपडे धोने, बर्तन माँजने में व्यस्त हो जाता है।'

'आठवें हाथ को वो माँ जी के घुटने पर तेल लगाने, भाई को नहलाने में व्यस्त करती हैं और दादा जी यहीं काम दिन भर चलता रहता है और रात में भी ऐसे ही अनगिनत कामों में व्यस्त हो जाती है। मैं तो कहूंगी मम्मी तो माता से ज्यादा काम करती हैं, परन्तु दादा जी- मम्मी के खुद के लिए कभी समय बचता ही नहीं।'

'प्रांशी की बात सुन कर बिल्कुल शांति हो गयी थी। दादा जी ने प्रांशी को शाबाशी दी और बताया कि क्यों माँ को भगवान का दर्जा दिया गया है। कुछ देर बाद प्रांशी बोली दादा जी- 'मैं मम्मी के एक खास हाथ के बारे में बताना तो भूल ही गयी।' 'दादा जी ने हैरानी से पूछा' 'कौन सा प्रांशी?' प्रांशी मुस्करा कर बोली- 'दादा जी जिससे हमारी पिटाई होती है।' ये बात सुन कर सब हंसने लगे।'

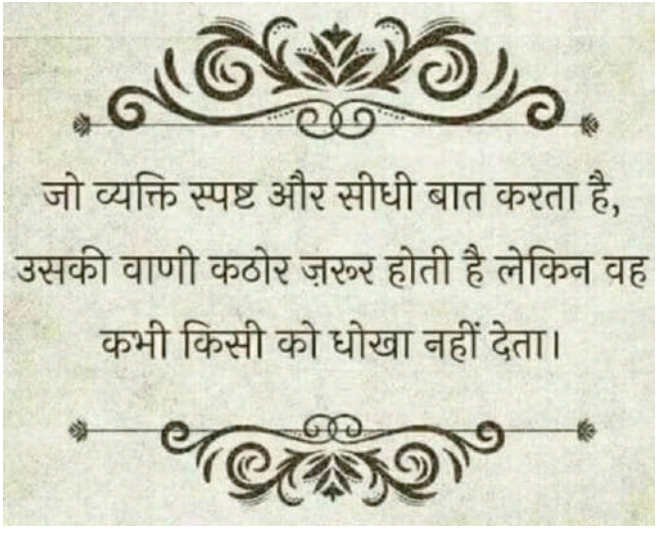

भारतीय शादियों का 'बुफ़े' कुरुक्षेत्र

हास्यास्पद लेख

आलोक पाठक
वरिष्ठ प्रबंधक
केंद्रीय अध्ययन एवं विकास केंद्र, रांची

भारतीय शादियों में दो ही चीज़ें सबसे महत्वपूर्ण होती हैं—एक वो दूल्हा-दुल्हन जो स्टेज पर फ़्लड-लाइट्स की गर्मी में 'तंदूरी चिकन' की तरह पक रहे होते हैं, और दूसरा वह 'बुफ़े काउंटर', जहाँ आम नागरिक अपनी सभ्यता की परतें उतारकर युद्ध के मैदान में उतरता है।

जैसे ही लाउडस्पीकर पर घोषणा होती है कि 'भोजन शुरू हो चुका है', पंडाल में एक अजीब सी बेचैनी फैल जाती है। लोग जो अब तक सोफे पर बैठकर राजनीति और स्टॉक मार्केट की बातें कर रहे थे, अचानक उनकी आँखों में एक शिकारी वाली चमक आ जाती है। यह वो क्षण है जब सूट-बूट पहने सभ्य सज्जन भी अपनी प्लेट को ढ़ाल बनाकर 'पनीर-ए-खास' की कड़ाही की ओर ऐसे दौड़ते हैं, मानो वहीं से मोक्ष का द्वार खुलता हो।

प्लेट का आर्किटेक्चर: एक इंजीनियरिंग चमत्कार

एक औसत भारतीय की शादी की प्लेट 'सिविल इंजीनियरिंग' का एक उत्कृष्ट और डरावना नमूना होती है। चुनौती यह है कि प्लेट का क्षेत्रफल सीमित है और व्यंजन असीमित। यहाँ हर व्यक्ति एक वास्तुकार बन जाता है। प्लेट के एक कोने में 'चाऊमीन' का पहाड़ बनाया जाता है, जो एक सुरक्षा दीवार का काम करता है ताकि पीछे से आती हुई 'दाल मखनी' की बाढ़ 'गुलाब जामुन' के मीठे द्वीप को न डुबो दे। प्लेट पर जगह बनाने की जद्दोजहद ऐसी होती है कि लोग सलाद के पत्तों को केवल 'बाउंड्री वॉल' की तरह इस्तेमाल करते हैं।

विडंबना देखिए, जिस व्यक्ति ने जीवन भर सादा भोजन किया है, वह भी यहाँ आकर 'फ्यूजन कुजीन' का आविष्कार कर डालता है। मैंने अपनी आँखों से लोगों को 'मंचूरियन' की ग्रेवी के साथ 'मिस्सी रोटी' खाते देखा है। यह एक ऐसा दृश्य है जिसे देखकर शायद चीन और भारत के राजनयिक संबंध खतरे में पड़ जाएं।

सलाद काउंटर का सन्नाटा और रायते का फैलाना

बुफ़े के मैदान में अगर कहीं शांति और सन्नाटा मिलता है, तो वह है 'सलाद काउंटर'। यहाँ सजे हुई गाजर, मूली और खीरे ऐसे उदास दिखते हैं जैसे किसी पार्टी में बिना बुलाए आए मेहमान। लोग यहाँ से ऐसे गुज़रते हैं जैसे यह कोई प्रतिबंधित क्षेत्र हो। कोई बहुत ही 'डाइट कॉन्शियस' प्राणी अगर वहाँ रुक भी जाए, तो पीछे से आती भीड़ उसे ऐसी नफरत भरी निगाहों से देखती है मानो उसने कोई अपराध कर दिया हो।

इसके ठीक विपरीत 'रायता' काउंटर पर एक अलग ही संघर्ष चल रहा होता है। रायते का कटोरा अक्सर इतना बड़ा होता है कि उसमें पूरा मोहल्ला डूब जाए। लेकिन समस्या यह है कि रायता डालने वाला 'चमचा' हमेशा गायब रहता है या फिर वह उस दही के महासागर की गहराई में कहीं समाधि ले चुका होता है। लोग अपनी प्लेट झुकाकर डायरेक्ट रायता डालने की कोशिश करते हैं, और यहीं से 'रायता फैलने' के मुहावरे का जन्म होता है। सफेद कुर्ते पर बूंदी वाले रायते के छींटे भारतीय शादी का एक 'अनिवार्य पदक' हैं।

अड़ियल रिश्तेदार और 'लाइव कमेंट्री' दल

हर बुफ़े कुरुक्षेत्र में कुछ ऐसे 'विशेषज्ञ' होते हैं जिनका काम खाना नहीं, बल्कि खाने की बुराई करना होता है। ये वे लोग हैं जो अपनी प्लेट में तीन तरह की सब्ज़ियाँ और पाँच पूड़ियाँ दबाए खड़े होंगे, लेकिन उनकी ज़बान पर एक ही वाक्य होगा— "पिछली बार पाठक जी की लड़की की शादी में नमक इससे बेहतर था।''

ये लोग बुफ़े काउंटर के पास खड़े होकर 'लाइव कमेंट्री' करते हैं। "अरे भाई साहब, भिंडी थोड़ी कच्ची रह गई है" या "लगता है हलवाई ने घी में कंजूसी की है।" इनकी आलोचना के बावजूद, इनकी प्लेट सबसे ऊँची भरी होती है। ये लोग खाने को चखते नहीं हैं, उसका 'पोस्टमार्टम' करते हैं। जब ये रसगुल्ले को चम्मच से दबाकर उसकी चाशनी की सघनता (Density) चेक करते हैं, तो लगता है जैसे किसी लैब में रॉकेट फ्यूल का परीक्षण हो रहा हो।

नॉन-वेज का 'सीक्रेट मिशन'

अगर शादी में मांसाहार (Non-Veg) का काउंटर है, तो वहाँ का दृश्य किसी 'खुफिया मिशन' जैसा होता है। शाकाहारी और मांसाहारी काउंटरों के बीच की दूरी को लोग ऐसे पार करते हैं जैसे भारत-पाकिस्तान का बॉर्डर। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो घर में कट्टर शाकाहारी होते हैं, लेकिन यहाँ प्लेट को तिरछा करके 'फिश फ्राई' के काउंटर की ओर सरक जाते हैं। उनकी नज़रें लगातार चारों तरफ घूमती रहती हैं कि कहीं कोई परिचित उन्हें इस 'पाप' को करते देख न ले। यह किसी जासूसी फिल्म के क्लाइमेक्स से कम रोमांचक नहीं होता।

आइसक्रीम का अंतिम चरण

जब पेट अपनी पूरी क्षमता से ऊपर भर चुका होता है और शर्ट का आखिरी बटन 'इस्तीफा' देने की धमकी दे रहा होता है, तभी दूर से आवाज़ आती है— "भाई साहब, वनीला खत्म होने वाली है!" यह सुनते ही जनता की मृतप्राय चेतना फिर से जाग उठती है।

आइसक्रीम काउंटर पर जो भगदड़ मचती है, उसे देखकर सुनामी भी अपना रास्ता बदल ले। लोग पिघलती हुई आइसक्रीम के कपों पर ऐसे टूटते हैं जैसे रेगिस्तान में प्यासे को पानी मिल गया हो। बच्चे यहाँ सबसे खतरनाक योद्धा साबित होते हैं; वे बड़ों के पैरों के बीच से निकलकर कप हथिया लेते हैं। यहाँ न कोई बड़ा है, न कोई छोटा, बस सबके हाथ में एक लकड़ी की चम्मच है और आँखों में हिम क्रीम की हवस।

युद्ध के बाद का सन्नाटा

जैसे-जैसे रात बीतती है, कुरुक्षेत्र का मैदान शांत होने लगता है। प्लेटें अब 'डस्टबिन' के पास ढेर हो चुकी होती हैं। लोग अब सोफों पर 'अर्ध-मूर्छित' अवस्था में पड़े होते हैं। किसी का पेट फूल चुका है, तो कोई सौंफ और मिश्री के डिब्बे पर अंतिम हमला बोल रहा है।

शादी से बाहर निकलते वक्त, वही लोग जिन्होंने पनीर के लिए तलवारें भांजी थीं, एक-दूसरे से कहते हैं— "यार, खाना कुछ खास नहीं था, बस ठीक-ठाक ही था।" और फिर, अपने भारी पेट के साथ वे घर की ओर रुख करते हैं, अगले हफ्ते होने वाली दूसरी शादी के 'कुरुक्षेत्र' की तैयारी करने के लिए।

भारतीय शादियों का यह बुफ़े दरअसल भोजन नहीं, एक 'अनुभव' है। यह हमारी उस जीजीविषा (Will to survive) का प्रमाण है कि हम चाहे कितने भी अमीर या गरीब क्यों न हों, मुफ्त के 'स्टार्टर' और 'पनीर' के लिए हम अपनी जान की बाज़ी लगा सकते हैं।

Internal

प्रेरक प्रसंग

सकारात्मक सोच का प्रभाव

सूरज और मोहित दो दोस्त थे। दोनों में बहुत गहरी दोस्ती थी। दोनों दोस्तों के स्वभाव लगभग समान थे। लेकिन दोनों दोस्तों में एक बात का अंतर था। सूरज अपनी सकारात्मक सोच के लिए जाना जाता था। जबकि, मोहित का नजरिया किसी भी पहलू के नकारात्मक कारणों पर होता था। जिसके कारण उसे हर जगह मुश्किलों का सामना करना पड़ता था।

सूरज और मोहित की परीक्षा होने वाली थी। सूरज की तैयारी अच्छी थी। वह पढ़ें हुए अध्याय का बार-बार रिवीजन कर रहा था। जबकि मोहित हमेशा कोई नया अध्याय पढ़ने की कोशिश करता था। फिर एकाएक उसके दिमाग में बात आती कि इस अध्याय से प्रश्न नहीं आ सकता और फिर उस अध्याय को छोड़कर किसी और अध्याय को पढ़ने लगता। इस तरह से उसकी किसी भी अध्याय पर पकड़ मजबूत नहीं थी।

एक दिन सूरज ने मोहित को समझाया कि अब हमारे पास अधिक समय नहीं हैं। जिस अध्याय पर तुम्हारी पकड़ मजबूत हैं उसी को बार-बार पढ़ो। जिससे तुम्हारी समझ अच्छी हो जाएगी। लेकिन, मोहित हमेशा यही सोचता था कि इस अध्याय से प्रश्न नहीं आया तो। परीक्षा हुई, परीक्षा हाल में पेपर देखकर मोहित का सिर चकरा गया। प्रश्नपत्र में छोड़े हुए अध्याय में से कई प्रश्न पूछे गए थे। जिसे मोहित ने अच्छे से नहीं पढ़ा था। इस तरह से उसका पेपर अच्छा नहीं हुआ।

सीख - सकारात्मक सोच के साथ लिया गया फैसला सदैव सफलता की ओर ले जाता है।

-स्रोत : मुक्त ज्ञान कोश विकिपीडिया...

समसामयिक आर्थिक एवं बैंकिंग विषयों में डिजिटल बैंकिंग की बढ़ती भूमिका

आलेख

सुजित विरेंद्र कहीमनी
अधिकारी
सुलेभावी शाखा

प्रस्तावना

आधुनिक युग में आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति एक-दूसरे के पूरक बन चुके हैं। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में बैंकिंग प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बैंक न केवल लोगों की बचत को सुरक्षित रखते हैं, बल्कि उन्हें निवेश और ऋण के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा भी देते हैं। भारत में पिछले कुछ वर्षों में बैंकिंग क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले हैं। विशेष रूप से डिजिटल तकनीकों के उपयोग ने बैंकिंग सेवाओं को अधिक सरल, तेज और सुरक्षित बना दिया है। आज इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई और डिजिटल भुगतान प्रणाली के माध्यम से लोग घर बैठे बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा रहे हैं। डिजिटल बैंकिंग ने भारत की अर्थव्यवस्था को नई गति दी है और वित्तीय समावेशन को भी बढ़ावा दिया है।

भारत में बैंकिंग प्रणाली का महत्व

बैंक किसी भी देश की आर्थिक संरचना का एक महत्वपूर्ण आधार होते हैं। वे लोगों से जमा राशि एकत्रित करके उसे उद्योग, व्यापार और कृषि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में निवेश करते हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से उत्पादन में वृद्धि होती है, रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं और देश की आर्थिक प्रगति को गति मिलती है। इस प्रकार बैंकिंग प्रणाली आर्थिक विकास और वित्तीय स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भारत में बैंकिंग प्रणाली मुख्य रूप से तीन प्रकार की होती है—सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, निजी क्षेत्र के बैंक और सहकारी बैंक। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक सरकार के स्वामित्व में होते हैं और देश के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करते हैं। निजी क्षेत्र के बैंक आधुनिक तकनीक और बेहतर सेवा के माध्यम से बैंकिंग प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाते हैं। वहीं सहकारी बैंक मुख्य रूप से ग्रामीण और स्थानीय स्तर पर कार्य करते हैं तथा किसानों और छोटे व्यापारियों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।

इन सभी बैंकिंग संस्थानों का मुख्य उद्देश्य लोगों को सुरक्षित और सुविधाजनक वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध कराना तथा आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है। भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) देश की केंद्रीय बैंकिंग संस्था है, जो पूरे बैंकिंग तंत्र का नियमन और नियंत्रण करती है। आरबीआई की नीतियाँ मौद्रिक स्थिरता बनाए रखने, मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने और देश की वित्तीय प्रणाली को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

भारत की अर्थव्यवस्था में बैंकिंग क्षेत्र का योगदान

भारत की आर्थिक प्रगति में बैंकिंग क्षेत्र का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बैंक विभिन्न क्षेत्रों को ऋण प्रदान करके आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं और विकास की प्रक्रिया को गति देते हैं। उद्योग और व्यापार के विस्तार के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना, कृषि क्षेत्र के विकास के लिए किसानों को ऋण प्रदान करना तथा लघु और मध्यम उद्योगों (MSME) को प्रोत्साहन देना बैंकिंग प्रणाली की प्रमुख भूमिकाओं में शामिल है। इसके अतिरिक्त बैंक विभिन्न निवेश और वित्तीय योजनाओं के माध्यम से नए व्यवसायों को बढ़ावा देते हैं, जिससे रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होते हैं।

बैंकिंग प्रणाली बचत और निवेश के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करती है। लोग अपनी बचत बैंक में जमा करते हैं और बैंक उस धन को विभिन्न उत्पादक क्षेत्रों में निवेश के रूप में उपलब्ध कराते हैं। इससे आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि होती है, उत्पादन क्षमता बढ़ती है और देश की समग्र अर्थव्यवस्था मजबूत होती है। साथ ही बैंकिंग क्षेत्र वित्तीय समावेशन को भी बढ़ावा देता है, जिसके माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ा जाता है। वर्तमान समय में भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनता जा रहा है और इस विकास में बैंकिंग क्षेत्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। डिजिटल बैंकिंग, फिनटेक नवाचार और आधुनिक तकनीकों के उपयोग ने बैंकिंग सेवाओं को अधिक प्रभावी, पारदर्शी और सुलभ बना दिया है, जिससे भारत की आर्थिक प्रगति को नई दिशा मिल रही है।

डिजिटल बैंकिंग का विकास

डिजिटल बैंकिंग आधुनिक बैंकिंग प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग में बन चुकी है। डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से ग्राहक बिना बैंक शाखा में जाए अपने मोबाइल या कंप्यूटर के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं का उपयोग कर सकते हैं। इससे बैंकिंग सेवाएँ अधिक सुविधाजनक, तेज और समय की बचत करने वाली बन गई हैं। आज के डिजिटल युग में बैंकिंग कार्यों के लिए बैंक की शाखा में जाने की आवश्यकता बहुत कम रह गई है, क्योंकि अधिकांश सेवाएँ ऑनलाइन उपलब्ध हो चुकी हैं।

भारत में डिजिटल बैंकिंग के प्रमुख माध्यमों में इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई (UPI), एटीएम, डेबिट और क्रेडिट कार्ड तथा डिजिटल वॉलेट शामिल हैं। इन माध्यमों की सहायता से लोग आसानी से अपने बैंक खातों का प्रबंधन कर सकते हैं और विभिन्न प्रकार के वित्तीय लेन-देन कर सकते हैं। विशेष रूप से यूपीआई प्रणाली ने डिजिटल भुगतान को अत्यंत सरल और लोकप्रिय बना दिया है, जिसके माध्यम से लोग कुछ ही सेकंड में एक खाते से दूसरे खाते में धन हस्तांतरित कर सकते हैं।

डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से धन हस्तांतरण, बिल भुगतान, ऑनलाइन खरीदारी, टिकट बुकिंग तथा अन्य कई वित्तीय सेवाएँ बहुत आसान हो गई हैं। इसके साथ ही डिजिटल बैंकिंग ने आर्थिक लेन-देन को अधिक पारदर्शी और सुरक्षित बनाया है। आज छोटे दुकानदारों से लेकर बड़े व्यापारियों तक सभी डिजिटल भुगतान प्रणाली का उपयोग कर रहे हैं, जिससे भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था को तेजी से बढ़ावा मिल रहा है।

भारत में डिजिटल भुगतान की क्रांति

भारत में डिजिटल भुगतान प्रणाली ने पिछले कुछ वर्षों में अत्यधिक विकास किया है। विशेष रूप से यूपीआई (Unified Payments Interface) ने डिजिटल लेन-देन को सरल, तेज और अत्यंत लोकप्रिय बना दिया है। आज लोग मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से आसानी से भुगतान कर सकते हैं। छोटे दुकानदारों से लेकर बड़े व्यापारियों तक सभी डिजिटल भुगतान प्रणाली को अपना रहे हैं। मोबाइल फोन और इंटरनेट की बढ़ती उपलब्धता के कारण डिजिटल भुगतान का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है।

डिजिटल भुगतान के बढ़ते उपयोग से कई महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले हैं। इससे नकदी पर निर्भरता कम हुई है, आर्थिक लेन-देन अधिक पारदर्शी हुए हैं और कर संग्रह में भी वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त डिजिटल भुगतान प्रणाली ने लेन-देन को अधिक सुरक्षित और सुविधाजनक बना दिया है। लोग अब बिजली बिल, मोबाइल रिचार्ज, ऑनलाइन खरीदारी, टिकट बुकिंग और अन्य कई भुगतान डिजिटल माध्यम से आसानी से कर सकते हैं।

सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया अभियान और विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से डिजिटल भुगतान को बढ़ावा दिया गया है। इसके परिणामस्वरूप भारत आज विश्व के सबसे तेजी से बढ़ते डिजिटल भुगतान बाजारों में से एक बन गया है। यह परिवर्तन न केवल बैंकिंग प्रणाली को आधुनिक बना रहा है बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी अधिक मजबूत और पारदर्शी बना रहा है।

केस स्टडी 1 — प्रधानमंत्री जनधन योजना

प्रधानमंत्री जनधन योजना भारत में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई एक महत्वपूर्ण योजना है। इस योजना का उद्देश्य समाज के उन वर्गों तक बैंकिंग सेवाएँ पहुँचाना है जो पहले औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जुड़े नहीं थे। इस योजना के अंतर्गत करोड़ों लोगों के बैंक खाते खोले गए हैं, जिससे आम नागरिकों को बैंकिंग सुविधाओं का लाभ प्राप्त हो सका है। इन खातों के माध्यम से सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की राशि सीधे लाभार्थियों के खातों में स्थानांतरित की जाती है।

प्रधानमंत्री जनधन योजना के माध्यम से गरीब और ग्रामीण क्षेत्रों के लोग भी बैंकिंग प्रणाली से जुड़ने में सफल हुए हैं। इस योजना के अंतर्गत शून्य शेष (Zero Balance) खाते खोलने की सुविधा प्रदान की गई है, जिससे आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोग भी आसानी से बैंक खाता खोल सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस योजना के अंतर्गत रुपे डेबिट कार्ड, दुर्घटना बीमा तथा ओवरड्राफ्ट जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाती हैं।

इस योजना ने वित्तीय समावेशन को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे लोगों में बचत की आदत विकसित हुई है और सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे लाभार्थियों तक पहुँचने लगा है। इस प्रकार प्रधानमंत्री जनधन योजना ने भारत की बैंकिंग प्रणाली को अधिक समावेशी और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

केस स्टडी 2 — यूपीआई डिजिटल भुगतान प्रणाली

यूपीआई (Unified Payments Interface) भारत की सबसे सफल

और व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली डिजिटल भुगतान प्रणाली बन चुकी है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने मोबाइल फोन की सहायता से तुरंत और सुरक्षित तरीके से एक बैंक खाते से दूसरे बैंक खाते में पैसा भेज सकता है। यह प्रणाली सरल, तेज और उपयोगकर्ता के अनुकूल होने के कारण देशभर में अत्यधिक लोकप्रिय हो गई है। फ़ोन पे, गूगल पे और पेटीएम जैसी मोबाइल एप्लिकेशन ने यूपीआई आधारित भुगतान को आम लोगों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन ऐप्स के माध्यम से लोग कुछ ही सेकंड में भुगतान कर सकते हैं, जिससे दैनिक जीवन में होने वाले छोटे-बड़े लेन-देन अत्यंत आसान हो गए हैं।

इस प्रणाली ने छोटे व्यापारियों, दुकानदारों और स्थानीय विक्रेताओं को भी डिजिटल अर्थव्यवस्था से जोड़ दिया है। आज छोटे दुकानों, सब्ज़ी विक्रेताओं और सड़क किनारे व्यापार करने वाले लोगों के पास भी क्यूआर कोड आधारित भुगतान की सुविधा उपलब्ध है। इससे न केवल लेन-देन की प्रक्रिया सरल हुई है बल्कि नकद पैसे की आवश्यकता भी कम हुई है। यूपीआई प्रणाली ने भारत में डिजिटल भुगतान को एक नई दिशा प्रदान की है। इसके माध्यम से आर्थिक लेन-देन अधिक पारदर्शी और सुरक्षित हुए हैं तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था को तेजी से बढ़ावा मिला है। आज भारत विश्व के सबसे बड़े डिजिटल भुगतान बाजारों में से एक बन चुका है, जिसमें यूपीआई प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका है।

केस स्टडी 3 — फिनटेक कंपनियों का विकास

भारत में हाल के वर्षों में फिनटेक (Fintech) कंपनियों का तेजी से विकास हुआ है। फिनटेक शब्द फाइनेंस और टेक्नोलॉजी के संयोजन से बना है, जिसका अर्थ है तकनीक के माध्यम से वित्तीय सेवाओं को अधिक सरल, तेज और प्रभावी बनाना। फिनटेक कंपनियाँ डिजिटल तकनीकों का उपयोग करके बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं को आम लोगों तक आसानी से पहुँचाने का कार्य करती हैं।

फिनटेक के माध्यम से आज कई प्रकार की आधुनिक वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं, जैसे डिजिटल ऋण, ऑनलाइन निवेश, मोबाइल भुगतान और डिजिटल बीमा सेवाएँ। इन सेवाओं के कारण लोगों के लिए वित्तीय लेन-देन और निवेश करना पहले की तुलना में कहीं अधिक आसान हो गया है। मोबाइल एप्लिकेशन और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से लोग कुछ ही मिनटों में ऋण प्राप्त कर सकते हैं, निवेश कर सकते हैं या बीमा सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं।

फिनटेक कंपनियों ने विशेष रूप से युवाओं और छोटे व्यवसायों के लिए वित्तीय सेवाओं को अधिक सुलभ बनाया है। इसके अतिरिक्त इन कंपनियों ने बैंकिंग प्रणाली को अधिक आधुनिक और तकनीकी रूप से सक्षम बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फिनटेक के विकास से डिजिटल अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिला है और वित्तीय सेवाओं का दायरा समाज के अधिक लोगों तक पहुँच पाया है।

इस प्रकार फिनटेक कंपनियाँ भारत की आधुनिक बैंकिंग और वित्तीय प्रणाली को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं और भविष्य में इनकी भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण होने की संभावना है।

डिजिटल रुपया (CBDC) की शुरुआत

भारतीय रिज़र्व बैंक ने हाल के वर्षों में डिजिटल मुद्रा अर्थात डिजिटल रुपया (Central Bank Digital Currency — CBDC) की शुरुआत की है। डिजिटल रुपया एक प्रकार की इलेक्ट्रॉनिक मुद्रा है जिसे सीधे केंद्रीय बैंक द्वारा जारी किया जाता है। यह पारंपरिक कागज़ी मुद्रा का डिजिटल रूप है, जिसका उपयोग ऑनलाइन और डिजिटल लेन-देन के लिए किया जा सकता है। इसका मुख्य उद्देश्य डिजिटल भुगतान प्रणाली को अधिक सुरक्षित, तेज और प्रभावी बनाना है।

डिजिटल रुपये की विशेषता यह है कि यह केंद्रीय बैंक द्वारा नियंत्रित होता है, इसलिए इसकी विश्वसनीयता और सुरक्षा अधिक होती है। इसके माध्यम से व्यक्ति बिना किसी मध्यस्थ के सीधे डिजिटल रूप में भुगतान कर सकता है। इससे लेन-देन की प्रक्रिया और अधिक सरल तथा पारदर्शी हो सकती है। इसके अतिरिक्त डिजिटल रुपया नकदी प्रबंधन की लागत को भी कम कर सकता है और डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे सकता है।

भविष्य में डिजिटल रुपया भारत की वित्तीय प्रणाली को और अधिक

आधुनिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह डिजिटल बैंकिंग, फिनटेक सेवाओं और ऑनलाइन भुगतान प्रणालियों के साथ मिलकर एक मजबूत डिजिटल आर्थिक ढाँचा तैयार कर सकता है। साथ ही इससे वित्तीय समावेशन को भी बढ़ावा मिल सकता है, क्योंकि दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोग भी डिजिटल माध्यम से आसानी से वित्तीय लेन-देन कर सकेंगे।

इस प्रकार डिजिटल रुपया भारत की उभरती हुई डिजिटल अर्थव्यवस्था को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है।

बैंकिंग क्षेत्र की चुनौतियाँ

हालाँकि बैंकिंग क्षेत्र ने पिछले कुछ वर्षों में उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी इसके सामने कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ मौजूद हैं। तेजी से बढ़ती डिजिटल बैंकिंग सेवाओं, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और आर्थिक परिवर्तनों के कारण बैंकिंग प्रणाली को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन चुनौतियों का प्रभाव न केवल बैंकिंग संस्थानों पर पड़ता है, बल्कि यह देश की समग्र आर्थिक व्यवस्था को भी प्रभावित कर सकता है।

सबसे प्रमुख चुनौती साइबर सुरक्षा से संबंधित है। डिजिटल बैंकिंग के बढ़ते उपयोग के साथ-साथ साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ गया है। ऑनलाइन धोखाधड़ी, फिशिंग, हैकिंग और डेटा चोरी जैसी घटनाएँ बैंकिंग प्रणाली के लिए गंभीर चिंता का विषय बन गई हैं। इसलिए बैंकों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे अपनी सुरक्षा प्रणाली को मजबूत करें और ग्राहकों को सुरक्षित डिजिटल लेन-देन के बारे में जागरूक करें।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती डिजिटल साक्षरता की कमी है। ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में अभी भी कई लोग डिजिटल बैंकिंग सेवाओं के उपयोग के बारे में पूरी जानकारी नहीं रखते। इस कारण वे डिजिटल सुविधाओं का पूरा लाभ नहीं उठा पाते। इसलिए सरकार और बैंकों द्वारा लोगों को डिजिटल साक्षरता के बारे में शिक्षित करने और जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त गैर निष्पादित परिसंपत्तियाँ (Non-Performing Assets – NPA) भी बैंकिंग क्षेत्र के लिए एक बड़ी चुनौती हैं। जब उधार लेने वाले व्यक्ति या संस्थाएँ समय पर ऋण वापस नहीं कर पाते, तो वह ऋण एनपीए में बदल जाता है। इससे बैंकों की वित्तीय स्थिति पर दबाव पड़ता है और उनकी ऋण देने की क्षमता भी प्रभावित होती है। इसलिए बैंकों के लिए प्रभावी ऋण प्रबंधन और जोखिम नियंत्रण प्रणाली विकसित करना अत्यंत आवश्यक है।

इन चुनौतियों के बावजूद बैंकिंग क्षेत्र निरंतर सुधार और तकनीकी नवाचार के माध्यम से स्वयं को अधिक मजबूत बनाने का प्रयास कर रहा है। उचित नीतियों, बेहतर प्रबंधन और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से इन समस्याओं को कम किया जा सकता है और बैंकिंग प्रणाली को अधिक सुरक्षित, सशक्त और प्रभावी बनाया जा सकता है।

भविष्य की बैंकिंग प्रणाली

भविष्य में बैंकिंग प्रणाली और अधिक तकनीकी आधारित होने वाली है। तेजी से विकसित होती डिजिटल तकनीकों के कारण बैंकिंग सेवाओं में निरंतर परिवर्तन देखने को मिल रहा है। आने वाले समय में बैंकिंग क्षेत्र में नई तकनीकों का उपयोग बढ़ेगा, जिससे सेवाएँ अधिक तेज, सुरक्षित और ग्राहक-केंद्रित बनेंगी।

नई तकनीकों जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (Artificial Intelligence), ब्लॉकचेन तकनीक और फिनटेक नवाचारों के उपयोग से बैंकिंग सेवाएँ और अधिक प्रभावी बनेंगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की सहायता से ग्राहक सेवा को बेहतर बनाया जा सकता है, जैसे चैटबॉट और स्वचालित सहायता प्रणाली के माध्यम से ग्राहकों की समस्याओं का तुरंत समाधान किया जा सकता है। इसके साथ ही डेटा विश्लेषण के माध्यम से बैंकों को ग्राहकों की आवश्यकताओं को बेहतर तरीके से समझने में सहायता मिलती है।

ब्लॉकचेन तकनीक बैंकिंग लेन-देन को अधिक सुरक्षित और पारदर्शी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यह तकनीक डेटा को सुरक्षित तरीके से संग्रहित करती है और लेन-देन में धोखाधड़ी की संभावना को कम करती है। वहीं फिनटेक कंपनियों के नवाचारों के कारण बैंकिंग सेवाएँ अधिक सरल, तेज और सुलभ बन रही हैं, जिससे ग्राहक कहीं भी और कभी भी वित्तीय सेवाओं का उपयोग कर सकते हैं।

भविष्य में डिजिटल भुगतान प्रणाली, ऑनलाइन बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग का उपयोग और अधिक बढ़ने की संभावना है। साथ ही डिजिटल मुद्रा और उन्नत साइबर सुरक्षा तकनीकों के माध्यम से बैंकिंग प्रणाली को और अधिक मजबूत बनाया जाएगा। इस प्रकार आधुनिक तकनीकों के उपयोग से भविष्य की बैंकिंग प्रणाली अधिक सुरक्षित, पारदर्शी और प्रभावी बनने की दिशा में आगे बढ़ रही है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बैंकिंग प्रणाली किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है। भारत में डिजिटल बैंकिंग के विकास ने बैंकिंग सेवाओं को अधिक सरल, तेज और सुरक्षित बना दिया है। यूपीआई, मोबाइल बैंकिंग और फिनटेक तकनीकों के माध्यम से वित्तीय लेन-देन अधिक सुविधाजनक और पारदर्शी हो गए हैं तथा आर्थिक गतिविधियों को भी गति मिली है।

प्रधानमंत्री जनधन योजना जैसी पहल ने वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देकर समाज के विभिन्न वर्गों को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यद्यपि साइबर सुरक्षा, डिजिटल साक्षरता और एनपीए जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, फिर भी आधुनिक तकनीकों और प्रभावी नीतियों के माध्यम से इनका समाधान संभव है।

इस प्रकार डिजिटल तकनीकों के विस्तार के साथ भारत की बैंकिंग प्रणाली लगातार मजबूत हो रही है और भविष्य में देश की आर्थिक प्रगति में और भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

छत्तीसगढ़ धारा

कविता

सत्य देव कोसरिया
ग्राहक सेवा सहयोगी
कोंडागाँव शाखा

छत्तीसगढ़ महतारी के आंचल में जो है तारे,
हर तारा बिखरता यहां संस्कृत के उजियारे ।
धान का कटोरा और प्रकृति की छटा निराली है,
छत्तीसगढ़ माला में 33 जिलों की मोती डाली है ।।

रायपुर राजधानी, कोरबा बिजली की रानी हैं,
ताल से ताल मिलाता खैरागढ़, बिलासपुर सब से सिआनी हैं।
उच्च न्यायालय, रेलवे मुख्यालय बिलासपुर की शान,
खैरागढ़-छूईखदान-गंडई-इंदिरा कला संगीत विश्वाविध्यालय है मान।

राजनांदगांव में मंदिरों का इतिहास है भारी,
गौरेला-पेंड्रा-मरवाही अमरकंटक तक दिलाएगी सवारी ।
सज आई गंगरेल बांध धमतरी में प्यारी,
तांदुला बांध और कृषि उत्पादन भी बालोद में हुई दुलारी ।।

प्राकृतिक संपदा का उपहार है बस्तर,
गूंजता हर धारा का मधुर सार है बस्तर ।
चित्रकूट की धारा, लोकगीत की धुन,
मिट्टी के महक, संस्कृत, संघर्ष, स्वाभिमान के गुण ।।

घने जंगल कल-कल झरने हरियाली का है विस्तार,
धरती का स्वर्ग ही मान लो मेरा बस्तर सुंदर अपार ।
सरगुजा की सरगम, बस्तर की बात,
जशपुर की जुगलबंदी, धमतरी के जज्बात ।।

नारायणपुर, सरगुजा, बीजापुर, सुकमा,
ऐतिहासिक जनजातीय संस्कृति प्रकृति के संगमा ।
मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी की अपनी कहानी है,
ढोकरा कला कोंडागांव की दुनिया दीवानी है ।।

उदंती सीतानदी अभयारण्य और राजिम कुंभ गरियाबंद के है हिस्से,
कांकेर के कंकालिन मंदिर, कबीरधाम भोरमदेव के कई है किस्से।
बेमेतरा और सूरजपुर की मिट्टी उपजाऊ है बड़ी,
महासमुंद में सिरपुर प्राचीन मंदिर, बौद्ध स्थल जीवन की है कड़ी ।।

छत्तीसगढ़ की धरती सच में है संसाधनों का भंडार,
दुर्ग-भिलाई स्टील प्लांट, बलौदा बाजार-भाटापारा में है सीमेंट की भरमार।
गिरोधपुरी में सबने अपने शीश सजदे में झुकाए हैं,
यहां प्रेम और समानता के गीत हमेशा गाये हैं।।

जांजगीर-चापा भी चावल उत्पादन की होड़ में है,
कोरिया में कोयला खदान, प्राकृतिक सुंदरता भी ज़ोर पर हैं।
खूबसूरत पहाड़ियां जशपुर के माथे का ताज हैं,
मुंगेली को मद्कूद्वीप और धार्मिक स्थल का नाज़ हैं।।

ऐतिहासिक किलों का आकर्षण सारंगढ़ बिलाईगढ़ जी,
नया जिला बन कर **'शक्ति'** भी सजाई गई जी ।
कला-संगीत उद्योग के भाव है हवाओं में,
रायगढ़ की मिठास घुली है हर फिज़ाओं में ।।

तातापानी गर्म जल का अनुपम है ये मेल,
बलरामपुर की गोद में खिलता है यह खेल ।
मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर कोयला खनन को अर्पण है,
मेरा छत्तीसगढ़ विकसित भारत के सपने का दर्पण है ।।

मां दंतेश्वरी की छत्रछाया हर कण में है समाया,
यह सौभाग्य दंतेवाड़ा-जगदलपुर ने है पाया।
हर जिले में बसता एक हिन्दुस्तान,
इसके इतिहास का प्रकृति भी करती गान ।।

जहाँ समुद्र के किनारे बसती है श्रद्धा: सोमनाथ, नागेश्वर और द्वारका की यात्रा

यात्रा-वृतांत

रोहित कुमार
अधिकारी
फलटण, शाखा

मैं जब गुजरात यात्रा को याद करता हूँ तो ऐसा लगता है जैसे मन किसी शांत और पवित्र स्मृति में लौट गया हो। जीवन की रोज़मर्रा की भागदौड़ में कई बार हम अपने भीतर की शांति को खो देते हैं, लेकिन कुछ यात्राएँ ऐसी होती हैं जो हमें फिर से अपने आप से जोड़ देती हैं। हमारी गुजरात की यह यात्रा भी कुछ ऐसी ही रही। हमारे घर में कई वर्षों से एक परंपरा चली आ रही है कि हर साल की शुरुआत हम भगवान शिव के किसी ज्योतिर्लिंग के दर्शन से करते हैं। यह परंपरा धीरे-धीरे हमारे जीवन का एक अहम हिस्सा बन गई है। हमें हमेशा लगता है कि जब वर्ष की शुरुआत भगवान शिव के चरणों में सिर झुकाकर होती है तो पूरे साल उनके आशीर्वाद की छाया हमारे साथ बनी रहती है। इसी भावना के साथ इस बार हमने गुजरात जाने का निश्चय किया। गुजरात की धरती पर स्थित सोमनाथ और नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने की इच्छा हमारे मन में काफी समय से थी। इसके साथ ही भगवान श्रीकृष्ण की पवित्र नगरी द्वारका और समुद्र के बीच बसे बेट द्वारका के दर्शन करने का विचार भी हमारे मन में था। इस यात्रा की सबसे खास बात यह थी कि इस बार मैं अकेला नहीं था। मेरी पत्नी और मेरी बेटी भी मेरे साथ थीं। परिवार के साथ की गई यात्राएँ हमेशा अधिक यादगार होती हैं, क्योंकि रास्ते का हर दृश्य और हर अनुभव किसी कहानी की तरह दिल में बस जाता है। मेरी बेटी इस यात्रा को लेकर बहुत उत्साहित थी। वह बार-बार पूछती थी कि समुद्र कितना बड़ा होगा, मंदिर कितना ऊँचा होगा और भगवान का घर कैसा दिखेगा। उसकी मासूम जिज्ञासाएँ सुनकर हमें भी ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी साधारण यात्रा पर नहीं बल्कि किसी पवित्र बुलावे पर निकल रहे हों।

जब हम गुजरात पहुँचे तो सबसे पहले वहाँ की सादगी और शांत वातावरण ने मन को छू लिया। रास्ते के दोनों ओर फैले खेत, दूर-दूर तक दिखाई देने वाले छोटे गाँव और लोगों के चेहरे पर दिखाई देने वाली सहज मुस्कान इस बात का एहसास दिलाती है कि भारत की असली सुंदरता केवल बड़े शहरों में नहीं बल्कि इन शांत और सरल स्थानों में भी बसती है। हमारी यात्रा का पहला पड़ाव था सोमनाथ। जैसे-जैसे हम सोमनाथ के करीब पहुँच रहे थे, समुद्र की ठंडी हवा और दूर से दिखाई देता मंदिर का शिखर मन में श्रद्धा का भाव और गहरा कर रहा था। सोमनाथ मंदिर समुद्र के किनारे स्थित है और उसकी भव्यता पहली ही नजर में मन को प्रभावित कर देती है। मंदिर का शिखर बहुत ऊँचा है और उसके ऊपर लहराता हुआ ध्वज समुद्र की तेज हवा में लगातार फहराता रहता है। कहा जाता है कि यह ध्वज दिन में कई बार बदला जाता है और इसे बदलने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। जब हम मंदिर के मुख्य द्वार से अंदर प्रवेश करते हैं तो ऐसा लगता है जैसे बाहर की दुनिया की सारी हलचल पीछे छूट गई हो। भीतर प्रवेश करते ही एक अलग ही आध्यात्मिक वातावरण महसूस होता है। मंदिर के विशाल स्तंभों और दीवारों पर की गई नक्काशी इतनी सुंदर और बारीक है कि उन्हें देखकर लगता है जैसे पुराने समय के कलाकारों ने पत्थर में जान डाल दी हो। कहीं भगवान शिव के विभिन्न रूपों की आकृतियाँ दिखाई देती हैं, कहीं माता पार्वती और गणेश जी की सुंदर मूर्तियाँ बनी हुई हैं। गर्भगृह की ओर बढ़ते समय वातावरण और भी गंभीर और पवित्र हो जाता है। भीतर भगवान शिव का ज्योतिर्लिंग स्थापित है जिस पर लगातार अभिषेक होता रहता है। पुजारी जल, दूध, दही, घी और शहद से पंचामृत चढ़ाते हैं। भक्त बेलपत्र, फूल और धतूरा अर्पित करते हैं और धीरे-धीरे ॐ नमः शिवाय का जाप करते रहते हैं। मंदिर में बजती घंटियों की मधुर ध्वनि और शंख की आवाज पूरे वातावरण को एक दिव्य ऊर्जा से भर देती है।

उस क्षण वहाँ खड़े होकर ऐसा लगता है जैसे मन अपने आप शांत हो गया हो और सारी चिंताएँ कहीं दूर चली गई हों।

सोमनाथ मंदिर का इतिहास भी उतना ही अद्भुत और प्रेरणादायक है। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस मंदिर का निर्माण सबसे पहले चंद्रदेव ने भगवान शिव की आराधना के लिए किया था। कहा जाता है कि चंद्रदेव को एक शाप मिला था और उस शाप से मुक्ति पाने के लिए उन्होंने

यहाँ भगवान शिव की कठोर तपस्या की थी। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें आशीर्वाद दिया और तब से यह स्थान सोमनाथ के नाम से प्रसिद्ध हो गया। समय के साथ यह मंदिर अत्यंत समृद्ध और प्रसिद्ध हो गया। दूर-दूर से व्यापारी और राजा यहाँ दर्शन करने आते थे। लेकिन इतिहास के पन्नों में इस मंदिर ने कई कठिन समय भी देखे। 1025 ईस्वी में महमूद गजनवी ने इस मंदिर पर आक्रमण किया और इसे लूट लिया। इसके बाद भी कई बार विदेशी आक्रमणकारियों ने इसे नुकसान पहुँचाया, लेकिन हर बार भक्तों और राजाओं ने मिलकर इसे फिर से बनवाया। यही कारण है कि सोमनाथ को केवल एक मंदिर नहीं बल्कि आस्था और साहस का प्रतीक माना जाता है। आज जो भव्य मंदिर दिखाई देता है उसका पुनर्निर्माण स्वतंत्रता के बाद सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रेरणा से हुआ। उन्होंने यह निश्चय किया कि सोमनाथ मंदिर को फिर से उसी गौरव के साथ खड़ा किया जाएगा। आज यह मंदिर न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि भारत की सांस्कृतिक विरासत का भी प्रतीक है। यहाँ महाशिवरात्रि का उत्सव अत्यंत भव्य रूप से मनाया जाता है। उस दिन हजारों श्रद्धालु यहाँ एकत्र होते हैं और पूरी रात भगवान शिव की आराधना करते हैं। श्रावण मास के दौरान भी यहाँ भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती है और पूरा वातावरण भक्ति से भर जाता है।

सोमनाथ के दर्शन के बाद हम नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के लिए निकले। रास्ता बहुत शांत और सुंदर था। दूर-दूर तक फैले मैदान, खुला आसमान और हल्की हवा इस सफर को बहुत सुखद बना रहे थे। जब हम नागेश्वर मंदिर के पास पहुँचे तो सबसे पहले भगवान शिव की विशाल प्रतिमा दिखाई दी। यह प्रतिमा बहुत ऊँची है और भगवान शिव ध्यान मुद्रा में बैठे हुए दिखाई देते हैं। उनके चेहरे पर एक अद्भुत शांति झलकती है जिसे देखकर मन अपने आप श्रद्धा से भर जाता है। मंदिर के भीतर का वातावरण बहुत पवित्र है। गर्भगृह में स्थित शिवलिंग पर लगातार जल और दूध से अभिषेक होता रहता है। भक्त श्रद्धा से बेलपत्र और फूल चढ़ाते हैं। मंदिर की दीवारों पर सुंदर चित्र और कलाकृतियाँ बनी हुई हैं जो भगवान शिव की विभिन्न कथाओं को दर्शाती हैं। यहाँ भी कई त्योहार बड़े उत्साह से मनाए जाते हैं, विशेषकर महाशिवरात्रि और श्रावण मास के दौरान यहाँ हजारों भक्त दर्शन के लिए आते हैं।

नागेश्वर के दर्शन के बाद हम द्वारका पहुँचे। द्वारका का नाम सुनते ही मन में भगवान श्रीकृष्ण की छवि उभर आती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार जब भगवान कृष्ण ने मथुरा छोड़ दी थी तब उन्होंने समुद्र के किनारे एक भव्य नगर बसाया था जिसे द्वारका कहा गया। कहा जाता है कि यह नगर बहुत ही समृद्ध और सुंदर था और यहाँ सोने-चाँदी से सजे महल थे। आज भी द्वारका की गलियों में चलते हुए ऐसा लगता है जैसे किसी पुराने युग की कहानी हमारे सामने जीवित हो गई हो। द्वारकाधीश मंदिर यहाँ का सबसे प्रमुख मंदिर है। मंदिर का शिखर बहुत ऊँचा है और उसके ऊपर लहराता हुआ ध्वज हर दिन बदला जाता है। मंदिर के भीतर भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति अत्यंत सुंदर है। उन्हें राजसी वस्त्र पहनाए जाते हैं और उनके आभूषण चमकते रहते हैं। आरती के समय ढोल, शंख और घंटियों की ध्वनि से पूरा मंदिर गूंज उठता है। द्वारका में जन्माष्टमी का उत्सव बहुत भव्य रूप से मनाया जाता है। उस दिन पूरा शहर रोशनी से जगमगा उठता है और मंदिरों में विशेष पूजा होती है।

द्वारका की यात्रा का सबसे रोचक भाग था बेट द्वारका जाना। बेट द्वारका समुद्र के बीच स्थित एक द्वीप है जहाँ जाने के लिए नाव से समुद्र पार करना पड़ता है। जब हम नाव में बैठे और धीरे-धीरे समुद्र के बीच आगे बढ़ने लगे तो चारों ओर केवल पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। हल्की हवा चल रही थी और समुद्र की लहरें नाव को धीरे-धीरे हिला रही थीं। मेरी बेटी इस अनुभव को बहुत उत्साह से देख रही थी और उसकी खुशी देखकर हमें भी बहुत आनंद हो रहा था। बेट द्वारका के बारे में कहा जाता है कि यही वह स्थान है जहाँ भगवान कृष्ण का निवास था और जहाँ से वे अपने राज्य का संचालन करते थे। यहाँ का मंदिर बहुत प्राचीन माना जाता है और उसका वातावरण अत्यंत शांत और पवित्र लगता है। मंदिर तक पहुँचने के लिए थोड़ी दूरी पैदल चलनी पड़ती है और रास्ते में छोटी-छोटी दुकानों पर प्रसाद, शंख और स्मृति-चिह्न मिलते हैं।

जब हमारी यह पूरी यात्रा समाप्त हुई और हम वापस लौटने लगे तो मन में एक गहरा संतोष था। ऐसा लग रहा था जैसे इस यात्रा ने हमें केवल मंदिरों के दर्शन ही नहीं कराए, बल्कि मन को एक नई शांति और विश्वास भी दिया। आज भी जब मैं उस यात्रा को याद करता हूँ तो सोमनाथ का समुद्र, नागेश्वर की शांति, द्वारका की भक्ति और बेट द्वारका की पवित्रता सब कुछ मन में फिर से जीवित हो उठता है। शायद यही तीर्थ यात्रा का असली अर्थ है—जहाँ शरीर तो घर लौट आता है, लेकिन मन का एक हिस्सा हमेशा के लिए वहीं रह जाता है।

ग्राहक जुड़ाव और कासा: एक रणनीतिक दृष्टिकोण

आलेख

विपिन कुमार
मंडल प्रबंधक
सीआईबीएस, मणिपाल

**सस्ती पूंजी जिसकी शक्ति, ग्राहक जिसका मान;
यही है नये युग की बैंकिंग की पहचान।**

1. प्रस्तावना

पिछले कुछ दशकों में बैंकिंग क्षेत्र में एक बुनियादी बदलाव आया है। बैंक अब केवल पारंपरिक ऋण केंद्रित मॉडल तक सीमित नहीं रहे, बल्कि वे अधिक विविधतापूर्ण और देनदारी आधारित ढांचे की ओर बढ़ गए हैं। इस पूरे परिवर्तन के केंद्र में कासा (चालू खाता बचत खाता) की अवधारणा है। यह आज के समय में किसी बैंक के वित्तीय स्वास्थ्य और उसके परिचालन की स्थिरता को मापने का एक महत्वपूर्ण पैमाना बन चुका है।

कासा का अर्थ उस कुल धनराशि से है जो एक बैंक अपने चालू और बचत खातों में रखता है। सावधि जमा या सावधि जमा के विपरीत, जो बैंक के लिए उच्च-ब्याज वाली देनदारियां होती हैं, कासा जमा राशि 'कम लागत वाले फंड' का प्रतिनिधित्व करती है। यही कारण है कि इसे आधुनिक खुदरा बैंकिंग की आधारशिला माना जाता है।

बैंकिंग परिस्थिति में कासा तरलता प्रबंधन और लागत दक्षता के लिए प्राथमिक इंजन के रूप में कार्य करता है। चालू खाते, जो आमतौर पर व्यवसायों द्वारा बार-बार होने वाले लेनदेन के लिए उपयोग किए जाते हैं, उन पर बैंक शून्य ब्याज देता है। वहीं, बचत खाते सावधि जमा की तुलना में बहुत ही मामूली ब्याज दर प्रदान करते हैं। परिणामस्वरूप, एक उच्च कासा अनुपात (कुल जमा में कासा का प्रतिशत) सीधे तौर पर बैंक की 'फंड की लागत' को कम कर देता है। जब एक बैंक कम लागत पर धन प्राप्त कर सकता है, तो उसका 'निवल ब्याज मार्जिन' जो कि अर्जित ब्याज और भुगतान किए गए ब्याज के बीच का अंतर है, काफी बढ़ जाता है। इसलिए, एक मजबूत कासा पोर्टफोलियो केवल जमा का आंकड़ा नहीं है; यह ऋण बाजार में स्थायी लाभप्रदता और प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण के लिए एक महत्वपूर्ण यंत्र है।

इस निबंध का उद्देश्य "कासा कारोबार" का विश्लेषण न केवल एक जमा उत्पाद के रूप में, बल्कि बैंकिंग रणनीति के एक नए और गतिशील आयाम के रूप में करना है।

2. बैंकिंग का विकास और कासा की अवधारणा

बैंकिंग का इतिहास मूल रूप से देनदारी निर्माण का इतिहास है। आधुनिक बैंकिंग के शुरुआती चरणों में, जमा जुटाने का प्राथमिक ध्यान स्थिरता और लंबी अवधि पर था। बैंकों ने सावधि जमा और आवर्ती जमा को प्राथमिकता दी क्योंकि उन्होंने एक निश्चित अवधि के लिए धन की भविष्यवाणी करने की अनुमति दी थी, जिससे बैंक अचानक निकासी के जोखिम के बिना लंबी अवधि के लिए उधार दे सकते थे। उस दौर में, 'फंड की स्थिरता' की तुलना में 'फंड की लागत' एक गौण चिंता थी। हालांकि, जैसे-जैसे बैंकिंग बाजार परिपक्व हुआ और प्रतिस्पर्धा तेज हुई, परिचालन दर्शन में महत्वपूर्ण बदलाव आया।

पारंपरिक सावधि जमा से कासा -केंद्रित रणनीति की ओर बदलाव वित्तीय प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण विकास है। जैसे-जैसे बाजारों में उदारीकरण हुआ, बैंकिंग का ऋण पक्ष अत्यधिक प्रतिस्पर्धी हो गया, जिससे उधारकर्ताओं से ली जाने वाली ब्याज दरों में कमी आई। इसने चालू खातों और बचत खातों (कासा) को जुटाने की दिशा में एक रणनीतिक बदलाव की आवश्यकता पैदा की।

अमेरिका और यूरोप जैसी विकसित अर्थव्यवस्थाओं में, "चेकिंग अकाउंट्स" (चालू खाते) अक्सर रखरखाव शुल्क और शून्य ब्याज के साथ आते हैं, जबकि बचत खाते नगण्य रिटर्न देते हैं। इसके विपरीत, भारतीय बैंकिंग प्रणाली विशिष्ट रूप से विकसित हुई है जहां बचत खाता एक 'हाइब्रिड उत्पाद' है -जो लेनदेन और बचत दोनों के उपकरण के रूप में कार्य करता है। भारत में, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा बचत बैंक ब्याज दरों के विनियंत्रण ने "जमा के लिए युद्ध" छेड़ दिया, जहां बैंकों ने उच्च बचत दरों को ग्राहक अधिग्रहण उपकरण के रूप में उपयोग करना शुरू कर दिया।

अंत में, डिजिटलीकरण ने इन जमाओं की संरचना को मौलिक रूप से बदल दिया है। डिजिटलपूर्व युग में, उच्च कासा अनुपात शाखा नेटवर्क के घनत्व पर निर्भर करता था बैंक की जितनी अधिक शाखाएं होंगी, उतने ही अधिक कम लागत वाले जमा वह जुटा पाएगा। आज, तकनीक ने जमा जुटाने को भौतिक भूगोल से अलग कर दिया है। डिजिटल बैंकिंग, यूपीआई और मोबाइल वॉलेट के उदय ने कासा खातों में धन के "वेग" को बढ़ा दिया है। ग्राहक अब केवल बचत करने के लिए नहीं, बल्कि रीयल-टाइम में लेनदेन करने के लिए बचत खातों में पैसा रखते हैं। इसने बैंकों को कासा को एक निष्क्रिय जमा उत्पाद से एक सक्रिय, सेवा-भारी जीवनशैली प्रस्ताव में विकसित करने के लिए मजबूर किया है।

3. बैंकों के लिए कासा व्यवसाय का महत्व

आधुनिक बैंकिंग शब्दावली में, कासा को अक्सर उस "कम लागत वाले ईंधन" के रूप में जाना जाता है जो बैंकिंग इंजन को शक्ति प्रदान करता है। इसका महत्व बैंक के मध्यस्थता के मूलभूत मॉडल से उपजा है। बैंक जमाकर्ताओं से पैसा उधार लेते हैं और उधारकर्ताओं को ऋण देते हैं। कासा जमा का रणनीतिक संग्रहण राजस्व प्रसार को अधिकतम करने का सबसे प्रभावी तरीका है।

फंड की लागत को कम करना: कासा का प्राथमिक मूल्य प्रस्ताव 'फंड की लागत' पर इसका प्रभाव है। चालू खातों में आमतौर पर शून्य ब्याज लगता है, जिससे बैंकों को उधार देने के लिए प्रभावी रूप से "मुफ्त" पैसा मिलता है। बचत खाते, हालांकि ब्याज वाले होते हैं, लेकिन उनकी दरें सावधि जमा (6% से 7.5%) की तुलना में काफी कम (आमतौर पर 3% से 4%) होती हैं।

निवल ब्याज मार्जिन और लाभप्रदता पर प्रभाव: बैंक के कासा अनुपात और उसके निवल ब्याज मार्जिन के बीच सीधा सकारात्मक संबंध है। उच्च कासा अनुपात "ब्याज व्यय" को कम करता है, जिससे निम का विस्तार होता है। यह शीर्ष स्तर के बैंकों की लाभप्रदता का "सीक्रेट सॉस" है। जब बैंक आर्थिक मंदी या बढ़ते ब्याज दर चक्र (रेपो रेट में बढ़ोतरी) का सामना करते हैं, तो मजबूत कासा वाले बैंक सुरक्षित रहते हैं क्योंकि उनके फंड की लागत उतनी तेजी से नहीं बढ़ती जितनी कि थोक बाजार उधार पर निर्भर बैंकों की।

स्थिरता, तरलता और "स्टिकी" मनी: तत्काल लाभप्रदता से परे, कासा जमा बेहतर स्थिरता प्रदान करते हैं। ग्राहक आमतौर पर इन खातों का उपयोग वेतन क्रेडिट, उपयोगिता भुगतान और दैनिक यूपीआई लेनदेन के लिए करते हैं। चूंकि ये खाते ग्राहक के दैनिक जीवन में एकीकृत होते हैं, इसलिए उन्हें अचानक बंद करने या स्थानांतरित करने की संभावना कम होती है।

4. कासा विकास के प्रेरक कारक

कासा पोर्टफोलियो का विस्तार अब केवल शाखाओं की मौजूदगी का काम नहीं है; यह तकनीक, व्यवहारिक बदलाव और नियामक ढांचे की एक जटिल परस्पर क्रिया है।

तकनीकी चालक: इंटरनेट बैंकिंग और मोबाइल एप्लिकेशन ने पारंपरिक बैंकिंग से जुड़ी बाधाओं को दूर कर दिया है। हालांकि, असली गेम-चेंजर यूपीआई रहा है। यूपीआई ने बचत खाते को फंड के निष्क्रिय भंडारण से एक उच्च-वेग वाले ट्रांजेक्शनल हब में बदल दिया है। चूंकि यूपीआई ऐप्स सीधे बैंक खातों से जुड़े होते हैं, इसलिए ग्राहक दैनिक लेनदेन के लिए अपने बचत खातों में उच्च शेष राशि रखने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।

नियामक प्रभाव: एक इनेबलर के रूप में नीति: प्रधान मंत्री जन धन योजना ने कम लागत वाली जमा राशि के लिए एक संरचनात्मक पाइपलाइन बनाई है। हालांकि शुरुआत में ये जीरो-बैलेंस खाते थे, लेकिन धीरे-धीरे इनमें सरकारी सब्सिडी (डीबीटी) के प्रवाह के साथ महत्वपूर्ण जमा राशि जमा हो गई है। इसके अलावा, वीडियो केवाईसी और आधार प्रमाणीकरण ने नए खाते खोलने के समय को काफी कम कर दिया है।

मार्केटिंग और रिलेशनशिप प्रबंधन: आधुनिक बैंक अब एक "उत्पाद" बेचने के बजाय एक "रिश्ते" को प्रबंधित करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। कासा विकास की आधुनिक रणनीति 'कॉर्पोरेट सैलरी मैंडेट' पर बहुत अधिक निर्भर करती है। बड़े कॉर्पोरेट्स के वेतन प्रवाह को कैप्चर करके, बैंक कम लागत वाले धन का निरंतर मासिक प्रवाह सुनिश्चित करते हैं।

5. कासा व्यवसाय में चुनौतियाँ

हालांकि एक उच्च कासा अनुपात बैंकिंग लाभप्रदता के लिए 'स्वर्ण मानक' माना जाता है, लेकिन वर्तमान वित्तीय परिवेश में इन जमाओं को जुटाना और उन्हें बनाए रखना बड़ी चुनौतियों से भरा है। अब बाजार पूरी तरह से ग्राहकों के नियंत्रण में है, जो सेवा की गुणवत्ता और रिटर्न के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो गए हैं।

- **ब्याज दरों की प्रतिस्पर्धा:** बचत खाता दरों के विनियंत्रण ने एक नई प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया है। छोटे वित्त बैंक और निजी क्षेत्र के नए बैंक ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए 6% से 7% तक की आक्रामक ब्याज दरों की पेशकश कर रहे हैं। यह स्थापित बड़े बैंकों के लिए एक कठिन स्थिति पैदा करता है। यदि वे इन दरों की बराबरी करते हैं, तो उनकी 'फंड की लागत' बढ़ जाती है, जिससे कासा का मुख्य उद्देश्य (सस्ता धन प्राप्त करना) ही समाप्त हो जाता है और यदि वे दरें नहीं बढ़ाते, तो वे अपने पुराने और मूल्यवान ग्राहकों को खोने का जोखिम उठाते हैं।

- **फिनटेक और डिजिटल व्यवधान:** परिष्कृत वेल्थ मैनेजमेंट ऐप्स के उदय ने "बचत के वित्तीयकरण" को बढ़ावा दिया है। पहले, ग्राहकों का अतिरिक्त पैसा महीनों तक बचत खाते में पड़ा रहता था, जिससे बैंकों को फायदा होता था। आज, बैंक खातों और निवेश प्लेटफॉर्म के बीच निर्बाध एकीकरण के कारण ग्राहक तुरंत अपने फालतू पैसे को म्यूचुअल फंड, एसआईपी या अधिक ब्याज वाले लिक्विड फंड में स्थानांतरित कर देते हैं। फिनटेक कंपनियों ने उस "अकर्मण्यता दंड" को खत्म कर दिया है जिससे बैंक पहले लाभ कमाते थे।

- **ग्राहक प्रतिधारण और पलायन:** डिजिटल दुनिया में बैंक बदलना अब बहुत आसान हो गया है। ग्राहकों की वफादारी अब शाखा की निकटता से नहीं, बल्कि 'यूजर एक्सपीरियंस' और ऐप की विश्वसनीयता से तय होती है। इस उच्च वेग के कारण बैंकों को ग्राहकों को बनाए रखने के लिए भारी खर्च करना पड़ता है।

- **परिचालन लागत का बोझ :** भले ही कासा को ब्याज के मामले में "कम लागत" वाला माना जाता है, लेकिन इन लाखों खातों को प्रबंधित करने का प्रशासनिक और तकनीकी खर्च बहुत अधिक होता है। डिजिटल भुगतान के लिए साइबर सुरक्षा ढांचा तैयार करना, रीयल-टाइम धोखाधड़ी रोकना और भौतिक शाखाओं का रखरखाव करना बैंक के 'परिचालन व्यय' को बढ़ाता है।

6. नवाचार और भविष्य के रुझान

कासा व्यवसाय का भविष्य अब केवल जमा राशि जमा करने तक सीमित नहीं है; यह बैंक खाते के स्वरूप को ही "पुनर्परिभाषित" करने के बारे में है। जैसे-जैसे हम एक हाइपर-कनेक्टेड अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहे हैं, पारंपरिक बचत खाता एक स्मार्ट, डेटा-संचालित वित्तीय केंद्र में बदल रहा है।

- **नियो-बैंकिंग और एपीआई-आधारित उत्पाद:** नियो-बैंकिंग (बिना शाखा वाले डिजिटल बैंक) इस क्षेत्र का सबसे बड़ा नवाचार है। ये बैंक 'एम्बेडेड वित्तीयन' की अवधारणा पर काम करते हैं। इसका मतलब है कि बैंकिंग सेवाएं सीधे अन्य ऐप्स (जैसे ई-कॉमर्स या डिलीवरी ऐप्स) के भीतर एकीकृत हो जाती हैं। इससे कासा "अदृश्य" लेकिन सर्वव्यापी हो जाता है, जहाँ बैंकिंग करना एक अलग काम न होकर ग्राहक की जीवनशैली का हिस्सा बन जाता है।

- **एआई और डेटा एनालिटिक्स: नए रिलेशनशिप प्रबंधक:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा एनालिटिक्स बैंकों के काम करने के तरीके को बदल रहे हैं। उन्नत सीआरएम टूल्स ग्राहकों के लेनदेन के पैटर्न का विश्लेषण करके "हाइपर-पर्सनलाइजेशन" प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई ग्राहक बार-बार विदेश यात्रा करता है, तो बैंक का एआई उसे स्वचालित रूप से एक विशेष विदेशी मुद्रा-लिंक्ड खाते का सुझाव दे सकता है।

- **डिजिटल वित्तीय समावेशन:** भारत में कासा का भविष्य 'जनधन-आधार-मोबाइल' त्रिमूर्ति से गहराई से जुड़ा है। अब नवाचार की अगली लहर 'वॉयस-आधारित बैंकिंग' और 'ऑफलाइन यूपीआई' जैसी तकनीकों पर सवार है। ये तकनीकें ग्रामीण क्षेत्रों के उन उपयोगकर्ताओं को सक्रिय कर रही हैं जो पहले डिजिटल बैंकिंग से कतराते थे, जिससे निम्न-लागत जमा का एक बड़ा आधार तैयार हो रहा है।

- **ईएसजी और टिकाऊ बैंकिंग:** एक उभरता हुआ वैश्विक चलन ईएसजी बैंकिंग है। युवा पीढ़ी इस बात को लेकर जागरूक हैं कि उनके पैसे का उपयोग कैसे किया जा रहा है। बैंक अब "ग्रीन डिपॉजिट" पेश कर रहे हैं, जहाँ बैंक यह गारंटी देता है कि इन कासा खातों के फंड का उपयोग केवल पर्यावरण के अनुकूल परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए किया जाएगा।

7. केस स्टडीज: कासा खेल के दिग्गज

कासा रणनीतियों के व्यावहारिक अनुप्रयोग को समझने के लिए उन वास्तविक उदाहरणों को देखना आवश्यक है जहाँ बैंकों ने तकनीक, मूल्य निर्धारण और वितरण का सफलतापूर्वक उपयोग करके अपनी देनदारी को मजबूत किया है।

केस 1: निजी क्षेत्र की "पुल" रणनीति- एचडीएफसी बैंक और कोटक महिंद्रा बैंक

- **एचडीएफसी बैंक:** ऐतिहासिक रूप से, एचडीएफसी बैंक भारत में कासा जुटाने के लिए एक आदर्श रहा है। इनकी सफलता का मुख्य स्तंभ 'रिलेशनशिप-फर्स्ट' मॉडल है। एचडीएफसी ने कॉर्पोरेट सैलरी मैंडेट बाजार पर बहुत पहले ही कब्जा कर लिया था, जिससे लाखों वेतनभोगी कर्मचारियों का मासिक वेतन सीधे उनके खातों में आता है। क्रेडिट कार्ड और ऋण उत्पादों की 'क्रॉस-सेलिंग' के माध्यम से, उन्होंने एक ऐसा "लॉक-इन" प्रभाव बनाया है कि ग्राहक बैंक बदलने के बारे में सोचता भी नहीं है।

- **कोटक महिंद्रा बैंक:** बाजार में देर से प्रवेश करने के बावजूद, कोटक ने 'विघटनकारी मूल्य निर्धारण' की रणनीति अपनाई। उन्होंने बचत खातों पर 6% ब्याज (जब अन्य 4% देते थे) देकर ग्राहकों का ध्यान खींचा। इसके बाद उन्होंने 'कोटक 811' लॉन्च किया, जो भारत का पहला पूरी तरह डिजिटल बैंक खाता था। इसने साबित किया कि भौतिक शाखाओं के बिना भी एक बड़ा कासा आधार बनाया जा सकता है।

केस 2: सार्वजनिक क्षेत्र का "डिजिटल बदलाव" - एसबीआई और योनो भारतीय स्टेट बैंक (SBI) इस बात का सबसे बड़ा उदाहरण है कि कैसे एक विशाल सरकारी संस्थान खुद को आधुनिक बना सकता है। पारंपरिक रूप से एसबीआई का उच्च कासा अनुपात ग्रामीण भारत में उसकी पहुंच के कारण था। लेकिन शहरी युवाओं को जोड़ने के लिए उन्होंने **'योनो' (यू ओनली नीड वन)** ऐप लॉन्च किया। आज एसबीआई के 60% से अधिक नए बचत खाते इसी डिजिटल माध्यम से खुलते हैं।

केस 3: फिनटेक सहयोग और अनुपालन का सबक - पेटीएम बनाम एयरटेल

- **पेटीएम पेमेंट्स बैंक :** पेटीएम ने अपने मर्चेंट इकोसिस्टम और क्यूआर कोड के जरिए करोड़ों ग्राहक बनाए। लेकिन 2024 में भा.रि.बैं. द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों ने यह बड़ा सबक दिया कि व्यापार बढ़ाने की "गति" कभी भी "नियामक अनुपालन" की कीमत पर नहीं होनी चाहिए। केवाईसी नियमों में ढिलाई के कारण उन्हें एक बड़े संकट का सामना करना पड़ा।

- **एयरटेल पेमेंट्स बैंक :** इसके विपरीत, एयरटेल ने अपने रिचार्ज केंद्रों (किराना दुकानों) को बैंकिंग पॉइंट बनाकर ग्रामीण और प्रवासी श्रमिकों के बीच अपनी जगह बनाई। नियमों का सख्ती से पालन और रीयल-टाइम कैश ट्रांसफर की सुविधा ने इसे अपने वर्ग में सबसे सफल और लाभदायक बैंक बना दिया।

केस 4: विलय और डिजिटल तालमेल — केनरा बैंक

- **विलय के बाद का सुदृढ़ीकरण:** सिंडिकेट बैंक के साथ विलय के बाद केनरा बैंक ने दक्षिण भारत में अपनी शाखाओं के विशाल नेटवर्क का उपयोग करके अर्ध-शहरी क्षेत्रों से स्थिर बचत जमा प्राप्त करने पर ध्यान दिया।

- **"केनरा ai1" सुपर ऐप रणनीति:** केनरा बैंक ने तकनीक की महत्ता को समझते हुए अपना **'केनरा ai1'** सुपर ऐप पेश किया। इसमें शॉपिंग, यात्रा बुकिंग और सामाजिक सुरक्षा निवेश जैसी 250 से अधिक सुविधाएं दी गईं।

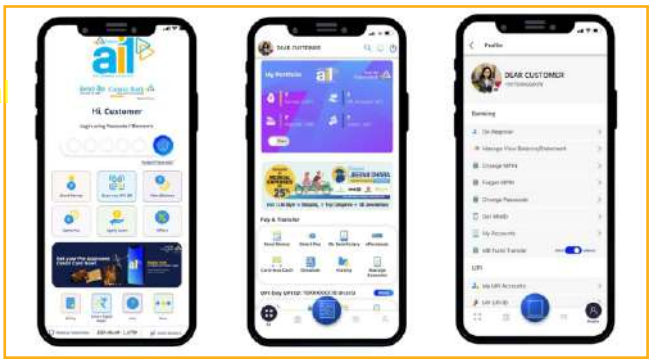

- **कासा पर प्रभाव:** इस ऐप के जरिए बैंक ने विशेष रूप से नई पीढ़ी को आकर्षित किया। इससे बैंक का लक्ष्य अपने कासा अनुपात को 35% के बेंचमार्क तक पहुँचाना है।

8. नीतिगत और नियामक पहलू

कासा पोर्टफोलियो का विकास और प्रबंधन केवल बाजार की ताकतों पर निर्भर नहीं है; यह भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा स्थापित नियामक ढांचे से गहराई से प्रभावित होता है। केंद्रीय बैंक की नीतियां जमा राशि जुटाने के लिए उत्प्रेरक और वित्तीय स्थिरता के लिए एक सुरक्षा कवच दोनों के रूप में कार्य करती हैं।

- **ब्याज दरों का विनियंत्रण:** भारतीय कासा व्यवसाय के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ 2011 में आया जब भा.रि.बैं. ने बचत बैंक ब्याज दरों को विनियंत्रित कर दिया। इससे पहले, ब्याज दरें भा.रि.बैं. द्वारा तय की जाती थीं। इस नीतिगत बदलाव ने बैंकों को अपनी दरें स्वयं तय करने की अनुमति दी, जिससे बाजार में प्रतिस्पर्धा की एक

नई लहर पैदा हुई। छोटे निजी बैंकों ने बड़े स्थापित बैंकों को चुनौती देने के लिए 6-7% जैसी ऊंची दरों का उपयोग किया।

- **सीआरआर और एसएलआर की आवश्यकताएं:** कासा का प्रबंधन नकद आरक्षित अनुपात और वैधानिक तरलता अनुपात जैसी वैधानिक आवश्यकताओं से जुड़ा है।

✔ चूंकि सीआरआर पर बैंक को कोई ब्याज नहीं मिलता, इसलिए यह एक "मृत लागत" की तरह है।

✔ यहाँ एक उच्च कासा अनुपात अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि यह उन फंडों की लागत को कम करता है जो आरक्षित नकदी अनुपात (सीआरआर) में लॉक होते हैं। यदि कोई बैंक आरक्षित नकदी अनुपात (सीआरआर) पूरा करने के लिए 7% वाले सावधि जमा के पैसे का उपयोग करता है, तो उसे नुकसान होगा, लेकिन यदि वह चालू खाते (0% ब्याज) के पैसे का उपयोग करता है, तो उसका वित्तीय बोझ न्यूनतम हो जाता है।

- **वित्तीय समावेशन और जमा बीमा:** सरकारी पहलों ने कासा आधार का संरचनात्मक विस्तार किया है। 'प्रधानमंत्री जन धन योजना' ने करोड़ों अनबैंकड लोगों को जोड़ा, जिससे कम लागत वाले फंड की एक स्थिर पाइपलाइन बनी। इसके अलावा, जमा बीमा और क्रेडिट गारंटी निगम द्वारा बीमा कवर को बढ़ाकर रु. 5 लाख करना ग्राहकों के भरोसे को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण रहा है, ताकि संकट के समय भी लोग अपने कासा खातों से पैसा न निकालें।

9. निष्कर्ष

आधुनिक वित्तीय सेवाओं के तेजी से बदलते परिदृश्य में, कासा व्यवसाय ने अपनी पारंपरिक भूमिका को पीछे छोड़ दिया है। आज यह केवल एक जमा भंडार नहीं है, बल्कि बैंक की परिचालन लचीलापन और वित्तीय स्वास्थ्य का निर्णायक पैमाना है। जैसा कि इस निबंध में विश्लेषण किया गया है, बैंकिंग का मॉडल अब ऋण-केंद्रित से बदलकर देनदारी-आधारित हो गया है। लाभप्रदता की असली लड़ाई अब इस बात पर निर्भर नहीं है कि आप ऋण पर कितना अधिक ब्याज लेते हैं, बल्कि इस पर है कि आप कितनी **कम लागत पर फंड** प्राप्त करते हैं।

कासा जुटाने का तरीका अब पूरी तरह बदल चुका है। यह अब केवल भौतिक शाखाओं की संख्या पर नहीं, बल्कि डिजिटल जुड़ाव की गुणवत्ता पर निर्भर है। यूपीआई, एआई-संचालित एनालिटिक्स और सुपर ऐप्स ने बचत खाते को एक निष्क्रिय तिजोरी से बदलकर एक 'हाई-वेलोसिटी ट्रांजेक्शनल हब' बना दिया है।

हालांकि, जैसे-जैसे बैंक डिजिटलीकरण की ओर बढ़ रहे हैं, बैंकिंग का मूल मंत्र आज भी वही है: **भरोसा**। साइबर खतरों और एल्गोरिदम के इस युग में, जो बैंक डेटा की सुरक्षा और विश्वसनीय सेवा प्रदान करेंगे, वही ग्राहकों की वफादारी जीत पाएंगे। अंततः "बैंकिंग का नया आयाम" केवल तकनीक के बारे में नहीं है; यह तकनीक का उपयोग करके ग्राहकों के साथ गहरे और स्थायी संबंध बनाने के बारे में है।

अर्थतंत्र की नींव बने, प्रगति का यह पैगाम है,
बैंकिंग के सुनहरे कल का, 'कासा' ही नया नाम है।

Internal

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए- भारत सरकार का वार्षिक का कार्यक्रम 2026-27

हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)

'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100%	ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90%	ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60%
क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100%	ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90%	ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60%
क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70%	ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60%	ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60%
क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 100% के राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 90% के राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 60% के राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति

केवाईसी का चक्रव्यूह: पहचान, तकनीक और सुरक्षा की एक 'दस्तावेजी' दास्तान

आलेख

रणधीर कुमार वर्मा
प्रबंधक
नेरली शाखा

बैंकिंग की दुनिया में एक समय था जब मैनेजर साहब ग्राहक का चेहरा देखकर ही पहचान जाते थे कि ये 'मिश्रा जी' हैं या 'पांडे जी'। पहचान का आधार केवल एक मुस्कान और पुराना रिश्ता होता था। लेकिन आज का दौर डिजिटल है। आज मैनेजर साहब की मुस्कान से ज्यादा सिस्टम के उस 'पॉप-अप' की अहमियत है जो स्क्रीन पर लाल अक्षरों में चमकता है— "KYC Pending!"।

ये तीन अक्षर—K, Y, C-आजकल बैंक के गलियारों में किसी मंत्र की तरह गूंजते हैं। ग्राहक को लगता है कि ये उसे परेशान करने का नया तरीका है, जबकि बैंक कर्मचारी के लिए यह उसकी नौकरी की सुरक्षा का कवच है और अब तो इसके नए-नए अवतार आ गए हैं—e-KYC, CKYC, Re-KYC और CKYCRR। ये नाम सुनकर ऐसा लगता है जैसे किसी अंतरिक्ष अभियान के कोड नेम हों।

एक बार हमारी शाखा में एक बुजुर्ग सज्जन आए। नाम था—रामनाथ जी। वे पिछले 15 सालों से हमारे बैंक के वफादार ग्राहक थे। मैनेजर साहब ने उनसे निवेदन किया, "रामनाथ जी, आपका री-केवाईसी (Re-KYC) होना है, जरा एक नई फोटो और आधार दे दीजिए।

रामनाथ जी ने झोले से एक फोटो निकाली। फोटो में एक नौजवान युवक काले घने बालों और मूंछों के साथ मुस्कुरा रहा था। क्लर्क ने फोटो देखी और फिर रामनाथ जी के सफेद बालों और चश्मे को देखा।

"सर, ये फोटो तो बहुत पुरानी है।

रामनाथ जी बोले, "बेटा, चेहरा तो मेरा ही है। बस समय की धूल जम गई है। क्या बैंक को मेरी जवानी से नफरत है?"

क्लर्क बेचारा क्या समझाता कि CKYCRR का पोर्टल इतनी भावुकता नहीं समझता। उसे तो 'क्रिस्टल क्लियर' वर्तमान फोटो चाहिए। अंत में रामनाथ जी को पास की दुकान पर जाकर फोटो खिंचवानी पड़ी। जब नई फोटो आई, तो वे खुद को पहचान नहीं पा रहे थे। उन्होंने मजाकिया लहजे में कहा, "लो बेटा, आज बैंक ने मेरा कागजी पुनर्जन्म कर दिया!"

नियम कहते हैं कि डेटा 'यूनिक' होना चाहिए। लेकिन भारतीय नामों की विविधता और स्पेलिंग का 'लोचा' अच्छे-अच्छों का बीपी बढ़ा देता है। CKYCRR (Central KYC Registry and Reporting) एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ डेटा एक बार फीड हो जाए तो वह हर वित्तीय संस्थान के लिए उपलब्ध रहता है। यह एक क्रांतिकारी कदम है, पर इसकी शुरुआत बड़ी चुनौतीपूर्ण है।

मान लीजिए ग्राहक का नाम है 'राज कुमार'। आधार पर लिखा है 'राजकुमार' (बिना स्पेस के), पैन कार्ड पर लिखा है 'आर. कुमार' और बैंक रिकॉर्ड में दर्ज है 'राज कुमार'। अब सिस्टम चिल्लाता है— "Data Mismatch!" कर्मचारी ग्राहक से कहता है, "सर, एक स्पेस हटवा लीजिए।" ग्राहक भड़क जाता है, "अरे भाई, इस छोटे से स्पेस से क्या मैं देश छोड़कर भाग रहा हूँ?"

कर्मचारी को उसे धैर्यपूर्वक समझाना पड़ता है कि यह नियम भारतीय रिज़र्व बैंक और सरकार की सुरक्षा नीतियों का हिस्सा है। बैंक कर्मचारी यहाँ किसी जासूस की तरह नहीं, बल्कि एक सुरक्षा गार्ड की तरह काम कर रहा है ताकि कोई दूसरा व्यक्ति 'राज कुमार' बनकर उनके खाते में सेंध न लगा सके।

ग्रामीण शाखाओं में e-KYC करना किसी रोमांचक फिल्म से कम नहीं है। हमारे किसान भाई दिन-रात खेतों में फावड़ा चलाते हैं, जिससे उनके हाथों की रेखाएं घिस जाती हैं।

एक बार एक ताऊ जी आए। उन्होंने e-KYC मशीन पर अंगूठा रखा। मशीन ने कहा— "Biometric Failed"। ताऊ जी ने जोर से अंगूठा दबाया, फिर भी वही संदेश। मैनेजर साहब ने रुमाल निकाला, मशीन साफ की। ताऊ जी ने अपना अंगूठा कुर्ते से रगड़ा। पूरा बैंक तमाशा देख रहा था।

पीछे खड़े एक लड़के ने कहा, "ताऊ, थोड़ा तेल लगा के देखो।

ताऊ जी बोले, "बेटा, 40 साल हल चलाया है, रेखाएं तो खेतों में गिर गई होंगी, अब ये मशीन क्या पहचानेगी?"

अंत में, उनके लिए फिजिकल दस्तावेजों का सहारा लेना पड़ा। यह घटना सिखाती है कि तकनीक कितनी भी आगे बढ़ जाए, मानवीय संवेदनाओं और व्यवहारिक कठिनाइयों के लिए बैंक को हमेशा तैयार रहना पड़ता है।

अक्सर ग्राहक को लगता है कि कर्मचारी उसे जानबूझकर लाइन में खड़ा कर रहा है। लेकिन जरा काउंटर के उस पार की दुनिया देखिए। क्लर्क को न केवल फॉर्म भरना है, बल्कि दस्तावेजों को सही 'DPI' पर स्कैन करना है, फाइल साइज को 'KB' में सेट करना है और यह सुनिश्चित करना है कि CKYC पोर्टल पर डेटा 'Error' न दिखाए।

शाम को जब बैंक का शटर गिरता है, तब कर्मचारी की असली ' केवाईसी शिफ्ट' शुरू होती है। उसे सैकड़ों फाइलें अपलोड करनी होती हैं। अगर एक भी फाइल रिजेक्ट हो गई, तो अगले दिन फिर वही कवायद। यह किसी तपस्या से कम नहीं है। पर कर्मचारी जानता है कि यदि आज उसने यह काम सही से नहीं किया, तो कल किसी फ्रॉड के होने पर जिम्मेदारी उसकी होगी। केवाईसी (Know Your Customer) और CKYC जैसी प्रक्रियाएं 'मनी लॉन्ड्रिंग' और 'टेरर फंडिंग' जैसे बड़े खतरों को रोकने का एकमात्र रास्ता हैं।

Internal

जब हम ग्राहक से उसकी आय का स्रोत पूछते हैं या 'फॉर्म-60' भरवाते हैं, तो हमारा उद्देश्य उसकी निजता का उल्लंघन करना नहीं है। हम बस यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि बैंकिंग प्रणाली का उपयोग केवल वैध कार्यों के लिए हो। एक जागरूक बैंक कर्मचारी ही एक सुरक्षित अर्थव्यवस्था की पहली दीवार है।

केनरा बैंक ने ग्राहकों की सुविधा के लिए केवाईसी और Re- केवाईसी प्रक्रिया को काफी सरल बना दिया है। अब ग्राहक वीडियो केवाईसी के माध्यम से घर बैठे अपनी पहचान सत्यापित कर सकता है।

इसके अलावा Canara ai1 मोबाइल अनुप्रयोग और बैंक की वेबसाइट के माध्यम से ग्राहक अपने दस्तावेज़ ऑनलाइन अपलोड कर Re-केवाईसी आसानी से पूरा कर सकता है। बैंक ने क्यूआर कोड स्कैन कर Re- केवाईसी करने की सुविधा भी उपलब्ध कराई है।

साथ ही ग्राहक स्वचालित टेलर मशीन (एटीएम) तथा कारोबार प्रतिनिधि (बीसी) के माध्यम से भी केवाईसी या Re- केवाईसी प्रक्रिया सरलता से पूरी कर सकता है। इन आधुनिक सुविधाओं से बैंकिंग सेवाएँ अधिक तेज, सुरक्षित और ग्राहक-अनुकूल बन गई हैं।

निष्कर्ष

केवाईसी की यह जद्दोजहद दरअसल ग्राहक और बैंक के बीच के 'विश्वास' को नवीनीकृत (Renew) करने की एक प्रक्रिया है। यह एक कड़वी दवा की तरह है जो बैंकिंग सिस्टम की सेहत के लिए अनिवार्य है। ग्राहक को यह समझना होगा कि दस्तावेज मांगना बैंक का 'अधिकार' नहीं, उसकी 'जिम्मेदारी' है और कर्मचारी को यह समझना होगा कि हर दस्तावेज के पीछे एक इंसान और उसकी मेहनत की कमाई जुड़ी है।

क्या आप जानते है?

1. केनरा बैंक व्हट्सएप्प बैंकिंग कितनी भाषाओं में उपलब्ध है?
2. WITI बैंकिंग ऐप की फुल फार्म क्या है?
3. राजभाषा अधिनियम १९६३ की धारा ३(३) के अंतर्गत कुल कितने दस्तावेज है?
4. केनरा बैंक द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं को सीखने के लिए कौन सी पुस्तक का विमोचन (विभिन्न भाषाओं में) किया गया है?
5. गिग स्टार खाते के अंतर्गत कौन सा डेबिट कार्ड प्रदान किया जाता है?

उत्तर

1. छः, 2. What'sapp Interactive Training Initiative, 3. 14 दस्तावेज, 4. अपनी क्षेत्रीय भाषा को जानें, 5. वीजा प्लैटिनम डेबिट कार्ड

सावधानी हटी दुर्घटना घटी

आलेख

अल्का राजू
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, एरणाकुळम

"सावधानी हटी, दुर्घटना घटी" इसे हमने हँसी मज़ाक में, गंभीर स्थिति में, न जाने कई मौकों पर प्रयोग किया है। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण चेतावनी है, जो सिखाती है कि जीवन के हर कार्य में सतर्कता जरूरी है। इस कहावत को पहले हम ज्यादातर वाहन चलाने या सड़क पर चलने से जोड़कर कहा करते थे। परंतु आज के एआई तकनीकि के युग में अपने बैंकिंग आर्थिक संव्यवहारों के लिए यह कहावत अत्यंत सह-संबंध रखती है।

आर्थिक जगत में मनी म्यूल्स कोई नया शब्द नहीं है,आज के वित्तीय परिदृश्य में बहुत चर्चित शब्द है यह।

मनी म्यूल्स जिसे स्मर्फर भी कहा जा सकता है, वह व्यक्ति है जिसे अपराधियों द्वारा गैर कानूनी तरीके से प्राप्त धन को अलग-अलग बैंक खातों के माध्यम से छिपाने के लिए जारी किया जाता है।

भारतीय रिज़र्व बैंक, मनी म्यूल्स को ऐसे व्यक्तियों के रूप में परिभाषित करता है, जो अक्सर आसान धन या दबाव के लालच में आकर, अनजाने में या जानबूझकर अपने बैंक खातों का उपयोग अपराधियों के लिए अवैध रूप से प्राप्त धन को स्थानांतरित करने के लिए करते हैं, जिससे मनी लॉन्ड्रिंग और वित्तीय धोखाधड़ी को बढ़ावा मिलता है।

मनी म्यूल्स कैसे बनाते हैं:

स्कैमर यानी धोखाधड़ी करने वाले व्यक्ति या उनका समूह सोशल मीडिया, डेटिंग साइट्स या फर्जी नौकरी के प्रस्तावों का इस्तेमाल करके साधारण लोगों को मनी म्यूल्स बनाते हैं। इनके निशाने में सामान्यतः छात्र, बेरोज़गार या अशिक्षित लोग होते हैं। इन लोगों को अज्ञात स्रोतों से पैसा मिलता है और उन्हें निर्देश दिया जाता है कि वे इसे वायर ट्रांसफर, बैंक ट्रांसफर या क्रिप्टो कियोस्क के माध्यम से आगे भेज दें, वे बदले में कमीशन भी दे देते हैं।

मनी म्यूल्स के प्रकार

जानबूझकर शामिल होने वाले 'म्यूल्स': जो लोग पैसे के लालच में जानबूझकर गैरकानूनी काम करते हैं।

अनजाने में शामिल होने वाले 'म्यूल्स': जिन्हें धोखे से लगता है कि वे सही काम कर रहे हैं या किसी की मदद कर रहे हैं।

मनी म्यूल्स के लिए- जोखिम या परिणाम:

कानूनी प्रभाव: धन शोधन यानी मनी लॉन्ड्रिग गतिविधियों में शामिल होने से आपराधिक मामले, कारावास और भारी आर्थिक दंड हो सकता है।

वित्तीय परिणाम: मनी म्यूल हस्तांतरित धन की पूरी राशि चुकाने के लिए उत्तरदायी हो सकते हैं।

प्रतिष्ठा की हानि: आपराधिक गतिविधियों से संबंध के कारण दीर्घकालिक प्रतिष्ठा की हानि हो सकती है।

खुद को कैसे सुरक्षित रखें:

- जिस व्यक्ति से आप व्यक्तिगत रूप से नहीं मिले हैं, उसके लिए पैसा प्राप्त करने और भेजने के लिए कभी भी अपने व्यक्तिगत बैंक खाते का उपयोग न करें।
- किसी भी नौकरी के प्रति सतर्क रहें जो "पेमेंट एजेंट" या "ट्रान्स्फर एजेंट" के रूप में कार्य करने के लिए धन प्रदान करती है।
- अजनबियों को खाते की जानकारी न दें।
- यदि आपको लगता है कि आप इसमें फंस गए हैं, तो तत्काल संपर्क बंद करें और अपने बैंक को इसके बारे में सूचित करें, और साथ में पुलिस को भी इसकी सूचना दें।

जैसे ग्राहक के लिए जोखिम हैं वैसे ही बैंक के लिए भी जोखिम है-

नियामक जुर्माना: धन शोधन यानी मनी लॉन्ड्रिंग की गतिविधियों का पता लगाने और उन्हें रोकने में विफल रहने पर बैंकों को जुर्माने और प्रतिबंधों का सामना करना पड़ सकता है।

प्रतिष्ठा संबंधी जोखिम: वित्तीय अपराधों से जुड़ने पर बैंक की प्रतिष्ठा और बैंक पर ग्राहकों का भरोसा जो है उसमें नुकसान पहुँच सकता है।

तो मनी म्यूल्स से निपटने के लिए हमें क्या करना चाहिए

- ग्राहक के लेन-देन के पैटर्न का विश्लेषण करते रहना है, जैसे कि अचानक बड़ी रकम जमा होना और उसके तुरंत बाद उसे ट्रांसफर कर देना, या कम समय में कई खातों से होकर पैसों का गुज़रना आदि।
- ग्राहकों को "वर्क फ्रोम होम" जैसे घोटालों, 'रोमांस स्कैम', सोशल मीडिया स्कैम और अनजान लोगों के लिए पैसे अंतरित करने के अनुरोधों से जुड़े खतरों के बारे में जागरूक करते रहना है। साथ ही अपने व्यक्तिगत खाता या वित्तीय विवरणों को दूसरों को न साझा न करना आदि।
- हमें संदिग्ध गतिविधियों की रिपोर्ट अपने प्राधिकारियों और नियामक प्राधिकरणों को देनी चाहिए, ताकि संगठित वित्तीय अपराधों की जाँच में मदद मिल सके।

तो याद रखो चाहे ग्राहक या बैंकर, सावधानी हटी दुर्घटना घटी

अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न बैंकों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत केनराइट्स

यूकों बैंक द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अंतर बैंक हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में श्री प्रदीप राज, वरिष्ठ प्रबंधक, प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु को हिन्दीतर भाषी वर्ग में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यूकों बैंक द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अंतर बैंक हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में श्री प्रकाश माली, वरिष्ठ प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा को राजभाषा अधिकारी वर्ग में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यूकों बैंक द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अंतर बैंक हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में डॉ सुरेश कुमार, प्रबंधक, अंचल कार्यालय, तिरुपति को राजभाषा अधिकारी वर्ग में प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अंतर बैंक हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में श्री दीपक ओझा, वरिष्ठ प्रबंधक, सीआईबीएम, मणिपाल को हिंदी भाषी वर्ग में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इंडियन बैंक द्वारा आयोजित अखिल भारतीय हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में श्री धीरज जुनेजा, अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत को हिंदीतर भाषी वर्ग में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नाबार्ड बैंक द्वारा आयोजित अखिल भारतीय हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में श्री प्रकाश माली, वरिष्ठ प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इंडियन बैंक द्वारा आयोजित अखिल भारतीय हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में श्री दीपक ओझा, वरिष्ठ प्रबंधक, सीआईबीएम, मणिपाल को हिंदी भाषी वर्ग में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया

- इंडियन बैंक द्वारा आयोजित अखिल भारतीय हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में श्री राजेश्वर कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- नाबार्ड बैंक द्वारा आयोजित अखिल भारतीय हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में श्रीमती खुशबू कुमारी गुप्ता, प्रबंधक को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा किए गए निरीक्षण

दिनांक 23.01.2026

क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी एवं प्रयागराज

दिनांक 19.02.2026

अंचल कार्यालय पुणे

दिनांक 06.03.2026

क्षेत्रीय कार्यालय अमृतसर

दिनांक 29 जनवरी 2026 को केनरा बैंक, यूनाइटेड किंगडम की लंदन शाखा द्वारा हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि डॉ अनुराधा पांडे, राजभाषा अधिकारी, लंदन उच्चायोग उपस्थित रही। केनरा बैंक की ओर से श्री सुधांशु सुमन, मुख्य कार्यपालक, श्री कृष्णेन्दु दत्ता, उप मुख्य कार्यपालक, श्री राजेश आर. के., क्रेडिट प्रमुख सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

Internal

दिनांक 23.02.2026 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 199वीं बैठक के दौरान गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' के 46वें अंक का विमोचन प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (प्रभारी) श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया के करकमलों द्वारा किया गया।

Internal

Internal